महाशिवरात्रि विशेषांक

पूज्य सद्गुरुदेव के आशीर्वाद तले प्रकाशित

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

कृपया ध्यान दें

1. यदि आप साधना सामग्री शीघ्र प्राप्त करना चाहते हैं।
2. यदि आप अपना पता या फोन नम्बर बदलवाना चाहते हैं।
3. यदि आप पत्रिका की वार्षिक सदस्यता लेना चाहते हैं।

तो आप निम्न वाट्सअप नम्बर पर मैसेज भेजें।

8890543002

450 रुपये तक की साधना सामग्री वी.पी.पी से भेज दी जाती है।

परन्तु यदि आप साधना सामग्री स्पीड पोस्ट से शीघ्र प्राप्त करना चाहते हैं तो सामग्री की न्यौछावर राशि में डाकखर्च 100 रुपये जोड़कर निम्न बैंक खाते में जमा करवा दें एवं जमा राशि की रसीद, साधना सामग्री का विवरण एवं अपना पूरा पता, फोन नम्बर के साथ हमें वाट्सअप कर दें तो हम आपको साधना सामग्री स्पीड पोस्ट से भेज देंगे जिससे आपको साधना सामग्री अधिकतम 5 दिनों में प्राप्त हो जायेगी।

बैंक खाते का विवरण

खाते का नाम	: नारायण मंत्र साधना विज्ञान
बैंक का नाम	: स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया
ब्रांच कोड	: SBIN0000659
खाता नम्बर	: 31469672061

मासिक पत्रिका का वार्षिक मेम्बरशिप ऑफर

1 वर्ष सदस्यता 405/-

हनुमान यंत्र एवं माला
405 + 45 (डाक खर्च) = 450

गणपति यंत्र एवं माला
405 + 45 (डाक खर्च) = 450

1 वर्ष सदस्यता 405/-

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें : **नारायण मंत्र साधना विज्ञान**

गुरुधाम, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.)

फोन नं. : 0291-2433623, 2432010, 2432209, 7960039

आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

आत्म-प्रकाश

|| ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ||

पारिवारिक सुख और सौभाग्य प्राप्ति हेतु : दरिद्रता निवारण प्रयोग

जीवन के समस्त मनोरथों को पूर्ण करने में समर्थ : विजया एकादशी सा.

असाध्य रोगों के निवारण एवं पूर्ण आयु प्राप्ति हेतु : महामृत्युंजय विधान

सद्गुरुदेव

स्तम्भ

साधनाएँ

ENGLISH

विशेष

स्तोत्र

आयुर्वेद

योग

प्रेरक संस्थापक
डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंदजी)

आशीर्वाद
पूजनीया माताजी
(पू. भगवती देवी श्रीमाली)

सम्पादक
श्री अरविन्द श्रीमाली

सह-सम्पादक
राजेश कुमार गुप्ता

प्रकाशक, स्वामित्व एवं मुद्रक
श्री अरविन्द श्रीमाली
द्वारा
प्रगति प्रिंटर्स
A-15, नारायणा, फेज-1
नई दिल्ली:110028
से मुद्रित तथा
'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'
कार्यालय :
हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर से
प्रकाशित

मूल्य (भारत में)
एक प्रति 40/-
वार्षिक 405/-

सम्पर्क
सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन : 011-79675768, 011-79675769, 011-27354368
नारायण मंत्र साधना विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.), फोन नं. : 0291-2433623, 2432010, 7960039
WWW address : http:/www.narayanmantrasadhanavigyan.org E-mail : nmsv@siddhashram.me

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस *'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'* पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जायें, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु-संत होते हैं, अत: उनके पते आदि के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 405/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका के प्रकाशन अवधि तक ही आजीवन सदस्यता मान्य है। यदि किसी कारणवश पत्रिका का प्रकाशन बन्द करना पड़े तो आजीवन सदस्यता भी उसी दिन पूर्ण मानी जायेगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हों। पत्रिका में प्रकाशित लेख योगी या संन्यासियों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अत: इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत् प्रक्रिया है, अत: पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

प्रार्थना

त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्याविश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्वं वै प्रसन्न भुवि मुक्तिहेतुः।।
विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाःस्त्रियः समस्ताः सकता जगत्सु।
त्वयैकया पूरितमम्बयैतत्का ते स्तुतिः स्तव्यपरा परोक्तिः।।

हे माँ भगवती! आप ही अनन्त बल सम्पन्न वैष्णवी शक्ति, विश्व की आधारभूत परामाया हो जिससे समस्त जगत मोहित है सम्पूर्ण विद्याएं आपका ही स्वरूप है आपकी स्तुति तो वाणी से परे एवं पूर्णता प्रदान करने वाली है, आपको बारम्बार नमन।

शांति – ईश्वर कृपा

महर्षि वेद व्यास बहुत बड़े विद्वान थे हजारों शास्त्रों का अध्ययन किया संसार का सबसे बड़ा ग्रंथ महाभारत भी लिखा सारे वेदों का अध्ययन किया, उपनिषदों का ज्ञान पूर्णरूप से ग्रहण कर उस ज्ञान को संसार में बांटा, इसके साथ ही महाभारत के माध्यम से एक पूरे युग की गाथा स्पष्ट की। इतने महान विद्वान के जीवन में सब कुछ होते हुए भी कुछ अधूरा था।

इसके उपरान्त भी उनके मन में शांति नहीं थी। एक दिन सरस्वती के तट पर बैठे दु:खी मन से विचार किया कि मैं सदाचारी हूँ, शास्त्रों का अध्ययन करता हूँ, लोगों को ज्ञान और धर्म का उपदेश देता हूँ, परंतु मेरे अपने मन में शांति नहीं है।

उसी समय नारद मुनि वहाँ से निकले उन्हें देखकर महर्षि वेद व्यास ने अपनी व्यथा कही, कहा कि क्या कारण है मेरे चित्त में शांति नहीं है?

नारद मुनि ने कहा कि आपने बहुत कुछ कर लिया पर एक त्रुटि रह गई, सब कुछ करके भी आपने ईश्वर कृपा प्राप्त नहीं की और इस त्रुटि को दूर किये बिना ज्ञान, उपदेश, ग्रंथ सब व्यर्थ है।

वेद व्यास जी को बात समझ में आ गई और उन्होंने गुरु आज्ञा से भगवान श्रीकृष्ण की कृपा प्राप्त कर पूर्णता प्राप्त की। प्रत्येक मनुष्य के जीवन में ईश्वरीय शक्ति के प्रति पूर्ण आस्था और उसके साथ ही साथ गुरु कृपा का आशीर्वाद भी निरंतर प्राप्त होना आवश्यक है। गुरु के बिना ज्ञान नहीं और ज्ञान के बिना परमतत्व की प्राप्ति नहीं। केवल पुस्तकें पढ़ लेने भर से ही चित्त में शांति और स्थिरता नहीं आ सकती है। चित्त में शांति से ही जीवन पूर्ण होता है।

वास्तव में महान ज्ञान के साथ गर्व रहित होकर गुरु और ईश्वर का नित्य ध्यान करना आवश्यक ही है, इसी से मन में शांति और जीवन में पूर्णत्व प्राप्त हो सकती है।

अवतरण

युग पुरुष का

पिछले अंक में आपने पढ़ा कि किस प्रकार युग पुरुष संसार में अवतरित होते हैं और उनका अवतरण संसार में मानव जाति को नई चेतना प्रदान करने के लिये ही होता है, ऐसे युग पुरुष को ज्ञान चक्षु युक्त व्यक्ति तो उनके जीवन काल में ही पहचान लेते हैं लेकिन साधारणजन उनके द्वारा प्रवाहित ज्ञान धारा से आप्लावित होने पर ही उन्हें समझ पाता है, उसी श्रृंखला में पूज्य सद्गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी की ओजस्वी वाणी में इस लेख माला का द्वितीय खंड–

ऐसे युग-पुरुष को यह युग नमन करता है, देवता हर्षित होते हैं, अप्सराएं नृत्य करती हैं, और वह इस युग का भाग्य विधाता बनकर अंधकार को दूर करता हुआ ज्ञान के प्रकाश को फैलाने में समर्थ होता है। ऐसे ही युग-पुरुषों में श्रीमद् भगवतपाद जगद्गुरु आद्यशंकराचार्य इस भू-भाग पर अवतरित हुए जिन्हें भगवान शिव का साक्षात् स्वरूप कहा गया है।

दूसरे शब्दों में कहा जाए तो वे सही अर्थों में भगवान सदाशिव का ही अंश थे। वास्तव में ही उनमें ज्ञान-विज्ञान, चेतना, धारा प्रवाह और अद्वितीयता थी। मैंने पीछे उस युग-पुरुष को पहचानने के लिए तीन बिंदु स्पष्ट किये थे और सामान्य मानव को चौथे बिंदु के रूप में यह देखना चाहिए कि छोटी-सी उम्र में ही इस बालक ने किस प्रकार से ज्ञान अर्जित किया है,और कितनी तीव्रता के साथ अग्रसर हुआ है।

पांचवा बिंदु जो इस प्रकार के युग-पुरुष को पहचानने के लिए आवश्यक है वह यह कि वह प्रारम्भ से ही संघर्षों का सामना करता है। जिस क्षण वह जन्म लेता है तब से राक्षस विविध रूपों में बाधाएं और सही अर्थों में कहा जाए तो संकट और विघ्न उपस्थित करते हैं और उसके व्यक्तित्व में यह क्षमता होती है कि वह उन विघ्नों को समाप्त करे और सर्वत्र विजय अर्जित करें, क्योंकि उसके जीवन में पराजय जैसा कोई शब्द नहीं होता।

विधाता उसके ललाट पर पराजय का भाव अंकित नहीं करते, यमराज उसको समाप्त करने की चेष्टा में असमर्थ होते हैं और घोर संकट के समय भी, विघ्नों के समय भी, बाधाओं और अड़चनों के समय भी, वह मुस्कराता हुआ गतिशील रहता है।

ऐसे व्यक्तित्व को पहचानने का छठा गुण यह होता है कि उसके शरीर में प्रतिक्षण अष्टगंध प्रवाहित होती रहती है। यह हमारी न्यूनता है कि हम उस ग्राहण शक्ति को प्राप्त नहीं कर पाएं जिसके माध्यम से उस अष्टगंध को अपने नथुनों में भरकर प्राणों में समाहित कर सके। परन्तु प्रतिक्षण, प्रतिपल उसके पूरे शरीर से अष्टगंध प्रवाहित होती है।

क्योंकि उसकी आँखों में एक खिंचाव होता है, उसके चेहरे पर एक आकर्षण होता है, उसके शब्दों में एक सम्मोहन होता है, उसके शरीर में एक विद्युत प्रवाह होता है, उसके सारे व्यक्तित्व में एक अपूर्व आभा विद्यमान रहती है। और जब वे स्पर्श करते हैं तो उसका जीवन बदल जाता है, जब वे

स्पर्श करते हैं तो उसका सारा शरीर सुगंधित हो जाता है, जब वे स्पर्श करते हैं तो उसे ज्ञात हो जाता है कि वास्तव में ही यह दिन, यह क्षण, मेरे जीवन का सौभाग्यशाली क्षण है जब मैंने उस परब्रह्म का चरण स्पर्श किया उसके साथ क्रियाशील हुआ और अपने जीवन को धन्य किया।

और ऐसे युग-पुरुष को पहचानने का सातवां चिह्न यह होता है कि वह सिद्धाश्रम से मृत्युलोक में आता है, पृथ्वीलोक पर आता है और जितने क्षण, जितना समय व्यतीत करना होता है उतना समय व्यतीत कर पुनः सिद्धाश्रम में चला जाता है। यही नहीं, अपितु वह निरन्तर योग निद्रा के माध्यम से अपने पूरे शरीर को अंगुष्ठवत बनाकर, सिद्धाश्रम में जाकर पूर्ण व्यक्तित्व बन जाता है, वहां योगियों को साधनाओं में सिद्ध करता है, ऋषियों, मुनियों को ज्ञान और चेतना देता है।

ऐसे युग-पुरुष के पैर जहां पर भी अंकित होते हैं, उसके नीचे की धरती और उसके नीचे के रज-कण और माटी को योगी अपने ललाट पर लगाते हैं, योगिनियाँ अपनी मांग भरती हैं, और वे अप्सराएँ भी उस मिट्टी से अपनी मांग को भरकर धन्य-धन्य हो जाती हैं। ऐसा युग-पुरुष दूसरे ही क्षण फिर वापस पृथ्वी लोक पर आ जाता है। उसके जाने और आने का कोई समय नहीं होता, उसके जाने और आने का कोई भाव नहीं होता, उसके जाने और आने का कोई बंधन नहीं होता क्योंकि वह यह क्रिया ऐसे समय में करता है जब अन्य लोग निद्रा में लीन हो जाते हैं। वह चाहे उसकी लौकिक पत्नी हो, चाहे पुत्र हो, पौत्र हो, साधु हो, संन्यासी हो, देवता हो, अप्सराएँ हों और कोई भी हो वे उस क्षण का पता नहीं लगा सकते कि यह अद्वितीय युग-पुरुष, यह महापुरुष किस क्षण सिद्धाश्रम जाता है, कितने समय वहाँ रहता है, किस क्षण वापस आता है।

कायाकल्प के द्वारा इस पूरे शरीर को अंगुष्ठवत बनाकर वह महापुरुष सिद्धाश्रम में चला जाता है, वहाँ काफी समय तक रहता है, अपने कार्यों, अपने ज्ञान, अपनी चेतना के माध्यम से वहाँ के हजार-हजार वर्ष आयु प्राप्त योगियों को ज्ञान, चेतना देने के साथ-साथ उन्हें उच्च-स्तर की साधनाओं में सिद्ध करता है वे योगी ऐसे युगपुरुष को पहचानते हैं, वे संन्यासी ऐसे महापुरुष को जानते हैं क्योंकि उनके पास चर्म चक्षु ही नहीं होते, ज्ञान चक्षु ही नहीं होते, अपितु दिव्य चक्षु होते हैं जिनके माध्यम से वे अपने मन में धारणा शक्ति का उदय कर जान लेते हैं कि वास्तव में ही समय आने पर एक युग-पुरुष ने लीला करने के लिए अयोनिज रूप में जन्म लिया है।

पृथ्वीलोक पर निश्चय ही वह लीला बिहारी है, सुख और दुख की अभिव्यक्ति करता है, हर्ष और रुदन की चेष्टा करता है, सुख और दुख का भान करता है, कराता है, परन्तु यह सब तो बाह्य रूप है, यह सब तो लीला है, यह सब तो माया है, यह सब तो भ्रम है और इस भ्रम से अंदर प्रवेश कर जब किसी मनुष्य को ज्ञात होता है तब वह अनुभव करता है कि वास्तव में ही मैंने अपने जीवन में युग-पुरुष को उतारने का प्रयत्न किया है। जब-जब भी ऐसे महापुरुष जन्म लेते हैं या अवतरित होते हैं, तो पृथ्वी अपने आप में मुस्कुराने लग जाती है, आकाश नृत्य करने लग जाता है, समुद्र उत्साह से भर जाता है, नदियाँ वेग से गतिशील हो जाती हैं, हवा सुगंध से ओत-प्रोत हो जाती है।

पेड़-पौधे, वनस्पति झूमने लग जाते हैं और दूसरे शब्दों में सारा विश्व नृत्य करने लग जाता है, क्योंकि ऐसा अवतरण कई हजार वर्षों के बाद होता है, और यदि उस युग को चूक जाते हैं, उस क्षण को पहचान नहीं पाते तो हमारे जीवन में अभाग्य के अलावा कुछ नहीं रहता, हमारा जीवन दुर्भाग्यशाली बन जाता है, हमारा ललाट एक विष से ओत-प्रोत हो जाता है, हमारी आँखें पहिचानने की क्षमता खो देती है और हमारी जीभ धधककारी होकर उसकी आलोचना करने की ओर उद्धृत हो जाती हैं।

यह तो राक्षसत्व है और इस पृथ्वी पर राक्षसों का भी जन्म होता है, दुर्बुद्धियों का भी जन्म होता है, न्यून स्तर के व्यक्तित्वों का भी जन्म होता है, ओछे और तुच्छ इंसानों का जन्म भी होता है। वे इस सौभाग्य से वंचित हो जाते हैं और वे देवता इस प्रकार के सौभाग्य को पाकर, मनुष्य योनि को पाकर समस्त प्रकार की लीलाओं को कर अपने जीवन को धन्य-धन्य कर लेते हैं और इतिहास के पटल पर अपना नाम अंकित कर देते हैं।

भगवतपाद शंकराचार्य ऐसे ही व्यक्तित्व थे जो आदिशक्ति, मूल माया एवं शुद्ध विद्या सात्विक यौगिक और प्राकृतिक चेतना का वर्णन करने के लिए इस पृथ्वी पर अवतरित हुए। जब पूरे आर्यावर्त पर बुद्धत्व का प्रभाव छा गया, जब राजा लोग बौद्ध धर्म स्वीकार करने लग गए, जब प्रजा 'बुद्धं शरणं गच्छामि' के घोष से भर उठी तब सनातन धर्म इस पृथ्वी पर से लोप होने लगा, तब पृथ्वी बोझिल हुई, तब पृथ्वी भार से व्यथित हुई, तब पृथ्वी पर एक विषमता आई, युग में एक विषैलापन आया, तब युग दु:खी और व्यथित हुआ, तब हवा में एक सड़ांध और दुर्गंध उत्पन्न हुई और एक संघर्ष हुआ बुद्ध के विचारों और सनातन विचारों के बीच।

हमने तो अपने जीवन में चौबीस अवतारों में बुद्ध को भी अवतार कहा है-जिन्हें बौद्धावतार कहा गया है। परन्तु यह टकराहट शंकराचार्य और बुद्ध की नहीं थी। यह टकराहट दोनों के विचारों की थी, भावनाओं की थी, चिंतन की थी। इस बात को सिद्ध करना था कि बौद्ध विद्या सही है या सनातन विद्या सही है।

बौद्ध विचार प्रामाणिक हैं या सनातन विचार प्रामाणिक हैं, बौद्ध चिंतन गतिशील है या सनातन धर्म गतिशील है, बौद्ध भावना का संचार इस पृथ्वी पर होना उचित और अनुकूल है या सनातन धर्म। सनातन गुण, सनातन चेष्टा का विचार इस पृथ्वी पर होना उचित, अनुकूल और अनिवार्य है, और यह समय अंधकार का समय था, यह समय विषमता का समय था, यह समय विषमता के साथ-साथ दु:ख और व्यथा का समय था जब चारों ओर घटाटोप अंधकार छा गया था, जब चारों तरफ एक विसंगति उत्पन्न हो गयी थी, जब समाज, सनातन धर्म को भूलने लगा था, जब वेदों पर संदेह होने लगा था, जब पुराणों पर प्रश्न चिह्न लगे थे, जब उपनिषदों को समुद्र में डुबोया जाने लगा था, जब ॠषियों-मुनियों का मखौल होने लगा था, ऐसे समय में भगवतपाद शंकराचार्य का अयोनिज रूप में इस पृथ्वी पर अवतरण हुआ।

विद्वानों ने उनका जन्म सन् 788 ई. निश्चित किया है। प्रश्न जन्म समय का नहीं है, प्रश्न इस बात का है कि वे अवतरित हुए, प्रश्न इस बात का है कि वे उतने समय तक पृथ्वी पर रहे जितना उनको आवश्यक

था। प्रश्न इस बात का है कि वे अपने कार्य को सम्पन्न कर पुनः सिद्धाश्रम में गतिशील हो गए।

मैंने पहले यह स्पष्ट किया था कि हंसावतार या अवतार निश्चय ही पृथ्वी पर आते हैं क्योंकि पृथ्वी अपने आप में एक अद्वितीय द्युतिलोक है और जन्म लेकर वे जीवन के हर्ष-विषाद, दु:ख, सुख, हानि-लाभ, संघर्ष और असंघर्ष से सामना करते हुए इस बात को अनुभव करने की चेष्टा करते हैं कि उनमें कितनी क्षमता है। साथ ही साथ उनकी लीलाओं के कारण आम व्यक्तित्व को, सामान्य मनुष्य को, साधारण व्यक्ति को ऐसा लगता है जैसे इसमें और अन्य बालकों में कोई अंतर नहीं होता।

परन्तु एक बहुत बड़ा अंतर यह होता है कि सामान्य मानव योनिज होते हैं वे मल, मूत्र में लिप्त होते हुए धीरे-धीरे आगे बढ़ते हैं ओर उनका रास्ता जन्म से लगाकर श्मशान की यात्रा पर समाप्त हो जाता है। इसके विपरीत जो अवतार हैं, जो देवता हैं, वे योनिज नहीं होते, ऐसा प्रतीत होता है कि वे किसी गर्भ में पल रहे होते हैं, किसी गर्भ का सहारा लेते हैं और नौ महीने बाद उनका प्रादुर्भाव इस पृथ्वी पर होता है परन्तु नित्य लीला विहारिणी लीलामय भगवती पराम्बा कुछ ऐसा खेल खेलती है, कुछ ऐसा दृश्य उपस्थित करती है कि वह अवतार जन्म तो लेता है पर माँ को यह एहसास करा देती है कि तुम्हारे गर्भ से ही एक सामान्य बालक की तरह इसका जन्म हुआ है। परन्तु वास्तव में वे जन्म नहीं लेकर अवतरित होते हैं। यह बहुत बड़ा अंतर है जिसे विद्वानों को समझना चाहिए।

मैंने यह भी स्पष्ट किया कि जब ऐसे ब्रह्म स्वरूप का प्रादुर्भाव होता है, वो लगभग सभी देवता उन्हीं दिनों में, उन्हीं क्षणों में उसके आस-पास रहकर, उनकी लीलाओं को देखकर, उनकी लीलाओं में भाग लेकर अपने जीवन को धन्य-धन्य कर देते हैं। यहीं नहीं अपितु वे उनके साथ तो नित्य लीला करते ही हैं सभी अप्सराएँ भी उसी समय में पृथ्वी पर अवतरित होती हैं, अत्यंत सौन्दर्यवान, द्युतिवान, यौवनवान, स्फुर्तिवान और अनिर्वचनीय रूप एवं यौवन से सम्पन्न।

जन्म के समय माँ को भी कुछ ज्ञात नहीं होता कि कब जन्म ले लिया क्योंकि उसके उदर को किसी प्रकार का भार सहन नहीं करना पड़ता। परन्तु जन्म के समय उसे यह एहसास होता है, यह अनुभव होता है कि मेरे गर्भ से एक सुन्दर कन्या ने जन्म लिया है, एक सुन्दर पुत्र ने जन्म लिया है। और उसका मातृत्व जाग्रत हो उठता है, वह उसे अपने स्तन से लगा लेती है। उसका मातृत्व जाग उठता है और वह उसके साथ वैसा ही व्यवहार करती है जैसा एक सामान्य स्त्री एक योनिज बालक या बालिका को जन्म देकर अनुभव करती है। यही दोनों में मूलभूत अंतर है।

परन्तु यहाँ पर यह प्रश्न उठता है कि हम किन युक्तियों से, किन माध्यमों से, यह अनुभव करें कि ये अवतार हैं, हंसावतार हैं, देवता हैं, यक्ष है, अप्सरा हैं, गंधर्व हैं, किन्नर हैं। उनको अनुभव करने की क्या विधि है, किस तरीके से हम यह अनुभव करें कि यह पूर्ण ब्रह्म स्वरूप हैं और जब-जब इस पृथ्वी पर घोर-अंधकार छा जाता है, जब-जब भौतिकता का अंधकार आध्यात्मिकता के प्रकाश को ग्रसित कर देता है, जब चारों ओर

लूटमार मच जाती है, जब नारी की रक्षा सामान्य नहीं रह पाती, जब मनुष्य को भय से ग्रस्त होना पड़ता है, जब इस बात का अनुभव भी नहीं होता कि इस भारतवर्ष में आध्यात्मिकता की लौ है, एक प्रकाश है, एक चेतना है, एक ज्ञान का पुंज है जो पृथ्वी के अन्य देशों की अपेक्षा इस आर्यावर्त में ज्यादा है, या यह कहूं कि केवल आर्यावर्त में ही है तब ऐसे युग-पुरुष का जन्म होता है।

और यहीं से प्रकाश लेकर अन्य देश उस आध्यात्मिकता के प्रकाश से नहा कर मन में एक सकून अनुभव करते हैं, मन में एक आनन्द की हिलोर अनुभव करते हैं, मन में प्रसन्नता की भावना अनुभव करते हैं, और उन्हें एक तृप्ति मिलती है, उन्हें एक सुख मिलता है। उन्हें यह लगता है कि यहाँ आकर कुछ नया अनुभव किया है, यहाँ आकर कुछ नवीन अनुभूति हुई है, यहाँ आकर कुछ ऐसा ज्ञात हुआ है जो अन्य देशों में नहीं है क्योंकि इस आर्यावर्त में ही गंगा, यमुना और सरस्वती जैसी नदियाँ हैं, हिमालय जैसा पहाड़ है, गौरी-शंकर जैसा उच्च और अपराजय स्थल है, वन हैं, वनस्पतियाँ हैं, और वह सब कुछ है जो अन्य देशों में नहीं है, क्योंकि मात्र भारतवर्ष ही ऐसा है जहाँ दिन और रात बराबर होते हैं।

अन्य देशों में कहीं दिन बीस घंटे का होता है तो कहीं रात अट्ठारह घंटे की होती है। परन्तु इस आर्यावर्त या भारतवर्ष में ऐसा नहीं है। दिन और रात का एक संतुलन है, सूर्य और चन्द्रमा का एक सामंजस्य है। और केवल यही तक नहीं, अपितु केवल इस आर्यावर्त की ही यह विशेषता है, कि यहाँ पर छः ऋतुएँ समान भाव से आती हैं और अपने-अपने समय में वे उन सुखद क्षणों को अनुभव कराती हैं जो अन्य देशों में दुर्लभ हैं, जो स्वर्ग में दुर्लभ हैं, जो पाताललोक में दुर्लभ हैं।

और यह अनुभूति, यह ज्ञान, यह चिंतन, यह मस्ती, और यह आनन्द केवल आर्यावर्त या भारतवर्ष में ही संभव है, इसीलिए उच्चकोटि की आत्माएँ जिनको हम अवतार कहें, जिनको हम हंसावतार कहें जिनको हम पूर्ण पुरुष कहें, जिनको हम युगपुरुष कहें, जिनको हम इतिहास-पुरुष कहें वे भारतवर्ष में जन्म लेकर ज्यादा आनन्द की अनुभूति का भास करते हैं, अनुभव करते हैं।

और लगभग 2500 वर्षों के बाद में किसी महापुरुष का, किसी अद्वितीय युग-पुरुष का प्रादुर्भाव होता है। यदि अत्यन्त स्थूल दृष्टि से देखा जाए तो भगवान श्रीराम को युग-पुरुष की संज्ञा दी गई। और उसके ठीक 2500 वर्षों के बाद में श्रीकृष्ण पूर्ण कलाओं के साथ इस पृथ्वी पर अवततरित हुए और उसके ठीक 2500 वर्ष बाद भगवान बुद्ध अवतरित हुए।

और यह मैं बता चुका हूँ कि सनातन धर्म युग-युगीन धर्म है। जब सबसे पहले आर्यों ने सिंधु नदी के किनारे आँख खोली थी, सिंधु नदी के किनारे विचरण किया था, सिंधु नदी के किनारे सभ्यता विकसित हुई थी, सिंधु नदी के किनारे वेदों की ऋचाओं का प्रादुर्भाव हुआ उस समय से आज तक लगभग इतना समय, इतना काल व्यतीत होने के बाद भी सनातन धर्म विद्यमान है, और इसे विद्यमान बनाए रखने के लिए हर 2500 वर्ष के बाद किसी पूर्ण पुरुष, किसी इतिहास पुरुष का प्रादुर्भाव होता है।
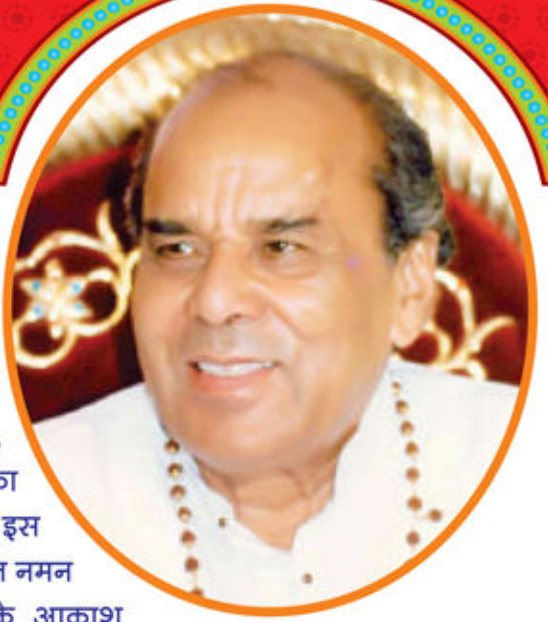
और बुद्ध का अवसान हुए भी लगभग 2500 वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। फिर किसी युगपुरुष ने जन्म लिया है, फिर किसी इतिहास पुरुष ने जन्म लिया है, फिर किसी ऐसे व्यक्तित्व ने इस आर्यावर्त पर अवतरित होने की कृपा की है जिससे कि इस भौतिकता के अंधकार को छिन्न-भिन्न कर सके, ज्ञान का और अध्यात्म का दीप प्रज्जवलित कर सके, चेतना का सूर्य जगमगा करके करुणा की चन्द्रमा समान, शीतल किरणें इस पृथ्वी पर बिछा सके, तारागण हाथ जोड़ करके खड़े हो सकें, वृक्ष नमन कर सकें, पेड़-पौधे झूम सकें, पवन में एक सुगंध व्याप्त हो सके, आकाश अपने वक्षस्थल पर इंद्रधनुष के माध्यम से लिख सके कि पूर्ण हंसावतार का अवतरण हो चुका है।

यह अलग बात है कि हम सामान्य स्थूल व्यक्तित्व इन सब संकेतों को नहीं समझते और शनैः-शनैः समय व्यतीत होता जाता है। वह युग-पुरुष भी अपनी लीलाओं के माध्यम से गमन करता हुआ, लीलाओं के माध्यम से ही भौतिकता के अंधकार को चूर-चूर करता हुआ, लीलाओं के माध्यम से ही अध्यात्म का प्रकाश फैलाता हुआ गतिशील होता रहता है। और वह लेखनी के माध्यम से, वक्तृत्व कला के माध्यम से, सम्मोहक व्यक्तित्व के माध्यम से, ज्ञान और चेतना के माध्यम से यह अनुभव करा देता है कि वह सामान्य मनुष्य नहीं है अपितु एक ऐसा युग-पुरुष है जिसके चरणों में देवता नमन करते हैं, अप्सराएं जिसे स्पर्श करने के लिए और आलिंगनबद्ध करने के लिए आतुर रहती हैं, योगी, यति संन्यासी उनको देखकर प्रणम्य भाव से दंडायमान हो जाते हैं और आकाश से ब्रह्मा, विष्णु और महेश अदृश्य पुष्प वर्षा कर प्रसन्नता अनुभव करते हैं कि एक बार फिर आर्यावर्त अपनी भावभूमि पर आएगा, एक बार फिर भारतवर्ष संस्कृति का विस्तार कर सकेगा, एक बार फिर भारतवर्ष में एक चेतना पैदा हो सकेगी, एक बार फिर भारतवर्ष में सोलह कला पूर्ण व्यक्तित्व के चरण-चिह्न अंकित हो सकेंगे और इन सब से इतराकर, इन सब से प्रसन्न होकर वे निरन्तर अदृश्य पुष्प वर्षा करते रहते हैं। और यह उन अन्य लोगों का सौभाग्य होता है जो ऐसे समय में सामान्य मनुष्य के रूप में ही जन्म लेते हैं, उनसे भेंट करते हैं, उनसे मिलते हैं, उनके चरणों का स्पर्श करते हैं और उनसे आलिंगनबद्ध होते हैं।

परन्तु माया उन पर छायी रहती है जिससे वे प्रकाश में आने के बाद तुरन्त अंधकार से ग्रस्त हो जाते हैं, आध्यात्म में आने के तुरन्त बाद भौतिकता के पंक में लिप्त हो जाते हैं और वे चाहते हुए भी उस युग-पुरुष को पहचान नहीं पाते, और जब वह युग-पुरुष अपना कार्य सम्पन्न कर इस भारत-भूमि से, इस भारत लोक से दूसरे लोक में गमन करते हैं तो कुछ समय बाद यह अनुभव होता है कि वास्तव में ही एक प्रकाश पुंज हमारे बीच था और हम उसकी सामीप्यता अनुभव नहीं कर सके, उसके पास बैठ नहीं सके, उसका अवगाहन नहीं कर सके, उससे पूर्णता प्राप्त नहीं कर सके, उसमें लीन नहीं हो सके, और अपने समय को व्यर्थ में बर्बाद कर दिया, व्यर्थ में नष्ट कर दिया, मगर यह उस समय सोचना पड़ता है या उस समय सोचने के लिए बाध्य होना पड़ता है जब वह युग-पुरुष, वह हंसावतार, वह सोलह कला प्रधान व्यक्तित्व इस लोक से गमन कर दूसरे लोक में प्रादुर्भूत हो जाता है। यह माया का आवरण है, और बहुत कम व्यक्तित्व ऐसे होते हैं, जो माया के आवरण को छिन्न-भिन्न कर, उसमें से निकलकर उस ब्रह्म स्वरूप के दर्शन कर लेते हैं, उसकी सामीप्यता

अनुभव कर लेते हैं, और जिस उद्देश्य से वह अवतरित हुआ है उस उद्देश्य की पूर्ति में वे यथासंभव सहायक होते हैं। और सहायक वे होते हैं जो पति, पत्नी, पुत्र, पुत्रियाँ, बंधु-बांधव, कुटुम्ब, धन, यश, मान-पद और प्रतिष्ठा को लात मारकर केवल एक ही चिंतन, एक ही विचार उनके मन में होता है कि यह सब तो माया है, इसे तो कभी भी प्राप्त किया जा सकता है, परन्तु ऐसे व्यक्तित्व की सामीप्यता पुन: प्राप्त नहीं की जा सकती।

और ऐसे योगी, यति चाहे वे गृहस्थ रूप में हों, चाहे वे संन्यासी रूप में हों, चाहे वे सामान्य रूप में हों, ऐसे युग-पुरुष के पास रहकर वे सब कुछ प्राप्त कर लेते हैं, जो अन्य किसी विधि से सम्भव नहीं है। और मैंने यह भी स्पष्ट किया कि हम उन्हें किन युक्तियों से पहचान सकते हैं।

शंकराचार्य ऐसे ही शिव के स्वरूप थे। जब चारों तरफ बौद्ध धर्म आच्छादित हो गया, जब पूरे आर्यावर्त की दृष्टि बौद्ध धर्म पर केन्द्रित हो गई, जब यह विचारधारा आर्यावर्त में पनपने लगी कि कुछ भी करना आवश्यक नहीं है केवल शांत बैठे रहना है, वृक्ष की तरह ध्यानरत होना है, जड़ की तरह स्थिर होना है, अपने अंदर उतरने की क्रिया करनी है। परन्तु यह ज्ञात नहीं होता कि अंदर कैसे उतरा जाए, वह कौन-सा स्थान है जहाँ अंदर उतरने की क्रिया होती है, किस युक्ति से अंदर पहुंचकर ब्रह्म के साक्षात् दर्शन किए जा सकते हैं। और फिर उस समय में एक परिपाटी व्याप्त हो गयी थी कि जब एक राज्य का राजा बौद्ध धर्म स्वीकार कर लेता था तो उसकी सारी प्रजा अपने आप बौद्ध धर्म से आच्छादित मान ली जाती थी। यह स्पष्ट हो जाता था कि उस राजा के राज्य में जितने भी मनुष्य हैं, पुरुष हैं, स्त्रियाँ हैं, बालक हैं, वे सभी बौद्ध धर्म में दीक्षित हैं। ऐसे समय में उनका जन्म हुआ हुआ।

निश्चय ही बौद्ध धर्म अपने-आप में एक अद्वितीय धर्म है, अंदर के चक्रों को जाग्रत करने की श्रेष्ठतम कला है, ध्यान प्राप्त करने का श्रेष्ठतम विधान है, संसार से कटकर कुण्डलिनी तक पहुंचने की प्रक्रिया है, बाहरी संसार से कटकर जीवन में उतरने का विधान है। परन्तु यह सब तो एकांगी हुआ।

निश्चय ही ऐसा व्यक्ति स्वयं जीवन से कटा, वह स्वयं जीवन में उतरा, वह स्वयं ध्यानस्त हुआ, उसने स्वयं कुण्डलिनी का स्पर्श किया, परन्तु उसके द्वारा जन-साधारण को क्या लाभ हुआ, जन-साधारण ने क्या अनुभव किया?

और जब तक जन-साधारण किसी ज्ञान को, किसी चेतना को अनुभव नहीं करता तब तक वह ज्ञान, वह चेतना, एकांगी होती है। इस दृष्टि से पंडितों ने बौद्ध धर्म को सार्वकालिक और सार्वभौमिक कहने के साथ-साथ एकांगी भी कहा। फिर भी सनातन धर्म का इतना विस्तार है कि उसने बौद्ध धर्म को भी आत्मसात किया और भगवान बुद्ध को भी एक अवतार की श्रेणी में रख कर बौद्धावतार कहा।

परन्तु इससे धीरे-धीरे सनातन धर्म लोप होता गया, सनातन धर्म अस्पृश्य होने लगा, सनातन धर्म के प्रति चिंतन समाप्त हो गया, वेद समाप्त होने लगे, पुराण और उपनिषद् समाप्त होने लगे, ऋषियों की वाणी

मौन हो गई और यह सब ज्ञान परे धकेल दिया गया। यह एक विडम्बना थी, यह एक अंधकार था।

इस अंधकार को परे हटाना इस आर्यावर्त के लिए आवश्यक हो गया, और ऐसे समय में सन् 781 ई. में केरल राज्य के कालडी ग्राम में वैशाख शुक्ल दशमी को एक अद्वितीय युग-पुरुष, शिव स्वरूप भगवदपाद शंकराचार्य का प्रादुर्भाव हुआ, जो कि सही अर्थों में शिव के ही अंशावतार थे, शिव के ही अंशानुभूत थे।

और यह मैं पहले ही स्पष्ट कर चुका हूँ कि किन युक्तियों से, किन स्थितियों से यह अनुभव किया जा सकता है, वे सात बिंदु कौन से हैं, जिनके माध्यम से यह ज्ञात किया जा सके कि वास्तव में ही एक अवतार ने, एक अद्वितीय युग-पुरुष ने, एक श्रेष्ठ इतिहास-पुरुष ने इस पृथ्वी पर, इस धरा-धाम पर अवतरण किया है। और तब समस्त लोगों ने अनुभव किया कि इस बालक पर वे सातों बिंदु स्पष्ट होते हैं, साफ-साफ दिखाई देते हैं। और उनके अवतरण से पृथ्वी हर्षोन्मत्त हो उठी, आकाश झूमने लग गया, आर्यावर्त करवट लेकर के जाग उठा और यह विश्वास हो गया कि सनातन धर्म समाप्त नहीं हो पाएगा, एक अकेला सूर्य ही पूरी पृथ्वी को प्रकाशवान कर सकेगा, लाखों तारों की अपेक्षा मात्र एक चन्द्रमा अपनी शीतलता और रोशनी से समस्त आकाश-मण्डल को जगमगा सकेगा।

भगवदपाद शंकराचार्य की तेजस्वी माता का नाम आर्य अंबा और पिता का नाम शिवगुरु था। शिवगुरु जो कि इनके पिता थे कोई संतान नहीं होने के कारण अत्यन्त व्यथित थे, क्योंकि संतान होने से ही पितृों को तृप्ति मिलती है, संतान होने से ही सभ्यता और संस्कृति गतिवान होती है, और ऐसा चिंतन करने पर शिवगुरु ने भगवान शिव की आराधना प्रारंभ की और कठोर तपस्या में रत हो गए।

उन्होंने निश्चय कर लिया कि केवल मेरे घर में पुत्र का जन्म भगवान शिव की कृपा से ही हो सकता है क्योंकि वे औढ़रदानी हैं, क्योंकि वे पल में प्रसन्न होने वाले हैं, क्योंकि वे सब कुछ प्रदान करने वाले हैं। और उनकी तपस्या व्यर्थ नहीं गई, उन तपस्याओं, कठिनाइयों, यौगिक क्रियाओं और निरन्तर मंत्र जप के फलस्वरूप उनके घर में भगवदपाद आद्य शंकराचार्य का जन्म हुआ।

बाल शंकर का उपनयन संस्कार मात्र पांचवे वर्ष में ही हो गया और असाधारण विशुद्ध ज्ञान की वृद्धि होने की वजह से, आठ वर्ष की अवस्था में ही उन्होंने चारों वेदों का अध्ययन पूर्ण कर लिया और बारहवें वर्ष के आते-आते सभी शास्त्रों का अभ्यास सम्पन्न कर लिया। तो अनेक तात्कालिक गुरुओं ने कहा कि अब मेरे पास कोई वेद, कोई उपनिषद्, कोई श्रुति, कोई स्मृति नहीं बची है जो मैं इस बालक को दे सकूं क्योंकि इसके पूर्व जन्म के संस्कार ही इतने प्रबल हैं कि जिस आयु में बालक गलियों में खेलता है उस अवस्था में यह चारों वेदों में पारंगत हो चुका है, सारे शास्त्रों में अध्ययनरत हो चुका है और यह सब कंठस्थ कर अपनी असाधारण मेधा शक्ति का परिचय दिया है। ऐसे समय में ही संयोगवश उनके पिता शिवगुरु ने अपनी भौतिक देह का परित्याग कर दिया। और यह सब कुछ देखकर उस बारह वर्ष के बालक ने यह निश्चय किया कि यह संसार मिथ्या है, ब्रह्म ही सही अर्थों में सत्य है।

और उन्होंने तीव्र वैराग्य लेने का निश्चय कर लिया। परन्तु तीव्र वैराग्य लेने के लिए पिता ब्रह्मलीन हो जाने के कारण माता की आज्ञा लेना अनिवार्य था और एक मां ऐसे समय में अपने एक मात्र पुत्र का परित्याग नहीं कर सकती थी। बालक शंकर ने अपने विचार मां के सामने रखे तो उसने दृढ़ शब्दों में मना कर दिया, अस्वीकृति दे दी, कि मेरा कौन होगा, मेरा जीवनयापन कैसे होगा, मैं किसे पुत्र कहकर पुकारूँगी, मेरा श्राद्ध कौन करेगा, मेरी मृत्यु के बाद क्या होगा?

भगवान शंकर ने कुछ उत्तर नहीं दिया। एक दिन नदी के किनारे जब माँ अपने कलश को जल में डुबोकर भर रही थी और बालक शंकर लीला करते हुए नदी में स्नान कर रहे थे, तभी एक ग्राह्य, (मगरमच्छ) उनके पांव को अपने जबड़ों में फंसाकर नदी की तीक्ष्ण धारा में, गहराई में खींचने लगा और यह देखकर मां घबरा उठी, विचलित हो उठी। उसे निश्चय हो गया कि इस बालक की मृत्यु इस प्रकार से निश्चित है। भगवदपाद शंकराचार्य ने ऐसे कठिन समय में हाथ जोड़कर मां से निवेदन किया कि या तो वह ग्राह्य, यह मगरमच्छ मुझे नदी में डुबो देगा और मैं हमेशा के लिए काल कवलित हो जाऊँगा या आप मुझे संन्यास लेने की आज्ञा प्रदान कर दें, तो संभवत: ग्राह्य मुझे छोड़ देगा और मैं जीवित रहता हुआ इस संसार में कार्य कर सकूँगा। और यह भी मैं विश्वास दिलाता हूँ कि संन्यासी होने के उपरांत भी तुम्हारी मृत्यु के समय मैं तुम्हारे पास ही रहूँगा। वे सारे संस्कार सम्पन्न करूँगा जो एक पुत्र अपनी माता के लिए करता है।

अनमने भाव से ही सही माता ने अनुज्ञा दे दी कि समाप्ति की अपेक्षा यदि मेरा पुत्र संन्यास भी ले लेता है तब भी बालक जीवित तो रहेगा ही। और उन्होंने बालक को संन्यास लेने की अनुज्ञा प्रदान कर दी। और यह लीला अपने आप में इतिहास में अंकित हो गई। मगरमच्छ ने शंकर के पांव को छोड़ दिया।

शंकर नदी के बाहर आए और उन्होंने उसी समय संन्यास ले लिया और उस प्रकार से घर से निकल पड़े जिस प्रकार से कि उनका कभी उस घर में, उस आंगन में, उस पड़ोस-परिवार से, उस माँ से किसी प्रकार का कोई सम्बन्ध ही नहीं रहा हो।

और इस क्रिया के फलस्वरूप उस रूढ़ी ग्रस्त समाज ने, उस घर का परित्याग कर दिया, समाज से निकाल दिया, उन पर प्रहार किया, उनकी आलोचना की, उनको बुरा-भला कहा कि यह समाज की मर्यादा के विपरीत है, जब पिता जीवित नहीं है तो मां का परित्याग नहीं किया जा सकता।

परन्तु बालक योनिज नहीं थे, उन्होंने जन्म नहीं लिया था अपितु एक विशेष उद्धेश्य के लिए वे प्रादुर्भूत हुए थे। अत: उन्होंने इस बात की चिंता नहीं की कि समाज क्या कह रहा है, समाज का चिंतन क्या है, समाज की विचारधारा क्या है। वे घर से निकल पड़े और ओंकारेश्वर क्षेत्र में नर्मदा के तट पर भगवतपाद शंकराचार्य ने मात्र चौदह वर्ष की अवस्था में ही श्री गोविन्द पादाचार्य से संन्यास दीक्षा प्राप्त की, और पूर्ण संन्यासी बने। संन्यास की परिभाषा को उन्होंने अंकित किया। उन्होंने आगे चलकर यह सिद्ध कर दिया कि एक सूर्य ही पूरे विश्व को आलोकित करने के लिए पर्याप्त है।

और मात्र सौलह वर्ष की अवस्था में ही काशी नगरी में जाकर उन्होंने प्रस्थान त्रयी पर भाष्य लिखा। और यह प्रस्थान त्रयी अपने-आप में अद्वितीय ग्रंथ था जो हजारों-हजारों पंडित मिलकर के भी इस प्रकार के ग्रंथ की रचना नहीं कर सकते थे। उन्होंने उस ग्रंथ को पढ़कर दांतों तले उंगली दबा ली और उन्हें विश्वास ही नहीं हो रहा था कि एक सौलह वर्ष का बालक ऐसे सुन्दर भाष्य की रचना कर सकता है, जिसे 'प्रस्थान त्रयी' कहते हैं, जो वेदों और पुराणों, उपनिषदों और श्रुतियों, स्मृतियों और समस्त वेद-वेदांगों का सार-भूत तथ्य है।

और यही क्षण था जब उन्होंने सनातन वैदिक धर्म के पुन: स्थापन का आलौकिक कार्य प्रारम्भ किया। और जब उन्होंने सुना कि उनकी माता की मृत्यु सनिकट है, जब उन्होंने ध्यान लगाकर देखा कि माता ब्रह्मलीन होने वाली है, तो पुन: केरल अपने ग्राम में गए और शांति के साथ माँ को चिर-निद्रा में लीन होने दिया।

परन्तु समाज का अंकुश और दण्ड तो था ही। और समाज ने स्पष्ट रूप से घोषणा कर दी कि हम तुम्हारी माता के दाह-संस्कार में भाग नहीं लेंगे। हम तुम्हारा किसी प्रकार से साथ नहीं देंगे और अकेले शंकर ने कंधे पर माँ की लाश रखकर श्मशान में ले जाकर पूर्ण वैदिक-विधान के साथ उनका दाह-संस्कार सम्पन्न किया।

भगवतपाद शंकराचार्य अपनी माँ को मुखाग्नि देकर जब पुन: गाँव में आए तो गाँव के ब्राह्मण समाज ने जाति च्युत और ग्राम-च्युत कर दिया कि तुम ग्राम में रहने लायक नहीं हो, तुम जाति में रहने लायक नहीं हो, क्योंकि तुमने इस जाति की मर्यादा को तोड़ा है, हमारे समाज में, हमारे ब्राह्मण कुल में इस प्रकार से संन्यास नहीं लिया जाता अपितु विवाह कर संतान उत्पत्ति कर, इस समाज को आगे बढ़ाने में सहायक हुआ जाता है।

शंकराचार्य ने अपने तर्कों और शास्त्र सम्मत व्याख्याओं के माध्यम से विद्वत समाज को यह स्पष्ट किया कि मनुष्य दो कार्यों में से एक कार्य कर सकता है, या तो वह पशु योनि में रहकर, संतान उत्पन्न कर अग्रसर हो सकता है, अपितु यदि वह ऐसा नहीं करता तो वह जीवन में इन झंझटों से, इन बाधाओं और अड़चनों से अपने आप को परे रखकर उस कार्य को सम्पन्न करता है, उस जीवन के आयामों को स्पर्श करता है जो सनातन धर्म का आधार है।

उन्होंने कहा-ऐसे समय में जब सनातन धर्म लोप हो रहा है, जब सनातन धर्म की धज्जियाँ उड़ाई जा रही हैं, जब सनातन धर्म पर बौद्ध धर्म हावी हो रहा है, जब समाज के लोग भयभीत हो रहे हैं, जब समाज अकर्मण्य और पंगु हो रहा है ऐसे समय में कोई न कोई व्यक्तित्व तो ऐसा उत्पन्न होगा ही, कोई न कोई व्यक्तित्व तो अग्रसर होगा ही, जो इस जड़ता को, जो इस अंधकार को दूर कर पुन: उस प्रकाश को पृथ्वी पर बिखेरने का प्रयत्न करेगा जैसे सूर्य करता है।

मुझे तो आपका आशीर्वाद चाहिए, आपके द्वारा कल्याण कामना चाहिए कि मैं इस कार्य को सम्पन्न कर सकूँ।

परन्तु उस समय जाति के बंधन इतने अधिक जटिल थे, इतने अधिक बंधन युक्त थे, इतने अधिक जड़युक्त थे कि उनके तर्कों का कोई प्रभाव इस समाज पर नहीं पड़ा और शंकराचार्य की जाति ने, उनके स्वजनों ने, उनके परिजनों ने माँ की मृत्यु के उपरान्त (की क्रियाओं में) किसी भी प्रकार से भाग नहीं लिया और जो तेरह दिन तक पिंडदान, पिंडक्रिया, उर्ध्वक्रिया, पुन: जन्म क्रिया, ब्रह्मलीन क्रिया और तत्व क्रिया की जाती है, इस प्रकार के किसी भी कार्य में उन्होंने योगदान नहीं किया।

कल्पना की जा सकती है कि एक चौदह-पन्द्रह साल के बालक ने समाज के इतने भीषण आघातों को झेला, उनसे जूझा और यह सारा कार्य जो उनके स्वजनों को करना चाहिए था, उन कार्यों को भी अश्रुओं से अपने चेहरे को भिगोते हुए सम्पन्न किया और दृढ़ता दिखा दी कि मैं सत्य के लिए जीवन में टूट तो सकता हूँ, मगर झुक नहीं सकता, क्योंकि मैंने समाज में, अपने जीवन में जो रास्ता अपनाया, जिस मार्ग का अवलम्बन किया है वह रास्ता अपने-आप में परिपूर्ण है, वह रास्ता अपने-आप में चेतनायुक्त है। यही रास्ता मृत्यु से अमृत्यु की ओर ले जाने में कटिबद्ध है, यही रास्ता विष को अमृत में परिवर्तित कर सकता है, और केवल यही रास्ता अंधकार को प्रकाश से भर सकता है।

और ये सारे प्रहार शंकर ने झेले। उनका मन और ज्यादा विरक्त हो उठा कि जिन स्वजनों पर विश्वास था, जिन स्वजनों पर गर्व था, उस स्वजनों ने एक छोटी-सी बात पर मुझे ऐसे कार्य भी करने को बाध्य किया जो कार्य उनको करना चाहिए था। और ऐसा मन में विचार आने के बाद वे पुन: अपने गन्तव्य स्थल की ओर रवाना हो गये, और माँ की भस्मी को अपने झोले में रखकर उस मृत आत्मा को यह विश्वास दिलाया कि मैं संन्यासी हूँ परन्तु तुम्हारा पुत्र भी हूँ, और तुमने मुझे इच्छा या अनिच्छा से संन्यास स्वीकार करने के लिए जो आज्ञा प्रदान की उसके प्रति मैं प्रणम्य हूँ और मैं तुम्हारी इस भस्मी को समस्त तीर्थों में बिखेरकर, समस्त पवित्र स्थानों पर बिखेरकर तुम्हारे जीवन को, तुम्हारी मृत-आत्मा को पूर्णता, सफलता देने का प्रयास इसलिए करूँगा कि तुम मेरी माँ हो, पराम्बा हो, जननी हो और मेरी इस देह का सर्वस्व हो। और ऐसा सोचकर शंकराचार्य हमेशा-हमेशा के लिए उस ग्राम से रवाना हो गए और सीधे अपने गुरु गोविन्द पादाचार्य के पास पहुँचे। उस समय जहाँ उन्होंने दीक्षा ली थी, वह ओकारेश्वर क्षेत्र अत्यन्त समृद्ध और अद्वितीय था क्योंकि नर्मदा के किनारे एक ऐसा स्थान था जहाँ नर्मदा विमुख गति से गतिशील होती है।

सर्वत्र नर्मदा उत्तर से दक्षिण की ओर गतिमान है परन्तु ओकारेश्वर क्षेत्र ही एक ऐसा क्षेत्र है, या ऐसा स्थान है जहां नर्मदा स्वयं अपना मार्ग परिवर्तित कर देती है और एक अद्भुत अनिवर्चनीय दृश्य उपस्थित होता है, जब नर्मदा दक्षिण से उत्तर की ओर गतिशील होती है। दोनों पहाड़ों के मध्य, सिद्ध और साध्य पहाड़ों के बीच, देवत्व और पूर्णत्व पहाड़ों के बीच जो कल-कल करती हुई नर्मदा उत्तराभिमुख होकर गतिशील होती है। वह वास्तव में एक ऐसा स्थान है जहाँ पर बैठकर पूर्णता और सम्पन्नता प्राप्त की जा सकती है।

शंकराचार्य अपने गुरु के पास पहुँचे और उन्होंने अपनी अब तक की सारी बीती हुई घटनाओं को उनके सामने रखा। उन्होंने यह भी बताया कि उन्होंने प्रस्थान त्रयी का भाष्य काशी में लिखा। उन्होंने यह ग्रंथ भी उनके सामने रखा और बताया कि प्रस्थान त्रयी का आधारभूत सत्य क्या है, उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि आपकी आज्ञा से मैंने यह बीजारोपण किया है जो आगे चलकर वटवृक्ष की तरह पूरे आर्यावर्त में फैलकर एक शीतलता प्रदान कर सकेगा जिसके तले पुनः सनातन धर्म जीवित, जाग्रत और चैतन्य हो सकेगा।

उन्होंने अपने ग्राम में बीती हुई घटनाओं का भी सांगोपांग वर्णन किया, सम्पूर्ण विवरण गुरु के सामने रखा, और यह बताया कि उन्होंने अपनी माँ के सामने जो प्रतिज्ञा की थी कि, मैं अंतिम क्षणों में तुम्हारे पास रहूँगा और मैं एक पुत्र की भाँति तुम्हें मुखाग्नि दूँगा इसे उन्होंने पूरा कर दिया है। (शेष अगले अंग में)

मैं आपको पूर्ण आशीर्वाद देता हूँ कि आप अपने शिष्यत्व को उच्चता की ओर अग्रसर करते हुए पूर्णत्व प्राप्त करें।

आशीर्वाद आशीर्वाद आशीर्वाद

–पूज्यपाद सद्गुरुदेव डॉ. नारायणदत्त श्रीमालीजी

(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्दजी)

'नारायण मंत्र साधना विज्ञान' पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है, क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में समाहित है।

ज्वालामालिनी देवी शक्ति की उग्ररूपा देवी हैं, परन्तु अपने साधक के लिए अभयकारिणी हैं। इनकी साधना मुख्य रूप से उन साधकों द्वारा की जाती है, जिससे वे शक्ति सम्पन्न होकर पूर्ण पौरुष को प्राप्त कर सकें। ज्वालामालिनी की पूजा साधना गृहस्थों के द्वारा भूत-प्रेत बाधा, तंत्र बाधा आदि के लिए, शत्रुओं द्वारा किए गए मूठ आदि प्राण घातक प्रयोगों को समाप्त करने के लिए की जाती है।

ज्वालामालिनी यंत्र एवं हकीक माला

विधि

इस साधना को आप मंगलवार या अमावस्या की रात्रि को प्रारंभ करें। यह पाँच रात्रि की साधना है। सर्वप्रथम गुरु पूजन सम्पन्न करें, उसके पश्चात् यंत्र का पूजन कुंकुम, अक्षत एवं पुष्प से करें और धूप दिखाएं। फिर काली हकीक माला से निम्न मंत्र का 3 माला मंत्र जप करें।

मंत्र

॥ ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनि सर्वभूत संहारकारिके जातवेदसि ज्वलन्ति प्रज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल हुं रं रं हुं फट् ॥

साधना के तीसरे दिन यंत्र को अपने पूजा स्थान में स्थापित कर दें और जब भी आवश्यकता महसूस करें, ज्वालामालिनी मंत्र की एक माला मंत्र जप अवश्य कर लें।

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

मासिक पत्रिका का वार्षिक मेम्बरशिप ऑफर

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी मित्र, रिश्तेदार या स्वजन को भी बनाकर प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका-सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं।

वार्षिक सदस्यता शुल्क - 405/- + 45/- डाक खर्च = 450/-, Annual Subscription 405/- + 45/- postage = 450/-

नारायण मंत्र साधना विज्ञान जोधपुर

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001

8890543002 0291 2432209, 0291 2432010, 0291 2433623, 0291 7960039

शिवरात्रि या किसी भी सोमवार को

दरिद्रता निवारण प्रयोग

जीवन में धन का अत्यन्त महत्व है। गृहस्थ जीवन धन के अभाव में असफलतादायक ही रहता है। जीवन में सफल रहना है या लक्ष्मी को स्थापित करना है तो प्रत्येक दशा में सर्वप्रथम दरिद्रता विनाशक प्रयोग करना ही होगा।

यह सत्य है कि लक्ष्मी धनदात्री है, वैभव प्रदायक है लेकिन दरिद्रता जीवन की एक अलग स्थिति है और उस स्थिति का विनाश अलग प्रकार से सर्वप्रथम करना आवश्यक होता है।

- नर्मदेश्वर शिवलिंग, रुद्राक्ष माला
- आसन – सफेद ऊनी आसन
- दिशा – उत्तर दिशा

यह प्रयोग शिवरात्रि पर या किसी भी सोमवार को प्रारम्भ किया जा सकता है। अपने सामने किस पात्र में नर्मदेश्वर शिवलिंग को स्थापित करें और उसकी पूजा कर बिल्व पत्र चढ़ायें। घी का दीपक जलायें, धूप लगायें।

फिर रुद्राक्ष की माला से नित्य 21 माला ग्यारह दिनों तक मंत्र जप करें-

मंत्र

।। ॐ ह्रीं दारिद्रयदहन महादेवाय नमः ।।

मंत्र जप पूरा होने के बाद नर्मदेश्वर शिवलिंग अपने पूजा स्थान में स्थापित कर दें और वह रुद्राक्ष माला अपने गले में धारण कर लें। ऐसा करने से उसकी दरिद्रता की समाप्ति होने लगती है।

साधना सामग्री- 570/-

मानव कई छोटी-बड़ी परेशानियों में
उलझकर अपने महत्वपूर्ण क्षणों को व्यर्थ गंवा बैठता है,
जिस कारण वह निराशावादी,
नीरस व अभावयुक्त जीवन जीने पर मजबूर हो जाता है,
विजया एकादशी प्रयोग को संपन्न कर व्यक्ति अपने जीवन के समस्त
मनोरथों को पूर्ण करने में सक्षम एवं समर्थ हो पाता है, क्योंकि

विजया एकादशी......

विजया एकादशी
सर्व बाधा निवारक प्रयोग

विजया एकादशी यानि विजय प्राप्ति पर्व, जो देता है उन्नति, सम्पन्नता, पूर्णता और श्रेष्ठता।

आजके युग में प्रत्येक व्यक्ति का जीवन विभिन्न समस्याओं, बाधाओं, कष्टों आदि से घिरा रहता है। वह हर क्षण परेशान, चिन्तित व दुःखी सा दिखाई देता है और उन दुःखों से मुक्ति पाने के लिए वह अनेकानेक उपाय कर डालता है, परन्तु किसी भी कार्य को करने से पूर्व वह हर क्षण आशंकित सा दिखाई देता है, उसके मन में किसी भी कार्य को सम्पन्न करने से पहले यह विचार अवश्य आता है–

क्या यह कार्य सम्पन्न होगा? क्या इस कार्य में मुझे सफलता मिलेगी? ऐसे अनेक प्रश्न उसके मानस पटल पर अपना आधिपत्य पहले से ही जमा कर बैठ जाते हैं, जिसका परिणाम यह होता है कि वह कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व ही निराश हो जाने के कारण उसमें पूर्णरूप से सफलता प्राप्त नहीं कर पाता।

क्या यह कार्य सम्पन्न होगा? क्या इस कार्य में मुझे सफलता मिलेगी? ऐसे अनेक प्रश्न उसके मानस पटल पर अपना आधिपत्य पहले से ही जमा कर बैठ जाते हैं, जिसका परिणाम यह होता है कि वह कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व ही निराश हो जाने के कारण उसमें पूर्णरूप से सफलता प्राप्त नहीं कर पाता।

धन, वैभव, मान, प्रतिष्ठा, व्यापार आदि सभी क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करने के लिए व्यक्ति हर क्षण प्रयासरत रहता है, किन्तु सफलता उसके हाथ नहीं लगती। साधारणतः आम जीवन में तो प्रत्येक व्यक्ति ऐसी ही समस्याओं व बाधाओं से ग्रस्त रहता है, किन्तु इन सभी कष्टों से, इन सभी बाधाओं से उसे छुटकारा मिल सकता है, यदि उसे उस क्षण विशेष में उस दुर्लभ साधना का ज्ञान हो, जिसे 'विजया एकादशी प्रयोग' कहते हैं।

यह जीवन के सभी क्षेत्रों में विजय प्राप्त करने का एकमात्र उपाय है, यदि व्यक्ति को इस प्रयोग का ज्ञान हो, तो वह अपने अभावयुक्त जीवन से शीघ्र ही निजात पा सकता है। यह एक दुर्लभ एवं महत्वपूर्ण प्रयोग है, जिसे प्रत्येक व्यक्ति को सम्पन्न करना ही चाहिए।

जीवन का मतलब सुख और शांति के साथ समय व्यतीत करना होता है, हम अपने जीवन में जितना परिश्रम करें उतना फल हमें प्राप्त हो जाए, पर अधिकतर ऐसा नहीं होता, हम अपने जीवन में देखते हैं कि बहुत अधिक परिश्रम करने पर भी उतनी अधिक सफलता हमें प्राप्त नहीं हो पाती।

व्यापार में हम दिन-रात मेहनत करते रहते हैं और समय आने पर उसका जो कुछ लाभ प्राप्त होना चाहिए, वह प्राप्त नहीं हो पाता, हम अपनी तरफ से परिवार में कोई कलह या मनमुटाव नहीं चाहते, परन्तु प्रयत्न करने के बावजूद भी परिवार में जो सुख, शांति और आनन्द होना चाहिए वह नहीं हो पाता।

विजया एकादशी प्रयोग को सम्पन्न कर व्यक्ति अपने जीवन के समस्त मनोरथों को पूर्ण करने में सक्षम एवं समर्थ हो पाता है। ग्रंथों के अनुसार यदि व्यक्ति विजया एकादशी के दिन इस प्रयोग को सम्पन्न कर लेता है, तो उसे सफलता मिलती ही है, क्योंकि विजया एकादशी अपने आप में ऐसा ही श्रेष्ठ क्षण है, जिसका लाभ कोई भी व्यक्ति या साधक पूर्णतः उठा सकता है।

आज मानव कई छोटी-बड़ी परेशानियों में उलझकर अपने महत्वपूर्ण क्षणों को व्यर्थ गंवा बैठता है, जिस कारण वह निराशावादी, नीरस व अभावयुक्त जीवन जीने पर मजबूर हो जाता है, जैसे–

1. यदि व्यक्ति निर्धन हो तथा आर्थिक दृष्टि से दुःखी व पीड़ित हो।
2. यदि वह बीमार हो, उसका स्वास्थ्य ठीक न रहता हो।
3. किसी तनाव से चिन्ताग्रस्त होने के कारण यदि व्यक्ति बार-बार आत्महत्या करने की सोच रहा हो।
4. यदि विवाह सम्पन्न न हो रहा हो।
5. विवाह सम्पन्न होने के पश्चात् यदि सन्तान उत्पन्न न हो रही हो।
6. यदि परीक्षा में या जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त न हो रही हो।
7. पुत्र या पुत्री आज्ञाकारी न हो।
8. यदि आपका कोई शत्रु हो या अकारण ही किसी से शत्रुता बढ़ जाए अथवा हर समय शत्रुभय बना रहता हो।

जीवन के प्रत्येक पक्ष,प्रत्येक क्षेत्र में विजय प्राप्त कर सुख-वैभव, पद-प्रतिष्ठा प्राप्त करना, प्रत्येक साधक का अधिकार है......... लेकिन यह सम्भव है उस विशेष क्षण को पकड़ कर सभी प्रकार से विजय प्राप्त कर लेने की.....

9. यदि समाज में कोई सम्माननीय स्थान प्राप्त न हो रहा हो।

10. यदि मकान, जमीन-जायदाद आदि के लिए किसी विपत्ति या परेशानी का सामना करना पड़ रहा हो।

11. यदि बहुत प्रयत्न करने पर भी आपके कार्य सफल नहीं हो रहे हों।

12. यदि राज्य की तरफ से बराबर अड़चनें आ रही हों और प्रयत्न करने पर भी अधिकारियों से मतभेद दूर नहीं हो रहे हों।

13. यदि नौकरी में उन्नति व प्रमोशन न मिल रही हो।

14. जीवन में बहुत बड़ा भाग व्यतीत करने पर भी भाग्योदय नहीं हो रहा हो, हर क्षण बाधाओं का सामना करना पड़ रहा हो।

इस प्रकार की समस्त बाधाओं, अड़चनों का निराकरण इस विजया एकादशी प्रयोग से ही सम्भव है, जो धन, यश, मान, पुत्र, पौत्र, व्यापार, नौकरी, विवाह आदि समस्याओं को दूर करने में सक्षम है।

वास्तव में ही यह एक अद्वितीय एवं अचूक प्रयोग है, जिसे सम्पन्न कर व्यक्ति शीघ्र ही लाभ प्राप्त कर सकता है। यह प्रयोग पूर्णत: प्रामाणिक है, क्योंकि पूज्य गुरुदेव द्वारा अपने कुछ शिष्यों को दिया गया यह अद्वितीय प्रयोग अपनी प्रामाणिकता को सिद्ध करता है, जिसे सम्पन्न कर उन शिष्यों या साधकों ने महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त की और आज भी जीवन के प्रत्येक पक्ष, प्रत्येक क्षेत्र में विजय प्राप्त कर वे सुख-वैभव, पद-प्रतिष्ठा, पुत्र-पौत्र सभी कुछ प्राप्त कर एक श्रेष्ठ व पूर्ण सम्पन्नतायुक्त जीवन का निर्माण करने में सक्षम हो सके हैं।

विजया एकादशी तो समस्त कार्यों में विजय प्रदान करने वाली एकादशी है। यह सौभाग्यदायक दिवस 27.02.22 को एक विशेष पर्व के रूप में आपके सामने उपस्थित हो रहा है, यदि उसका साधनात्मक दृष्टि से उचित प्रयोग किया जाए, तो यह प्रयोग विशेष उन्नतिदायक एवं सफलतादायक है, जिसे सम्पन्न कर व्यक्ति सुख, सौभाग्य, समृद्धि, उन्नति, पूर्णता व श्रेष्ठता प्राप्त कर लेता है।

इस प्रयोग को कोई भी व्यक्ति अपने घर में बैठकर सम्पन्न कर सकता है। यह एक सहज सफलतादायक प्रयोग है, जिससे साधक जीवन के प्रत्येक पक्ष, प्रत्येक समस्या पर विजय प्राप्त कर एक सुखी जीवन का निर्माण कर सकता है।

प्रयोग विधि

इस प्रयोग को सम्पन्न करने के लिए श्रेष्ठ तिथि फाल्गुन कृष्ण पक्ष की एकादशी, तदनुसार 27.02.22 को है। यह रात्रिकालीन साधना है, इसमें साधक या साधिका स्नान कर, शुद्ध पीले वस्त्र धारण कर, पीले आसन पर पश्चिम की ओर मुंह कर बैठ जाए, इसके पश्चात् बाजोट के ऊपर पीला वस्त्र बिछाकर, उस पर कुंकुम से अष्टदल कमल अंकित कर विजया यंत्र को उस पर रख दें, फिर उस यंत्र पर अष्टदल से 11 बिन्दियाँ लगाएं तथा 11 घुंघचियों को अर्द्धचन्द्राकार रूप में यंत्र के सामने रख दें, इसके बाद कुंकुम, अक्षत व 11 पीले पुष्प उस यंत्र व घुंघचियों के समक्ष अर्पित कर दें तथा एक घी का दीपक यंत्र के सामने प्रज्वलित कर दें, ध्यान रखें कि दीपक पूरे साधनाकाल में जलता रहे, फिर इसके पश्चात् साधक बेसन से बने भोग को नैवेद्य के रूप में समर्पित करें।

इस प्रयोग को सम्पन्न करने के लिए किसी भी प्रकार की माला की कोई आवश्यकता नहीं है, केवल 60 मिनट तक शांतचित्त होकर निम्न मंत्र का जप करें–

मंत्र

।। ॐ श्री ह्लौं विजयायै नमः।।

मंत्र-जप करने के पश्चात् गुरु आरती सम्पन्न करें तथा बेसन से बना प्रसाद वितरित करें।

इस प्रकार पूर्ण विधि-विधानपूर्वक पूजन सम्पन्न करे, पूरे परिवार के साथ प्रसाद ग्रहण कर भोजन कर लें। अगले दिन प्रात:काल उठकर साधक उस यंत्र का पुन: संक्षिप्त पूजन करे, जिस वस्त्र पर यंत्र स्थापित किया है, उसी में यंत्र और घुंघची को लपेटकर उसे मौली से बांध दें, फिर किसी पवित्र सरोवर में उस पोटली को विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री- 450/-

गृहस्थ जीवन का आदर्श स्वरूप भगवान सदाशिव और माता पार्वती ही हैं, इसी लिए प्रत्येक गृहस्थ शिव गौरी को अपना आराध्य मानता है। जिस प्रकार भगवान शिव का गृहस्थ जीवन सभी कामनाओं से पूर्ण है। पुत्र के रूप में भगवान गणपति और कार्तिकेय हैं और संदैव साथ में गौरी रूपा पार्वती हैं। स्थान भी पूर्ण शांति युक्त हिमालय है, जहां वे पूर्ण आनन्द से विराजित होते हैं। गृहस्थ व्यक्तियों के लिए शिव और गौरी आदर्श स्वरूप क्योंकि शिव को रसेश्वर कहा गया है और गौरी को रसेश्वरी कहा गया है। यह शिव और शक्ति का संयुक्त रूप है तो शिवलिंग के रूप में परिलक्षित होता है।

गृहस्थ सुख प्राप्ति
शिव गौरी साधना

जहां जीवन में गृहस्थी हैं तो उसके साथ बाधाएं तो आएंगी ही लेकिन शिव गौरी की साधना कर जीवन को रस से युक्तबनाया जा सकता हैं।

जीवन में नित्य प्रति- आनन्द रस की वर्षा होती रहे, ऐसा अनुभव हो कि हर सुबह एक नई प्रसन्नता लेकर जीवन में आयी है, तो वह जीवन अनूठा जीवन होता है, उसमें प्रसन्नता का रस ही रस भरा रहता है। शिवरात्रि को तो शिव साधना सम्पन्न करनी हीं है, उसके पश्चात यह शिवगौरी साधना भी 11.03.22 को होली महाकल्प पर अवश्य सम्पन्न करें।

यह साधना किसी भी शुक्रवार को प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में आरम्भ करनी चाहिए। इस दिन स्नान करके पीली धोती पहन कर, पीले आसन पर उत्तर दिशा की ओर मुख करके बैठें। सामने चौकी पर गणपति का चित्र स्थापित करके, ॐ गणेशाय नमः इस मंत्र का उच्चारण करते हुए पीले चावल 108 बार चढ़ाएं और दोनों हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें - हे! भगवान गणपति! गृहस्थ सुख के लिए मुझ पर कृपा करें। इसके बाद गुरु चित्र स्थापित कर, पंचोपचार पूजन करके किसी प्लेट पर कुंकुम से या केशर से स्वस्तिक चिह्न बनाकर **गौरी शंकर रुद्राक्ष** स्थापित करें। इसके बाद **नीली हकीक माला** को गोल करके उसे रुद्राक्ष को पहना दें। इसके बाद स्नान, धूप, दीप, पुष्प आदि द्वारा गौरी शंकर की पूजा करके निम्न मंत्र का उसी **नीली हकीक माला** से पांच माला जप करें।

मंत्र

।। ॐ भवानी गौर्य्यै पति सुख सौभाग्यं देहि देहि
शिव शक्त्यै नमः।।

यह 11 दिन की साधना है, उसके बाद भी जब तक कार्य सिद्ध न हो तब तक विधिवत् पूजन के साथ उसी माला से 1 माला मंत्र जप करते रहें। इस साधना में शुद्धता तथा आचार-विचार, खान-पान का अवश्य ध्यान रखें। शुद्ध शाकाहारी भोजन लेना चाहिए तथा स्वस्थ चिन्तन करना चाहिए।

साधना सामग्री- 390/-

।। ॐ नमो शिवाय ।।

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं। विभुं व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपम् ।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं। चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम् ।।

शिवरात्रि
01.03.22

महाशिवरात्रि पूजन

स एको रुद्रो ध्येय: सर्वेषां सर्वसिद्धये।
शिव एव सदाध्येय: सर्व संसार मोचक:।

शरभोपनिषत् में कहा गया है कि रुद्र के ध्यान-पूजा से सभी लोगों को सभी प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त हो सकती हैं। भगवान् शिव भव-बंधन से छुड़ानेवाले हैं, इसलिये सदैव उनका ध्यान करना चाहिये।

पाशुपतब्रह्मोपनिषद् में रुद्र को समस्त यज्ञों का कर्त्ता बताया गया है (समस्त यागानां रुद्र: पशुपति कर्त्ता-श्लोक 1)। भावार्थ यह है कि यज्ञफल पानेवाले को रुद्रोपासना करनी चाहिये। भगवान् शिव ने स्वयं बतलाया है कि ''जो केवल जल से भी मेरे शिवलिंग को नहलाता है, वह भी पुण्य का भागी होता है तथा अभीष्ट फल पा लेता है।''

केवलेनापि तोयेन स्नापयेद् यः शिवं मम।
स चापि लभते पुण्यं प्रियं च लभते नरः।।

शिव पूजन और साधना गृहस्थ व्यक्तियों द्वारा परिवार में सुख समृद्धि प्राप्ति के लिए, कन्याओं द्वारा श्रेष्ठ पति प्राप्त करने के लिए, वृद्ध और रोगियों द्वारा पूर्ण रोग मुक्ति के लिए, भय से ग्रसित व्यक्तियों के लिए मृत्युंजय स्वरूप में, योगियों संन्यासियों द्वारा पूर्ण सिद्धेश्वर रूप में अर्थात् सभी व्यक्तियों द्वारा अपने अपने अभीष्ट कार्यों के लिए शिव पूजा अवश्य सम्पन्न की जाती है।

ऐसा कोई अभागा ही होगा जिसने भगवान शिव की पूजा साधना की हो और उसे फल प्राप्त नहीं हुआ हो भगवान शिव तो सदैव वर प्रदान करते ही हैं, इसीलिए उनकी स्तुति देवताओं के साथ-साथ गण, राक्षण, गंधर्व, भूत प्रेत, पिशाच सभी सम्पन्न करते हैं।

महाशिवरात्रि भगवान शिव की पूजा अभिषेक करने हेतु विशेष दिवस है। इस दिन प्रत्येक व्यक्ति को बाल, युवा, वृद्ध, गृहस्थ, योगी, संन्यासी, स्त्री-पुरुष सभी को शिव पूजन एवं अभिषेक अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए। वैसे तो भगवान शिव एक लोटा भर जल चढाने से ही प्रसन्न हो जाते हैं लेकिन जब विधि विधान के अनुसार पूजन किया जाता है तो उसका आनन्द निराला ही होता है।

महाशिवरात्रि पूजन विधि विधान सहित सम्पन्न करने के लिए पंचामृत, नैवेद्य, चंदन, बिल्व पत्र, जल, दुग्ध की व्यवस्था पहले से ही कर लें इसके अतिरिक्त पूर्ण विधि विधान सहित साधना के लिए पंचोपचार सामग्री आवश्यक है।

यह सामग्री है

सिद्धि प्रदायक शिवलिंग, गौरीशंकर रुद्राक्ष, आनन्द साफल्य और सिद्धेश्वर रुद्राक्ष माला।

साधना विधान

महाशिवरात्रि की रात्रि को सायं काल के पश्चात पूरे परिवार सहित अपने सामने एक बड़ी परात में **सिद्धेश्वर शिवलिंग** स्थापित कर दें उसके साथ ही दूसरी थाली में मध्य में **गौरीशंकर रुद्राक्ष** स्थापित करे उसके साथ ही **आनन्द साफल्य** रखे, इस सारी सामग्री का पंचोपचार पूजन कुंकुम, केसर, पंचामृत से सम्पन्न करना है इसके उपरान्त सिद्धि प्रदायक शिवलिंग का पूजन करें और शिवलिंग पर चंदन और केसर से तिलक करें सर्वप्रथम आह्वान और उसके पश्चात विधि विधान सहित पूजन करें इस पूजन का श्रेष्ठ क्रम निम्न प्रकार से है-

आवाहन

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः।
बाहुभ्यामुत ते नमः।।
एहोहि गौरीश पिनाकपाणी शशांकमौलेवृषभाधिरूढ़।
देवाधिदेवेश महेश नित्यं गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते।।
आवाहयामि देवेशमादिमध्यान्तवर्जितय्।
आधारं सर्वलोकानामाश्रितार्थ प्रदायिनम।।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः आवाहनं समर्पयामि।

अक्षत छिड़क दें

आसन

ॐ याते रुद्र शिवातनूरघोरा पापकाशिनी।
तयानस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि।।

नैवेद्य

नैवेद्य के ऊपर बिल्व पत्र या पुष्प प्रोक्षण करते हुए रुद्र गायत्री बोलें-

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे, महादेवाय धीमहि,
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।

चंदन

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः करोद्वर्तनार्थे
चन्दनं समर्पयामि।

ताम्बूल

ॐ नमस्तऽआयुधायानातताय घृष्णवे।
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यान्तव धन्वने।।
ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः मुखशुद्धयर्थे
ताम्बूलं समर्पयामि।

दक्षिणा

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः
पतिरेकऽआसीत। स दा धार पृथिवीन्द्यामुतेमाइकस्मै
देवाय हविषा विधेम।।
ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः सांगता सिद्धयर्थे हिरण्यगर्भ
दक्षिणां समर्पयामि।

नीराजन (जल)

ॐ इद (गूं) हविः प्रजननम्मे अस्तु दशवीर (गूं) सर्वगण
(गूं) समस्तये। आत्मसनि। प्रजासनि पशुसनि
लोकसन्यभयसनिः। अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो
रेतो अस्मासु धत्स।
ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः नीराजनं दर्शयामि।

पुष्पांजलि

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन। तेह ना कं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।
ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य सा सहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे स मे कामान कामकामाय मह्यम। कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः।।

नमस्कार

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।
तव तत्वं न जानामि कोदृशोसि महेश्वर।
यादृशोसि महादेव तादृशाय नमो नमः।।
त्रिनेत्राय नमस्तुभ्यं उमादेहार्धधारिणे।
त्रिशूलधारिणे तुभ्य भूतानांपतये नमः।।
गङ्गाधर नमस्तुभ्यं वृषभध्वज नमोस्तु ते।
आशुतोष नमस्तुभ्यं भूयो भूयो नमो नमः।।

विशेषार्घ्य

अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम।
तस्मात कारुण्य भावेन रक्ष मां परमेश्वर।।
रक्ष रक्ष महादेव रक्ष त्रैलोक्यरक्षक।
भक्ताना अभयंकर्ता त्राता भव भवार्णवात।।
वरद त्वं वरं देहि वांछितं वांछितार्थद।
अनेन सफलार्घ्येन फलदोस्तु सदा मम।।

अर्घ्य पात्र में जल, गन्धाक्षत पुष्प, बिल्वपत्र, फल आदि मंगल द्रव्य लेकर भगवान को अर्पित करें।

अब शिवलिंग पर जो जलाधारी स्थापित है उसमें जल डालते रहें अथवा एक लोटे में जल और दूध मिलाकर शिवलिंग पर पतली धार में अर्पण करते हुए शिव पंचाक्षरी मंत्र **ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय** का उच्चारण करते हुए अभिषेक करते रहें।

इस प्रकार पूर्ण अभिषेक सम्पन्न होने पर आरती सम्पन्न करें।

आरती
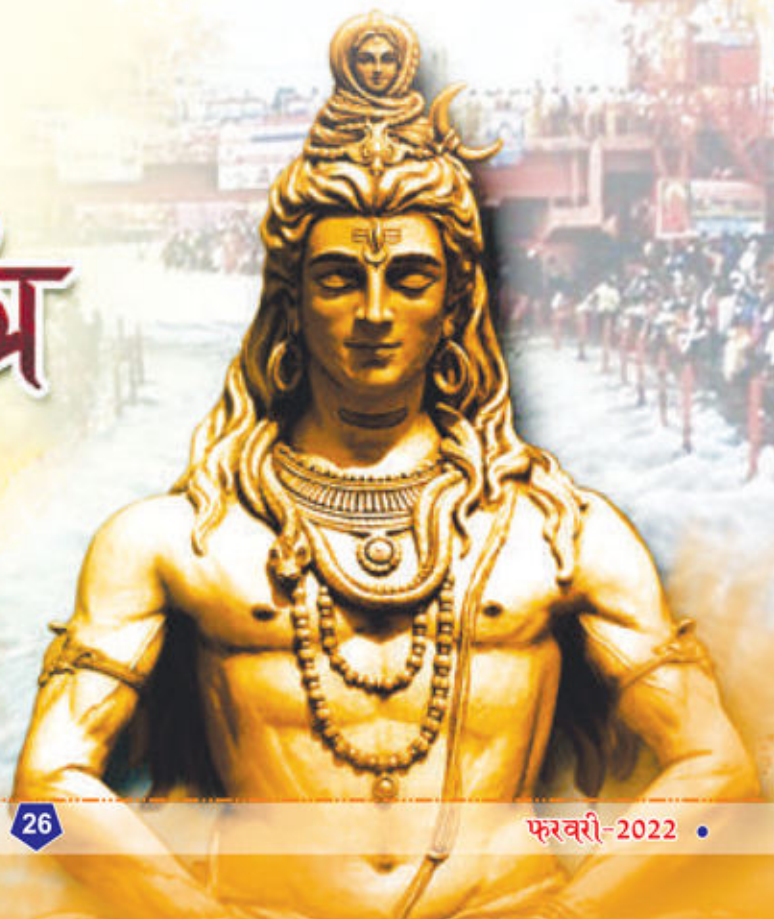
कर्पूर गौरं करूणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्र हारम।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि।।

जब शिव ॐकारा, भज शिव ॐकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्धांगी धारा।।1।।
ॐ हर हर हर....

एकानन चतुरानन पंचानन राजे।
हंसासन गरूडासन वृषवाहन साजे।।2।।
ॐ हर हर हर....

दो भुज चारू चतुर्भुज दशभुज अति सोहै।
तीनों रूप निरखते त्रिभुवन जन मोहे।।3।।
ॐ हर हर हर....

अक्षमाला वनमाला मुंडमाला धारी।
त्रिपुरानाथ मुरारी करमाला धारी।।4।।
ॐ हर हर हर....

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे।
सनकादिक गरूडादिक भूतादिक संगे।।5।।
ॐ हर हर हर....

कर मध्ये सुक मण्डलु चक्र त्रिशूल धर्ता।
सुखकर्ता दुखहर्ता सुख में शिव रहता।।6।।
ॐ हर हर हर....

काशी में विश्वनाथ विराजे नंदी ब्रह्मचारी।
नित उठ ज्योत जलावत दिन दिन अधिकारी।।7।।
ॐ हर हर हर....

ब्रह्मा विष्णु सदा शिव जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर ॐ मध्ये तीनों एका।।8।।
ॐ हर हर हर....

त्रिगुणा स्वामी की आरती जो कोई नर गावे
ज्यारां मन शुद्ध होय जावे, ज्यारां पाप परा जावे
ज्यारे सुख संपत्ति आवे, ज्यारां दुख दारिद्रय जावे
ज्यारे घर लक्ष्मी आवे
भणत भोलानन्द स्वामी, रटत शिवानन्द स्वामी इच्छा फल पावे।।9।।
ॐ हर हर हर....

समर्पण

गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्रयमेव च।
आगता सुख सम्पत्ति पुण्यान्चि तव दर्शनात्।।
देवो दाता च भोक्ता च देवरूपमिदं जगत्।
देवं जपति सर्वत्र यो देवः सोहमेव हि।।
साधुवाऽसाधु वा कर्म यद्यदाचरितं मया
तत सर्वं कृपया देव गृहाणाराधनं मम।।

इसके बाद आरती कर पुष्पांजलि दें।

शिव की आरती में सबसे पहले शिव के चरणों का ध्यान करके चार बार आरती उतारें, फिर नाभि कमल का ध्यान करके दो बार, फिर मुख का स्मरण करके एक बार तथा सर्वांग की सात बार, इस प्रकार चौदह बार आरती उतारें। इसके बाद शंख में या पात्र में जल लेकर घुमाते हुए छोड़ें और निम्न मंत्र पढ़ें–

ॐ द्यौः शांतिरन्तरिक्षं (गूं) शांतिः पृथिवी शांतिरापः शांतिरोषधयः शांति वनस्पतयः शांति विश्वेदेवाः शांतिर्ब्रह्मशांतिः सर्व (गूं) शांतिः शांतिरेव शान्तिः सामाशान्तिरेधि।।

आरती के बाद भक्तिभाव से सिर झुकाकर शिव स्तुति करें और अपने दोनों हाथों में पुष्प लेकर भगवान शिव का ध्यान करते हुए मां पार्वती, गणपति, कार्तिके, ऋद्धि-सिद्धि, शुभ-लाभ को अपने घर-परिवार में पूर्ण रूप से स्थापना की प्रार्थना करते हुए पुष्प समर्पित करें–

प्रदक्षिणा–

यानि कानि च पापानि ज्ञाताज्ञातकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणं पदे पदे।।

पूरी रात्रि को यदि शिव मंत्र का जप करते हुए अभिषेक किया जाए तो अत्यन्त उत्तम रहता है और प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में पूर्ण गुरु आरती, शिव आरती सम्पन्न कर भगवान शिव पर चढाया हुआ जल और अन्य सामग्री किसी पीपल के वृक्ष में समर्पित कर दें शिवलिंग और अन्य सामग्री को अपने पूजा स्थान में स्थापित कर दें तथा नित्य प्रति अपनी कामनाओं की पूर्ति के लिए निम्न विशेष शिव मंत्र का जप करते रहें–

।। ॐ श्री नमः शिवाय ॐ श्रीं।।

इस मंत्र को कभी भी भगवान शिव का पूजन करते हुए अभिषेक करते हुए जप किया जा सकता है।

साधना सामग्री 600/-

महाकाल स्तुतिः

नमोऽस्त्वनन्तरूपाय नीलकण्ठ नमोऽस्तु ते।
अविज्ञातस्वरूपाय कैवल्यायामृताय च।।1।।
नान्तं देवा विजानन्ति यस्य तस्मै नमो नमः।
यं न वाचः प्रशंसन्ति नमस्तस्मै चिदात्मने।।2।।
योगिनो यं हृदःकोशे प्रणिधानेन निश्चलाः।
ज्योतीरूपं प्रपश्यन्ति तस्मै श्रीब्रह्मणे नमः।।3।।
कालात्पराय कालाय स्वेच्छया पुरुषया च।
गुणत्रयस्वरूपाय नमः प्रकृतिरूपिणे।।4।।
विष्णवे सत्त्वरूपाय रजोरूपाय वेधसे।
तमोरूपाय रुद्राय स्थितिसर्गान्तकारिणे।।5।।
नमो नमः स्वरूपाय पञ्चबुद्धीन्द्रियात्मने।
क्षित्यादिपञ्चरूपाय नमस्ते विषयात्मने।।6।।
नमो ब्रह्माण्डरूपाय तदन्तर्वर्तिने नमः।
अर्वाचीनपराचीनविश्वरूपाय ते नमः।।7।।
अचिन्त्यनित्यरूपाय सदसत्पतये नमः।
नमस्ते भक्तकृपया स्वेच्छाविष्कृतविग्रह।।8।।
तव निःश्वसितं वेदास्तव वेदोऽखिलं जगत्।
विश्वभूतानि ते पादः शिरो द्यौः समवर्तत।।9।।
तव निःश्वसितं वेदास्तव वेदोऽखिलं जगत्।
विश्वभूतानि ते पादः शिरो द्यौः समवर्तत।।9।।
नाभ्या आसीदन्तरिक्षं लोमानि च वनस्पतिः।
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यस्तव प्रभो।।10।।

त्वमेव सर्वं त्वयि देव सर्वं सर्वस्तुतिस्तव्य इह त्वमेव।
ईश त्वया वास्यमिदं हि सर्वं नमोऽस्तु भूयोऽपि नमो नमस्ते।।11।।

।। इति श्रीस्कन्दपुराणे ब्रह्मखण्डे महाकालस्तुतिः सम्पूर्णा।।

महाकाल स्तुतिः

हे नीलकण्ठ! आपके अनन्त रूप हैं, आपको बार-बार नमस्कार है। आपके स्वरूप का यथावत् ज्ञान किसी को नहीं है, आप कैवल्य एवं अमृत स्वरूप हैं, आपको नमस्कार है।।1।।

जिनका अन्त देवता नहीं जानते, उन भगवान् शिव को नमस्कार है, नमस्कार है। जिनकी प्रशंसा (गुणगान) करने में वाणी असमर्थ है, उन चिदात्मा शिव को नमस्कार है।।2।।

योगी समाधि में निश्चल होकर अपने हृदयकमल के कोष में जिनके ज्योतिर्मय स्वरूप का दर्शन करते हैं, उन श्रीब्रह्म को नमस्कार है।।3।।

जो काल से परे, कालस्वरूप, स्वेच्छा से पुरुष रूप धारण करने वाले, त्रिगुणस्वरूप तथा प्रकृतिरूप हैं, उन भगवान् शंकर को नमस्कार है।।4।।

हे जगत् की स्थिति, उत्पत्ति और संहार करने वाले, सत्त्वस्वरूप विष्णु, रजोरूप ब्रह्मा और तमोरूप रुद्र! आपको नमस्कार है।।5।।

बुद्धि, इन्द्रियरूप तथा पृथ्वी आदि पञ्चभूत और शब्द-स्पर्शादि पञ्च विषयस्वरूप! आपको बार-बार नमस्कार है।।6।।

जो ब्रह्माण्डस्वरूप हैं और ब्रह्माण्ड के अन्तः प्रविष्ट हैं तथा जो अर्वाचीन भी हैं और प्राचीन भी हैं एवं सर्वस्वरूप हैं, उन्हें नमस्कार है, नमस्कार है।।7।।

अचिन्त्य और नित्य स्वरूप वाले तथा सत्-असत् के स्वामिन्! आपको नमस्कार है। हे भक्तों के ऊपर कृपा करने के लिये स्वेच्छा से सगुण स्वरूप धारण करने वाले! आपको नमस्कार है।।8।।

हे प्रभो! वेद आपके निःश्वास हैं, सम्पूर्ण जगत् आपका स्वरूप है। विश्व के समस्त प्राणी आपके चरणरूप हैं, आकाश आपका सिर है।।9।।

हे नाथ! आपकी नाभि से अन्तरिक्ष की स्थिति है, आपके लोम वनस्पति हैं। भगवन्! आपके मन से चन्द्रमा और नेत्रों से सूर्य की उत्पत्ति हुई है।।10।।

हे देव! आप ही सब कुछहैं, आप में ही सबकी स्थिति है। इस लोक में सब प्रकार की स्तुतियों के द्वारा स्तवन करने योग्य आप ही हैं। हे ईश्वर! आपके द्वारा यह सम्पूर्ण विश्व प्रपञ्च व्याप्त है, आपको पुनः-पुनः नमस्कार हैं।।11।।

।। इस प्रकार श्रीस्कन्दमहापुराण के ब्रह्मखण्ड में महाकाल स्तुति सम्पूर्ण हुई।।

त्रिवेणी का महाश्मशान

गुरु शिष्य परम्परा का अनूठा आख्यान जब एक साधक ने अपने गर्भस्थ शिशु को मंत्र दिया

काली तारा तंत्र साधना का गूढ रहस्य

उड़ीसा के स्वाधीन हिन्दू राजा हरिचरण मुकुंद देव (1560– 1565 ई.) ने मुगल बादशाह अकबर से संधि कर 1565 में बंग देश पर आक्रमण किया तथा पठानों को पराजित कर अपने राज्य की सीमा सप्तग्राम तक विस्तृत कर ली। बंग विजय की स्मृति अक्षुण्ण रखने के लिए उसने स्मारक–स्वरूप त्रिवेणी में, गंगा के तट पर एक घाट का निर्माण करवाया। इस तरह का सोपान, विशिष्ट घाट काशी को छोड़कर बंग देश में कहीं भी दुर्लभ नहीं। त्रिवेणी का यह घाट **'मुकुंद देव घाट'** के नाम से प्रसिद्ध है।

त्रिवेणी के इसी मुकुंद देव घाट पर उस दिन शास्त्रार्थ हो रहा था। भोलानाथ कंठाभरण नामक एक पंडित ने त्रिवेणी आकर साधक जगन्नाथ को शास्त्रार्थ के लिए आह्वान किया, जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया। आसपास के बहुत से पंडित व विद्वान इस शास्त्रार्थ को देखने सुनने के लिए उपस्थित हुए थे।

दो दिन, रात्रि कुछ विश्राम का समय छोड़ लगातार शास्त्रार्थ होता रहा। दोनों पंड़ितों में से किसी ने भी हार स्वीकार नहीं की। दोनों में से किसी ने भी न आहार ग्रहण किया और न निद्रा देवी को पास फटकने दिया। मुकुंद देव घाट पर उपस्थित ब्राह्माणों व विद्वानों की भीड़ दोनों पंडितों के मध्य हो रहे शास्त्रार्थ से क्षण भर के लिए भी उदासीन नहीं हुई थी।

शास्त्रार्थ के मध्य ही एक समय कोलाहल हुआ। घाट पर उपस्थित लोगों में गुंजन हुआ। कानों-कान सभी को खबर मिल गई, कि बांसबेड़िया के राजा गोविन्द देव राय शास्त्रार्थ देखने आ रहे हैं। घाट पर उपस्थित लोगों ने रास्ता बना दिया। कुछ ही देर में बांसबेड़िया के राजा गोविन्द देवराय ने दोनों हाथ जोड़े ब्राह्मणों के मध्य में होते हुए, दोनों शास्त्रार्थ कर रहे पंड़ितों के पास पहुंच बारी-बारी झुक कर उन्हें प्रणाम किया, फिर उन्होंने दोनों हाथ जोड़े हुए चारों तरफ दृष्टि फेंक, घाट पर शास्त्रार्थ देखने आए विद्वानों, पंडितों व ब्राह्मणों को प्रणाम कर कहा - विद्वत् समाज मेरा प्रणाम स्वीकार करे, कहा गया है -

न माधव समो देवो, न च गंगा समः नदी
न तीर्थ त्रिवेणी सदृशं क्षेत्र भक्ति जयान्मये।

- ब्रह्म पुराण

(माधव सदृश देवता नहीं, गंगा सदृश दूसरी नदी नहीं एवं तीनों जगत में त्रिवेणी सदृश पूज्य क्षेत्र और कहीं नहीं।)

आज इसी त्रिवेणी के पवित्र घाट पर शास्त्रार्थ होने से इसकी महिमा और भी बढ़ गई है। त्रिवेणी सरस्वती के तट पर अवस्थित है, अतः हम गर्व से कहते हैं कि हम सब मां सरस्वती की गोद में बैठे हैं। सरस्वती को पार कर किसी पंडित को दिग्विजयी होने की आवश्यकता नहीं रहती।

मुकुन्द देवघाट पर बैठे ब्राह्माण समाज ने बांसबेड़िया के राजा गोविन्द देवराय की तरफ प्रशंसा से देखा। ब्राह्मणों को आत्म संतुष्ट पा राजा गोविन्द देवराय ने पुनः कहा - **'बंग देश में संस्कृत शिक्षा के लिए नवद्वीप, भाटपाड़ा, गुप्तपाड़ा और त्रिवेणी-ये चार स्थान विशेष प्रसिद्ध हैं। इसमें त्रिवेणी का अलग माहात्म्य है। प्राचीनकाल से ही यहां मकर संक्रान्ति, विंष्णु संक्रान्ति, दशहरा, वारुणी, अभ्युदय योग, सूर्य और चन्द्रग्रहण के उपलक्ष में भक्तजनों का समावेश होता रहा है।आज हो रहे इस शास्त्रार्थ से त्रिवेणी की महिमा में और भी वृद्धि होगी।'**

उपस्थित ब्राह्मण-समाज ने प्रसन्न होकर बांसबेड़िया के राजा गोविन्द देवराय की तरफ देख साधु! साधु! जयघोष किया। मैं देव द्विज भक्त बांसबेड़िया का राजा गोविन्द देवराय आज आपसे एक प्रार्थना करने आया हूं।

ब्राह्मण समाज ने उत्सुक हो राजा की तरफ देखा। इस पर राजा गोविन्द देवराय ने उपयुक्त समय देख हाथ जोड़े ही विनम्र स्वर में कहा -'पंडितगण! दोनों शास्त्रार्थ कर रहे विद्वान दो दिन व दो रात्रि से लगातार शास्त्रार्थ कर रहे हैं, आहार व निद्रा का विसर्जन दें? ब्राह्मण निराहार रहे तो राजा को पाप लगता है। अतः मैं विनती करता हूं कि पंडित वय स्नान कर आहार ग्रहण कर लें, फिर कुछ समय तक निद्रायापन कर पुनः शास्त्रार्थ आरम्भ करें।'

राजा गोविन्द देवराय की देव द्विज भक्त के रूप में ख्याति थी। ब्राह्मणों में वह लोकप्रिय था, फिर राजा का अनुरोध आदेश के समान होता है, फलस्वरूप कुछ समय के लिए शास्त्रार्थ रुक गया।

बांसबेड़िया के राजा की तरफ से आहार की व्यवस्था की गयी। दोनों शास्त्रार्थ कर

किसी ने भी जगन्नाथ की तरफ दृष्टि नहीं फेंकी। जगन्नाथ जानते थे - उगते सूरज को सभी नमस्कार करते हैं, डूबते सूरज को कोई नहीं पूछता। आज उनका मान-सम्मान सभी अस्तांचल हो चुका है। आज की पराजय ने उन्हें मर्मान्तक कष्ट दिया।

जगन्नाथ पंडित ने पुनः कहा - 'रामदास! शास्त्रार्थ में पराजित होने का कारण है कि मैं गणेश सिद्ध हूं और भोलानाथ कंठाभरण महाविद्या तारा मां सिद्ध। गणेश भी कहीं मां से जीत सकते हैं? अतः मुझे पराजय स्वीकार करनी पड़ी, इस पराजय की ग्लानि से मुक्त होने के लिए मुझे प्रतिशोध लेना होगा।!

रहे ब्राह्मणों ने स्नान कर आहार ग्रहण किया। बाकी ब्राह्मणों के भी आहार की व्यवस्था की गयी थी। उन्होंने स्नान कर आहार के सुयोग को नष्ठ नहीं किया। तय हुआ कि दूसरे दिन सूर्योदय के संग-संग पुनः शास्त्रार्थ आरम्भ कर दिया जायेगा।

दूसरे दिन सूर्योदय होने के संग-संग पुनः शास्त्रार्थ आरम्भ हुआ। दोनों पंड़ित अपनी विद्वता की झोली को खोल बैठे थे।

उपस्थित ब्राह्मण समाज दोनों की विद्वता पर मुग्ध था। सात दिन तक चलने वाले इस शास्त्रार्थ के अंतिम दिन पंडित जगन्नाथ ने अपनी पराजय स्वीकार कर ली।

भोलनाथ कंठाभरण के अनुयायियों ने उसकी जय-जयकार करनी शुरू कर दी। जगन्नाथ पंडित का मस्तक नीचे झुका हुआ था। ब्राह्मण समाज को सुना कर भोलानाथ कंठाभरण ने गर्व से कहा – राजा गोविन्द देवराय ने ठीक ही कहा है सरस्वती को पार कर किसी को दिग्विजयी होने की आवश्यकता नहीं रहती। अतः में त्रिवेणी से वर्द्धमान जा रहा हूं।

भोलानाथ कंठाभरण विजय माला पहन, ब्राह्मण समाज को हाथ जोड़ प्रणाम कर अपने अनुयायियों के साथ वापस लौट गया। एक-एक कर घाट पर उपस्थित सभी ब्राह्मण चले गए।

किसी ने भी जगन्नाथ की तरफ दृष्टि नहीं फेंकी। जगन्नाथ जानते थे – उगते सूरज को सभी नमस्कार करते हैं, डूबते सूरज को कोई नहीं पूछता। आज उनका मान-सम्मान सभी अस्तांचल हो चुका है। आज की पराजय ने उन्हें मर्मान्तक कष्ट दिया या।

संध्या को रात्रि की कलिमा ने डस लिया, जगन्नाथ उसी तरह त्रिवेणी के मुकुन्द देव घाट पर बैठे रहे। जगन्नाथ पंडित की पराज्य का सम्वाद तब तक चतुर्दिक प्रसारित हो गया। गृह लौटने में विलम्ब होते देख उनका भृत्य रामदास उन्हें खोजते-खोजते घाट पर पहुंचा तथा उन्हें वहां बैठे देख कहा –

''बाबा घर चलो। मां अधीर हो आपकी प्रतीक्षा कर रही है।''

जगन्नाथ पंडित ने अपने भृत्य के स्वर को पहचान विषन्नता से कहा-रामदास ! तुम आये तो हो... किन्तु मैं अब गृह वापस नहीं लौट सकता।'
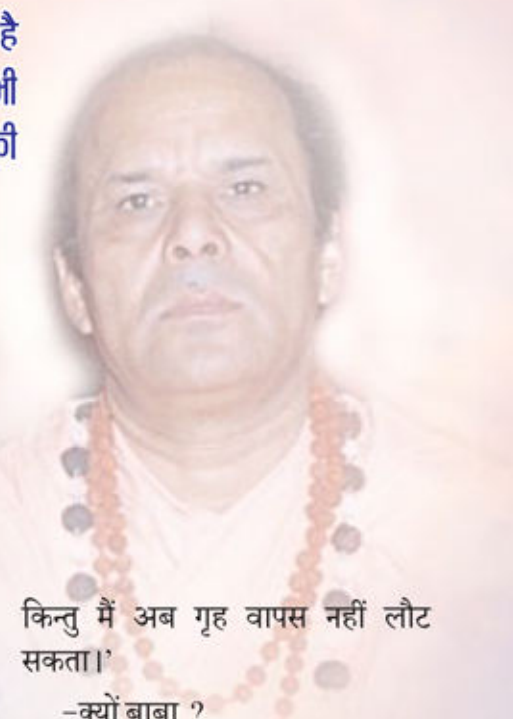
-क्यों बाबा ?

-'आज के शास्त्रार्थ में पराजित होने से मेरी सम्मान हानि हुई है। मैं जन-समाज को कैसे अपना मुंह दिखाऊंगा?'

-बाबा ! मां का क्या होगा ? आपके वापस नहीं लौटने पर वे तो सिर पटक कर प्राण दे देगी।

-'रामदास ! ब्राह्मणी को अभी भी जीवित रहना होगा। वह गर्भ से है।'

-तब तो आपको तुरन्त मेरे साथ घर चल देना चाहिए।

-'नहीं रामदास! मेरे पास तो सिर्फ एक ही वस्तु थी, वह था 'सम्मान'। उसे पाने के लिए मैंने सतत् अध्ययन किया, कठोर परिश्रम किया। उसे खोकर मैं जीवित रह ही कैसे सकता हूँ?'

-'बाबा ऐसा नहीं कहें ?'

-'रामदास, मेरे पास समय बहुत कम है, मैंने निश्चय कर लिया है कि अपना मुख जन-समाज को अब और नहीं दिखाऊंगा। अतः मैंने प्राण त्याग देने का निश्चय कर लिया है।

रामदास यह सुन क्रन्दन करने लगा। इस पर जगन्नाथ पंडित ने कहा-

'रामदास! यह रोने का समय नहीं है। मेरी बातें ध्यान से सूनो। मैं तुम्हें एक गुरुत्व पूर्ण कार्य सौंपना चाहता हूं।'

रामदास ने पंडित जगन्नाथ की तरफ देखा। इस पर जगन्नाथ ने कुछ निर्णय ले कहा – **'रामदास! मैं तुम्हें अपने पुत्र के समान स्नेह करता हूं। मुझे ज्ञात है, तुम भी मुझे पिता के समान भक्ति व प्रेम करते हो। कहो रामदास! क्या तुम इस कार्य का भार लोगे?**

रामदास ने जगन्नाथ पंडित का चरण स्पर्श कर अपना समर्थन दिया। इस पर संतुष्ट हो जगन्नाथ पंडित ने रामदास को गंगा-स्नान कर आने को कहा।

रामदास के गंगा-स्नान कर आने पर जगन्नाथ पंडित ने उसे महामंत्र प्रदान कर गंभीर स्वर में कहा –

'रामदास! आज से मैं तुम्हारा गुरु हुआ और तुम मेरे शिष्य। इस महामंत्र को तुम अच्छी तरह से कंठस्थ कर लेना।'

रामदास ने सिर हिलाकर सहमति व्यक्त की। इस पर जगन्नाथ पंडित ने पुनः कहा – 'रामदास! शास्त्रार्थ में पराजित होने का कारण है कि मैं गणेश सिद्ध हूं और भोलानाथ कंठाभरण महाविद्या तारा मां सिद्ध। गणेश भी कहीं मां से जीत सकते हैं? अतः मुझे पराजय स्वीकार करनी पड़ी, इस पराजय की ग्लानि से मुक्त होने के लिए मुझे प्रतिशोध लेना होगा।!

जगन्नाथ पंडित के चुप हो जाने पर रामदास ने प्रश्नात्मक दृष्टि से उनकी तरफ देखा। इस पर जगन्नाथ पंडित ने रामदास के कंधे पर हाथ रख स्नेह भरे स्वर में कहा –'रामदास, ब्राह्मणी के गर्भ से एक पुत्र उत्पन्न होगा। तुम्हें उस पुत्र की देखभाल करनी होगी। उसका उपनयन संस्कार कर जो महामंत्र मैंने तुम्हें प्रदान किया है, उसे मेरे पुत्र को प्रदान करना। त्रिवेणी के इस महाश्मशान में इस महामंत्र के बदौलत साधक बनकर मेरे पुत्र को महाविद्या काली सिद्ध करने के लिए शव-साधना कराना। मेरी आत्मा हमेशा तुम लोगों के संग रहेगी।'

जगन्नाथ पंडित ने दूर क्षितिज की ओर दृष्टि निक्षेप की, उनके नेत्र चमक रहे थे, आह्लादित हो उन्होंने फिर कहा **–'रामदास! भगवती से आशीर्वाद पा, भोलानाथ कंठाभरण को त्रिवेणी के इसी मुकन्द देव घाट पर मेरे पुत्र की तरफ से शास्त्रार्थ के लिए आह्वान करना। जिस दिन मेरा पुत्र भोलानाथ कंठाभरण को परास्त करेगा, उसी दिन मैं पराजय की कालिमा से मुक्त हो जाऊंगा। उसी दिन मेरी आत्मा शांति प्राप्त कर परमात्मा में विलीन हो पाएगी।'**

इसके बाद जगन्नाथ पंडित ने रामदास के कान में कुछ और मंत्र प्रदान कर उसे गृह वापस लौट जाने का निर्देश दिया अर्द्धरात्रि को जगन्नाथ पंडित के आदेश पर ब्राह्मणी उनसे मिलने मुकुन्द देव घाट पर आयी, तथा उनसे आशीर्वाद ले वापस लौट गयी।

दूसरे ही दिन सुबह जगन्नाथ पंडित ने शरीर का त्याग कर दिया।

प. बंगाल के हुगली जिले के अन्तर्गत कलकत्ता से 45 मील दूर त्रिवेणी अतीत से ही एक श्रेष्ठ तीर्थ क्षेत्र के रूप मे ख्याति प्राप्त करता आ रहा है – गंगा, यमुना और सरस्वती इन तीन नदियों के मिलन-स्थल को त्रिवेणी कहा जाता है। प्रयाग (इलाहाबाद) में गंगा-यमुना और सरस्वती का मिलन हुआ है, अतः उक्त स्थान को त्रिवेणी कहते हैं, जो कि **'युक्तवेणी' है, प. बंगाल के हुगली जिला के अन्तर्गत त्रिवेणी को ही 'मुक्तवेणी' कहा जाता है, क्योंकि यहां ये तीनों नदियां मुक्त होकर विभिन्न दिशाओं में चली गई हैं।**

(शेष अगले अंक में)
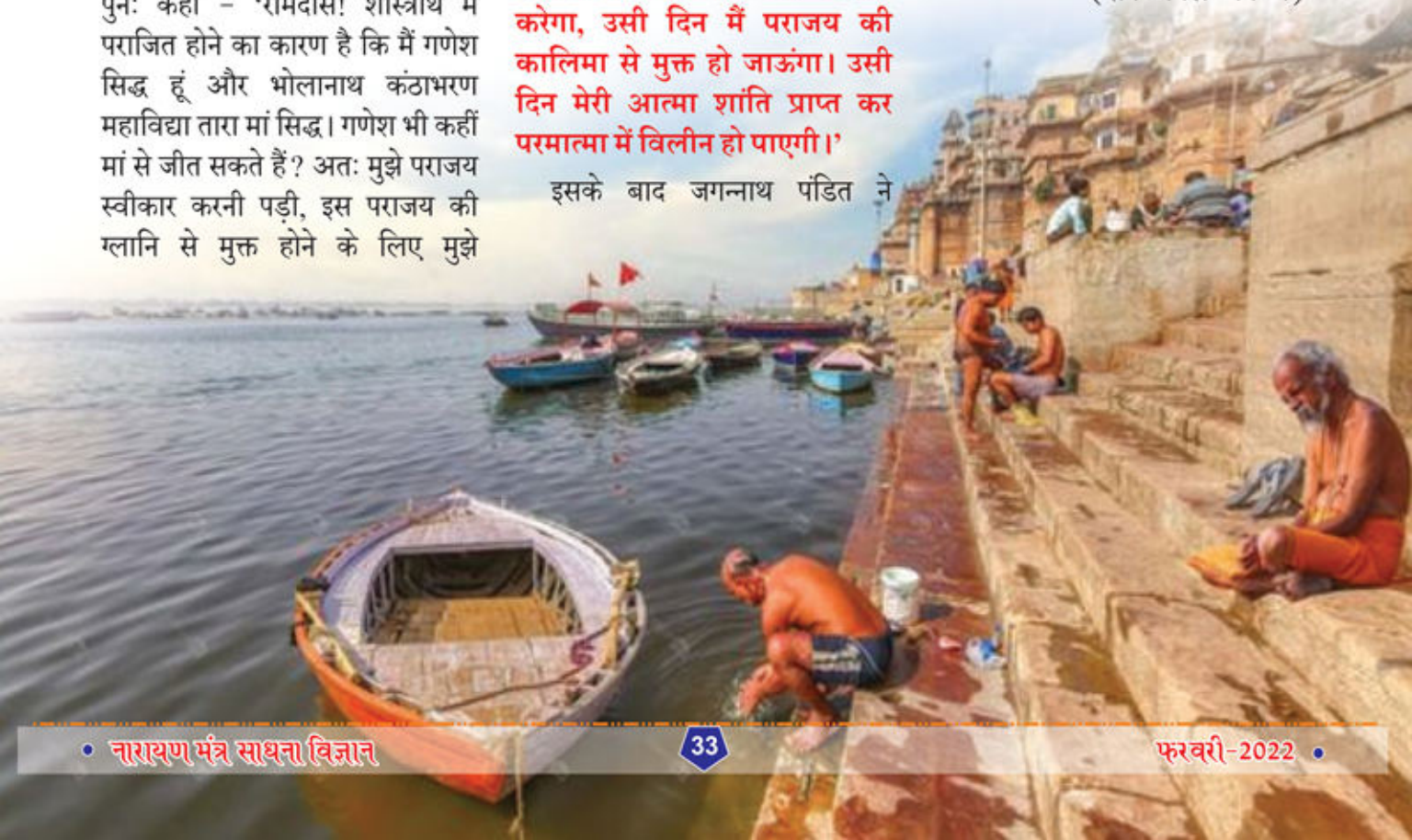
शिष्य के जीवन में गुरु ही सर्वस्व होता है। इसलिए देवी-देवताओं की साधना करने के साथ गुरु साधना को ही जीवन में प्राथमिकता देनी चाहिए।

शिष्य धर्म

त्वं विचितं भवतां वदैव देवाभवावोतु भवतं सदैव।
ज्ञानार्थ मूल मपरं विहंसि शिष्यत्व एवं भवतां भगवद् नमामि।।

- गुरु चरणों के अतिरिक्त शिष्य के लिए कोई तीर्थ नहीं होता, उसी भाव से वह गुरु चरणोदक को पान करता है। गुरु और गुरु कार्य को त्यागने वाले को कहीं शरण नहीं मिलती। इसलिए अपनी सामर्थ्य अनुसार गुरु कार्य में भी मनोभाव से सहयोगी बनें रहें।
- शिष्यता का मतलब और एक मात्र अर्थ होता है तलवार की धार पर चलना।
- यथा संभव व्यर्थ की चर्चाओं में न पड़ कर गुरुदेव का ही ध्यान मनन करें। दूसरे की आलोचना अथवा निंदा करने से शिष्य का जो बहुमूल्य समय अपने कल्याण में लगाना चाहिए, वह व्यर्थ हो जाता है, उसका प्रभाव उसके द्वारा की गई साधनाओं पर भी पड़ता है।
- शिष्य को नित्य एक नियमित समय पर नियमित संख्या में गुरु मंत्र का साधना रूप में जप अवश्य करना चाहिए, यदि वह ऐसा करता है तो उसके जन्म, जन्मांतरीय दोषों और पापों का क्षय होता है तथा चित्र निर्मल हो जाता है, जिससे ज्ञान और सिद्धि की भी प्राप्ति हो पाती है। शिष्य को यथासंभव अधिक से अधिक जब भी समय मिले, गुरु मंत्र का जप करते ही रहना चाहिए।
- शिष्य के जीवन में चरित्र ही सफलता और असफलता का द्योतक है। चरित्र सफल है तो जीवन सफलता की ओर बढ़ेगा, किंतु चरित्र अगर असफलता की ओर अग्रसर है तो जीवन अवश्य पतन की ओर उन्मुख होगा।
- शिष्य का महत्व इसमें नहीं कि वह कितने वर्ष जीवित रहता है। अपितु महत्व तो इसका है कि वह किस प्रकार से जीवित रहे।
- यदि तुम्हारी साधना करने की तीव्र उत्कण्ठा है तो भगवान उसके पास सद्गुरु भेज देते हैं। सद्गुरु के लिए साधकों को चिंता करने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

जो शिष्य अपने अहम, छल, कपट आदि को छोड़कर भौतिक श्रेष्ठताओं को भुलाकर गुरुचरणों में झुक जाता है वही सफल होता है।

गुरु वाणी

- जो मैं तुम्हें ज्ञान, चेतना दे रहा हूँ वह कोई पन्नों पर या पुस्तकों में संजो के रखने की चीज नहीं। मैं तुम्हें वह चेतना दे रहा हूँ जिससे तुम्हारे दिव्य चक्षु जागृत हो सकें तथा तुम उन समस्त शक्तियों को अनुभव कर सको जिनको हमने देवी-देवता कहा है।
- और यह तभी संभव है जब तुम निरंतर गुरु के सम्पर्क में रहो। तभी वह चेतना का प्रवाह बराबर गतिशील रह सकता है और गुरु सम्पर्क में रहना एक बहुत महत्वपूर्ण क्रिया है क्योंकि जब एक सूखी खेजड़ी की लकड़ी भी एक चंदन के सम्पर्क में आ जाती है तो वह साधारण लकड़ी भी अपने आप में सुगंधमय हो जाती है।
- गुरु चेतना का पुंज है, एक चेतना का स्रोत है, एक चेतना का सागर है। जब आप उसके निरंतर सम्पर्क में रहते है तो धीरे-धीरे वही चेतना आपमें भी व्याप्त होने लग जाती है। उससे जुड़कर आपका भी जीवन सुगंधित तरंगित और दिव्य हो जाता है।
- गुरु से जुड़ने का अर्थ कोई गुरु को पकड़ना नहीं। जुड़ने का अर्थ है उसके हृदय से अपने हृदय के तारों को जोड़ देना, अपनी आत्मा को लीन कर देना, अपने मस्तिष्क और विचारों को पूर्णत: उस पर केन्द्रित कर देना। ऐसा कर देना कि फिर आपमें और गुरु में कोई दूरी ही न रहे, कोई भेद ही न रहें।
- गुरु के प्राणों से जुड़ने की आवश्यकता है क्योंकि गुरु का शरीर नहीं उनके प्राण ही उस चेतना के स्रोत है। जब यह जुड़ाव होता है तो फिर स्वयं आँखों से प्रेमाश्रु छलक पड़ते हैं। फिर स्वयं गुरु का नाम स्मरण करने लगते हैं, फिर स्वयं हृदय की धड़कन में गुरु का नाम उच्चारण होता प्रतीत होता है।

कलियुग में सर्वाधिक प्रभावशाली तन्त्र

महामृत्युंजय विधान

महामृत्युंजय विधान शिव का क्रान्तिकारी, आश्चर्यजनक, अमोघ और अद्वितीय मन्त्र प्रयोग है, जिसके माध्यम से बीमारियों, शिशु रोगों तथा बालघात जैसे रोगों से निराकरण पाने व पूर्ण आयु प्राप्त करने के लिए श्रेष्ठतम अनुष्ठान है।

भारत में ही नहीं विदेशों में भी महामृत्युंजय की चर्चा रही है, प्रत्येक बालक रोगी या अकाल मृत्यु से भयभीत व्यक्ति को इस प्रकार का मन्त्रसिद्ध प्राणप्रतिष्ठा युक्त महामृत्युंजय यन्त्र धारण कर लेना चाहिए।

साधाकों के लाभार्थ यह गोपनीय विधान आगे के पन्नों पर प्रस्तुत है-

महामृत्युंजय विधान या अनुष्ठान अत्यन्त ही महत्वपूर्ण और श्रेष्ठतम कहा गया है, जिसके जीवन में अकाल मृत्यु या बालघात योग हो, उसके लिए महामृत्युंजय प्रयोग सर्वश्रेष्ठ है।

महामृत्युंजय मन्त्र अपने आप में अत्यन्त ही श्रेष्ठ और प्रभावयुक्त है, उच्च स्तर के साधकों ने भी इस बात को स्वीकार किया है, कि यह मन्त्र अपने आप में महत्वपूर्ण और काल पर विजय प्राप्त करने में सक्षम है।

नीचे मैं इस अनुष्ठान से सम्बन्धित विधि प्रस्तुत कर रहा हूं, जिससे कि पाठक इससे लाभ उठा सकें। अनुष्ठान में कुछ तथ्यों का ध्यान आवश्यक है, अनुष्ठान एक ऐसी साधना प्रक्रिया है, जो कठिन कार्यों को सरल बनाने के साथ-साथ विशेष शक्ति का उपार्जन करती है।

अनुष्ठान तीन प्रकार के होते हैं–लघु अनुष्ठान, चौबीस हजार मन्त्र जप का होता है और इसके बाद 240 आहुतियों का पुरश्चरण किया जाता है, मध्यम अनुष्ठान सवा लाख मन्त्र जप का होता है, जिसमें 1250 आहुतियां दी जाती हैं तथा महापुरश्चरण या महाअनुष्ठान चौबीस लाख मन्त्र का होता है और इसके दसवें हिस्से की आहुतियां दी जाती हैं।

लघु अनुष्ठान को नौ दिन 27 माला प्रतिदिन के हिसाब से, मध्यम अनुष्ठान 40 दिन में 33 माला प्रतिदिन के हिसाब से तथा महाअनुष्ठान एक वर्ष में 66 माला प्रतिदिन के हिसाब से जप करके सम्पन्न किया जाता है।

साधना काल में निम्न तथ्यों का ध्यान रखना चाहिए–

1. अनुष्ठान शुभ दिन और शुभ मुहूर्त देखकर प्रारम्भ करना चाहिए।
2. अनुष्ठान को प्रारम्भ करते समय सामने भगवान शिव का चित्र स्थापित करना चाहिए और साथ ही साथ शक्ति की भी स्थापना करनी चाहिए।
3. जहां जप करें, वहां का वातावरण सात्विक हो तथा नित्य पूर्व दिशा की ओर मुंह करके साधना या मन्त्र जप करना चाहिए।
4. जप करते समय लगातार घी का दीपक जलते रहना चाहिए।
5. इसमें रुद्राक्ष की माला का प्रयोग करना चाहिए तथा ऊन का आसन बिछाना चाहिए।
6. शास्त्रों के अनुसार भय से छुटकारा पाने के लिए इस मन्त्र का 1100 जप, रोगों से छुटकारा पाने के लिए 11000 मन्त्र जप तथा पुत्र प्राप्ति उन्नति एवं अकाल मृत्यु से छुटकारा पाने के लिए एक लाख मन्त्र जप का विधान है।

धर्म शास्त्रों में मन्त्र शक्ति और अनुष्ठान से रोग निवारण तथा मृत्यु भय को दूर करने, अकाल मृत्यु पर विजय प्राप्त करने तथा रोगों को शमन करने की जितनी साधनाएं उपलब्ध हैं, उनमें महामृत्युंजय साधना का स्थान सर्वोच्च है, हजारों-लाखों साधकों ने इस साधना से फल प्राप्त किया है, कोई भी साधक पूर्ण श्रद्धा और विश्वास से इस साधना को करे तो निश्चय ही वह सफलता प्राप्त करता है।

इस साधना में मूल मन्त्र का जप करना ही महत्वपूर्ण है, अन्य विधि-विधानों में जाने की जरूरत नहीं होती है।

प्रयोग विधि

किसी भी सोमवार को प्रात: स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर सामने 'त्र्यम्बक पूजा यन्त्र' स्थापित कर दें,पास में ही भगवान शिव का चित्र या मूर्ति स्थापित कर दें, दोनों की संक्षिप्त पूजा करें, तत्पश्चात् विनियोग करें–

विनियोग : हाथ में जल लेकर इस प्रकार बोलें–

ॐ अस्य श्री महामृत्युंजय मन्त्रस्य वामदेव कहोल वशिष्ठ ऋषय: पंक्तिगायत्र्युष्णगनुष्टुप्-छन्दांसि सदाशिवमहामृत्युंजय जयरुद्रो देवता ह्रीं शक्ति: श्रीं बीज महामृत्युंजयंजयप्रीतये ममाभीष्टसिद्धयर्थे जपे विनियोग:।

ध्यान–फिर दोनों हाथ जोड़ कर भगवान् शंकर का ध्यान करें-

हस्ताभ्यां कलशद्वयैमृतसैराप्लाववन्तं शिरो,
द्वाभ्यां तौ दधतं मृगाक्षवलये द्वाभ्यां वहन्तं परम्।
अंकन्यस्तकरद्वयामृतघटै कैलाशकान्तं शिवं,
स्वैच्छाभ्यौगतं नरेन्दुमुकुटं देवं त्रिनेत्रं भजे।।

मन्त्र जप–ध्यान के बाद महामृत्युंजय मन्त्र का जप करना चाहिए, मन्त्र का स्वरूप इस प्रकार है–

ॐ ह्रौं जूं स:, ॐ भूर्भुव: स्व: त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं
पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। स्व:
भुव: भू: ॐ। स: जूं ह्रौं ॐ।।

इस प्रकार निश्चित परिणाम के अनुसार मन्त्र जप करने पर साधक को अवश्य ही सफलता एवं सिद्धि प्राप्त होती है, कलियुग में यह विशेष प्रभावयुक्त मन्त्र है, जिसका उपयोग प्रत्येक साधक को करना चाहिए।

साधना सामग्री- 550/-

भगवान सदाशिव की आराधना के विशिष्ट प्रयोग

|| नो शक्यभुग्रतपसापि युगान्तरेण, प्राप्तुं यदन्यसुरपुंगवतस्तदेव
भक्त्या सकृत्प्रणमनेन सदा ददाति, यो नौमि नम्रशिरसा च तमाशुतोषम् ||

हे शम्भो! जन्म-जन्मान्तर पर्यन्त तपस्या व साधना करने पर भी जो फल प्राप्ति अन्य सुरपांगवों से नहीं हो सकती है, उससे भी कहीं ज्यादा फल प्राप्ति आपका नाम स्मरण कर प्रणाम मात्र करने से प्राप्त हो जाती है। मैं आपके सामने नम्र भाव से नमन करता हुआ, आपकी भक्ति की कामना करता हूं, आप मुझ पर प्रसन्न हों, क्योंकि एकमात्र आप ही 'आशुतोष' हैं।

भगवान शिव की साधना गृहस्थ साधकों के लिए अत्यन्त उपयोगी है, क्योंकि भगवान शिव समस्त बाधाओं का निराकरण करने में समर्थ हैं।

पूर्णतः निर्लिप्त और निराकार होते हुए भी भगवान शिव पूर्ण गृहस्थ हैं, इसी कारण एक ओर जहां वे योगियों के इष्ट हैं, वहीं दूसरी ओर गृहस्थों के भी आराध्य देव हैं।

भगवान शिव की आराधना प्रत्येक वर्ग करता है - 'गृहस्थ' इस कामना के साथ, कि उसे पूर्ण रूप से गृहस्थ सुख प्राप्त हो सके, 'स्त्रियां' अखण्ड सौभाग्य की प्राप्ति के लिए, 'कुमारियां' श्रेष्ठ पति की प्राप्ति के लिए, वहीं दूसरी ओर 'योगी' शिवत्व प्राप्ति के लिए उनके ब्रह्मस्वरूप की आराधना करते हैं।

भगवान शिव सिर्फ एक रूप में ही नहीं, अपितु विभिन्न रूपों में साधक की मनोकामनाओं की पूर्ति करते हैं। वे एक ओर कुबेराधिपति हैं, वहीं महामृत्युंजय स्वरूप में विभिन्न रोगों के हर्ता हैं, औढरदानी बन कर रंग को राजा बनाने की सामर्थ्य रखते हैं, दूसरी ओर स्वयं श्मशान में रहते हुए, भस्म लपेटे हुए उसी प्रकार से आनन्दित रहते हैं, जिस प्रकार वे कैलाश पर्वत पर भगवती पार्वती के साथ रहते हैं। इन्हीं भगवान शिव की आराधना कर योगी परमानन्द की प्राप्ति करते हैं।

भगवान शिव की अपेक्षा कौन देवता हो सकता है जो क्षण मात्र में उसकी कामना पूर्ण कर सकता है अथवा उसकी समस्याओं का निराकरण कर सकता हो। आवश्यकता इस बात की हौ कि साधक को अपनी बात कहने का ढंग मालूम हो, क्योंकि हम सामान्य चेतना से किसी देवी अथवा देवता की चेतना को स्पर्श नहीं कर सकते हैं, इसी कारणवश तो साधना पद्धतियों का जन्म व विकास हुआ। प्रत्येक साधना पद्धति याचना के परिष्कृत एवं सुव्यवस्थित क्रम के अतिरिक्त और कुछ नहीं होती।

शिव जो जगत-स्रष्टा है, जो ब्रह्मा के रूप में उत्पत्तिकर्त्ता, विष्णु के रूप में पालनकर्ता तथा स्व्यं शिव के रूप में संहारकर्ता हैं। वही शिव, सुख- सम्पत्ति, ऋषि-सिद्धि, बल-वैभव, स्वास्थ्य-निरोगता, लौकिक-पार - लौकिक शुभ फलों के उदारदाता हैं। उनसे यह सब अत्यन्त सहज रूप में भी प्राप्त हो सकता है।

आज के युग में जहाँ जन-सामान्य शिवरात्रि पर्व को शिव का उपवास, पूजा, आराधना कर मनाते हैं, वहीं बड़े-बड़े योगी, ऋषि-मुनि और देवता इस पर्व पर विशेष साधनाएं सम्पन्न कर, शिव को प्रसन्न कर अपने जीवन में भोग और मोक्ष दोनों को प्राप्त कर लेते हैं।

शिव, जिन्होंने रावण को अटूट बल दिया, मार्कण्डेय को अपनाकर यमराज से मुक्ति दिलायी। केवल मात्र शिव ही ऐसे देवता हैं, जो दीन-दुखियों, अनाथ, दरिद्रियों, संकटग्रस्त प्राणियों की रक्षा करने में सर्वसमर्थ हैं। इस प्रकार वेदों शास्त्रों व ग्रन्थों के आधार पर महाशिवरात्रि अपने-आप में ही पुण्यदायक साधना पर्व है।

इस बार फाल्गुन माह 17.02.22 से 18.03.22 तक है। इस समय में विविध शिव साधनाओं को सम्पन्न कर व्यक्ति आर्थिक दृष्टि से तो पूर्णता प्राप्त कर ही सकता है, अपितु मृत्यु पर भी विजय प्राप्त कर सकता है।

प्रस्तुत लघु प्रयोगों में वस्तुतः भगवान शिव के ही सम्पूर्ण वरदायक स्वरूप का समाहितीकरण किया गया है। साधक अपनी रुचि व क्षमता के अनुसार एक या एक से अधिक प्रयोग करने के लिए स्वतंत्र हैं। निम्न प्रयोगों को सम्पन्न करना साधक के लिए निश्चित रूप से भाग्योदयकारी सिद्ध होगा ही।

1. सम्पूर्ण पारिवारिक सुख सौभाग्य हेतु-

सामान्यतः व्यक्ति के जीवन का आधार उसका परिवार ही होता है तथा स्वयं भगवान शिव का स्वरूप किसी सद्गृहस्थ सदृश्य ही तो है। परिवार के सभी सदस्य निरोगी रहें, परस्पर विचारों की टकराहट न हो, जीवन -यापन हेतु आवश्यकता से अधिक धन हो, ऐसी अनेक स्थितियों की प्राप्ति के लिए आवश्यक है, कि साधक **'शिव ऐश्वर्य लक्ष्मी यंत्र'** स्थापित कर निम्न मंत्र का 101 बार जप करें, यदि सम्पूर्ण परिवार के सदस्य एक साथ बैठकर मंत्र जप करें तो विशेष फलप्रद माना गया है-

मंत्र

।। ॐ साम्ब सदाशिवाय नमः।।

मंत्र जप के उपरांत दूसरे दिन यंत्र को किसी शिवालय में दक्षिणा के साथ विसर्जित कर दें।

न्यौछावर- 250/-

2. आय के साधनों में वृद्धि हेतु

परिवार अथवा स्वयं किसी भी व्यक्ति के व्यक्तिगत जीवन का आधार **'अर्थ'** ही होता है इस तथ्य को आज के भौतिक युग में नकारा नहीं जा सकता। केवल धन का एक बंधा-बंधाया स्रोत ही नहीं, व्यक्ति के पास धनप्राप्ति के अन्य मार्ग भी हों, उसे जीवन में निरंतर आकस्मिक धन की प्राप्ति भी होती रहे। इसके लिए यह लघु प्रयोग सम्पन्न करना उचित है। साधक **'विश्वेश्वर गुटिका'** को प्राप्त कर उसका पूजन चंदन व अक्षत से कर निम्न मंत्र का 101 बार मंत्र जप करें, दूसरे दिन उसे विसर्जित करें तो उसे विभिन्न रूपों में आकस्मिक धन की प्राप्ति होती ही रहती है -

मंत्र

।। शं ह्रीं शं।।

न्यौछावर-150/-

3. नव यौवन-

जीवन के समस्त सुखों का उपयोग तभी संभव है जब साधक न केवल तन से अपितु मन से भी यौवनवान हो तथा प्रवाह युक्त बनकर जीवनपर्यन्त सरस बना रह सके। इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु साधक को चाहिए कि वह एक 'कायाकल्प गुटिका' प्राप्त कर उसका सामान्य पूजन कर, निम्न मंत्र का 51 बार मंत्र जप सम्पन्न कर उसे लाल धागे में धारण कर लें-

मंत्र

।। ॐ कं शम्भवाय ॐ।।

न्यौछावर-300/-

4. चिंतामुक्त जीवन की प्राप्ति हेतु-

वस्तुतः नवयौवन का प्रादुर्भाव जीवन में तभी हो पाता है, जब व्यक्ति विविध चिंताओं से ग्रस्त होता हुआ वृद्धत्व की ओर अग्रसर न हो रहा हो, इसके समाधान हेतु आवश्यक है, कि साधक महाशिवरात्रि के अवसर पर 'सदाशिव' को स्थापित कर निम्न मंत्र का 75 बार जप कर अगले दिन उसको विसर्जित कर दे-

मंत्र

।। ॐ सदाशिव भव ॐ फट।।

न्यौछावर 150/-

5. शारीरिक पीड़ा के समाधान हेतु-

जिस प्रकार चिंता जीवन का अभिशाप है, उसी प्रकार नित्य शरीर में कहीं न कहीं बनी रहने वाली कोई पीड़ा भी अभिशाप देती है जिससे जीवन की गति ही स्तम्भित हो जाती है। इसके समाधान हेतु साधक एक 'मधुरूपेण रुद्राक्ष' प्राप्त कर निम्न मंत्र का 51 बार मंत्र जप कर सम्पन्न कर अगले बीस दिनों तक रुद्राक्ष गले में धारण किए रहने के पश्चात् नदी में विसर्जित कर दें-

मंत्र

।। ॐ पशुपतये नमः।।

न्यौछावर 150/-

6. मानसिक तनावों की समाप्ति हेतु

प्रायः सामाजिक वातावरण के कारण अनायास ही मनुष्य किन्हीं ऐसे तनावों से ग्रस्त रहने लग जाता है, जिसका कारण उसे ज्ञात ही नहीं होता। ये चिंताओं से पृथक स्थितियां होती हैं जिसके समाधान हेतु आवश्यक हो जाता है कि साधक एक 'शाम्भवी गुटिका' प्राप्त कर उसके समक्ष महाशिवरात्रि से लेकर अगले पांच दिनों तक निम्न मंत्र का नित्य 51 बार उच्चारण करे, साधना समाप्ति पर गुटिका को जल में विसर्जित कर दें-

मंत्र

।। ॐ शान्ताय प्रशान्ताय नमः।।

न्यौछावर 150/-

7. शत्रुओं को निस्तेज करने हेतु

जीवन को पूर्णरूप से सकारात्मक बनाने के लिए आवश्यक है कि जीवन के नकारात्मक पक्षों पर प्रहार कर उन्हें जड़ मूल से समाप्त कर निश्चित हो जायें। शत्रु जीवन के ऐसे ही नकारात्मक पक्ष होते हैं, भले ही वे किसी भी रूप में क्यों न हों, इन्हें समाप्त करने के लिए आवश्यक है कि साधक महाशिवरात्रि की चैतन्य रात्रि में अपने समक्ष 'त्र्यक्ष गुटिका' रखें और फिर-

मंत्र

।। ॐ भ्रं शिव स्वरूपायय फट्।।

उपरोक्त मंत्र 101 बार जप नित्य 3 दिनों तक करें, तीन दिन बाद में गुटिका को नदी में विसर्जित कर दें।

न्यौछावर-150/-

8. व्यापार में आ रही अवनति की समाप्ति हेतु–

प्रायः व्यक्ति किसी श्रेष्ठ कुल में जन्म लेने के पश्चात् भी जब अपने यौवन काल में नौकरी या व्यापार को संभालने की स्थिति में आता है, तब तक वह विविध कारणों से जिसमें पितृ दोष आदि सम्मिलित होते हैं, वह पूर्व की स्थिति को खो बैठता है तथा आर्थिक व सामाजिक रूप से अवनति की ओर अग्रसर होने लग जाता है। यह मन को मथ कर रख देने वाली स्थिति होती है। इसकी समाप्ति के लिए साधना का अवलम्बन लेना ही चाहिए। ऐसे में चाहिए कि वह 'सर्व बाधा दोष निवारण यंत्र' को प्रातः स्थापित कर निम्न मंत्र का 51 बार उच्चारण करे–

मंत्र : ।। ॐ क्लीं ह्रीं क्लीं ॐ।।

आगे पांच दिनों तक नित्य जप करते रहने के बाद सामग्री को कहीं निर्जन स्थान में गाड़ दें।

न्यौछावर 250/–

9. सम्मोहन वशीकरण के क्षेत्र में सफलता हेतु–

जीवन में जहां व्यक्ति को सामाजिक क्षेत्र में केवल गतिशील ही नहीं तीव्रता से अग्रसर हो अपना विशिष्ट स्थान बनाने का आग्रह हो, वहां उसे निश्चय ही सम्मोहन वशीकरण के प्रभावों से युक्त होना ही चाहिए, जिससे वह अपने प्रतिरोधी को सहज ही अनुकूल बनाने की कला जान सके। इस हेतु 'कपिला' को किसी भूरे वस्त्र पर रख, निम्न मंत्र का 75 बार जप करना, उसे सक्षम बनाने में पर्याप्त माना गया है –

मंत्र

।। ॐ वं पंचवक्त्राय नमः।।

न्यौछावर–150/–

10.असाध्य रोग की समाप्ति हेतु

यहां यद्यपि चिकित्सा विज्ञान की आलोचना का प्रयास नहीं किन्तु ऐसी अनेक स्थितियां होती हैं, जहां चिकित्सा विज्ञान भी स्तम्भित होकर रह जाता है और तब ईश्वराधना के अतिरिक्त कोई अन्य मार्ग नहीं सूझता। ऐसी ही स्थितियों में यदि रोगी द्वारा संभव हो, तो स्वयं रोगी द्वारा अथवा उसके नाम का संकल्प ले कर किसी अन्य व्यक्ति के द्वारा भगवान शिव की वैद्यनाथ स्वरूप में अभ्यर्थना करना उचित माना यगा है। साधक 'वैद्यनाथ गुटिका' को प्राप्त कर निम्न मंत्र का 51 बार उच्चारण करते हुए रोगी के सिर पर से घुमाकर दक्षिण दिशा में घर से दूर फेंक दें, तो रोगी को उसी से राहत मिलने लग जाती है–

मंत्र

।। ॐ ह्रौं सदाशिवाय रोगमुक्ताय ह्रौं फट्।।

न्यौछावर 150/–

11. तांत्रिक प्रयोग, मूठ आदि की समाप्ति हेतु–

जीवन में केवल रोग, पीड़ा की बराबर उपस्थिति ही नहीं, अनेक–अनेक समस्याओं का एक कारण किसी प्रतिस्पर्द्धी अथवा ईर्ष्यालु पड़ोसी द्वारा अथवा रिश्तेदार द्वारा किसी तांत्रिक के माध्यम से सम्पन्न कर दिया तंत्र प्रयोग, मूठ प्रयोग भी होता है, जिसके निराकरण का प्रयोग सम्पन्न करना जीवन की प्रथम आवश्यकता होती है। किसी पात्र में 'शिवगौरी यंत्र' रख कर उस पर पन्द्रह मिनट तक निम्न मंत्र जप के साथ दुग्ध धार चढ़ा कर कुछ दुग्ध को तो परिवार के सभी सदस्य पान कर लें और शेष दुग्ध को घर भर में छिड़क दें–

मंत्र

।। ॐ सकल दोष निवारणाय भवानीपतये नमः।।

यह प्रयोग पांच दिन तक करें, प्रयोग समाप्ति के बाद यंत्र को नदी में या शिव मन्दिर में अर्पण कर दे।

न्यौछावर 240/–

12. जीवन में बार–बार असफलता की समाप्ति हेतु

केवल व्यापार ही नहीं, जीवन को सुचारू रूप से चलाने की तो अनेक स्थितियां होती हैं जहां व्यक्ति न केवल धन वरन् पद सम्मान का भी इच्छुक रहता है, किन्तु ऐसा उसके प्रयासों से संभव नहीं हो पाता। इंटरव्यू में असफलताएं, विद्यार्जन की बाधाएं, परीक्षा में असफलताएं, किसी विशेष सम्पर्क को

बनाने में बाधा, किसी विशेष व्यापार का कार्य को शुरू करने में असफल रहना, कला संगीत के क्षेत्र में मनोवांछित लक्ष्य को न छू पाना, जैसी कुछ स्थितियां तो इसके अत्यन्त सीमित उदाहरण हैं।

इन असफलताओं को ही असफल कर देने के लिए किसी पात्र में चावल के ढेर पर 'शर्व गुटिका' को स्थापित कर उसके समक्ष निम्न मंत्र का 33 बार जप 11 दिन तक करना फलप्रद कहा गया है।

मंत्र : ।। ॐ ऐं अच्युतेश्वराय नमः।।

ग्यारह दिन बाद गुटिका को नदी में विसर्जित कर दें तथा चावल के दानों को चिड़ियों को चुगा दें।

न्यौछावर 150/–

13. युवा पुत्री के विवाह में आ रही अड़चनों की समाप्ति हेतु

कम से कम हमारे देश में आज भी विवाह के योग्य हो जाने पर भी युवा पुत्री का घर बैठे रहना न केवल उस युवती वरन पूरे परिवार के लिए क्लेश का कारण होता है। पूरे परिवार पर ही सामाजिक रूप से एक प्रश्न चिह्न आरोपित हो जाता है। ऐसी अमधुर स्थिति की समापित के लिए या तो युवती स्वयं अथवा उसके नाम का संकल्प कर उसका कोई भी रक्त सम्बन्धी यदि किसी ताम्रपात्र में 'गौरी यंत्र' (धारण) स्थापित कर 5 दिनों तक निम्न मंत्र का 61 बार जप करे और वह यंत्र युवती धारण करे तो शीघ्र ही सम्मानित परिवार से सुयोग्य वर के प्रस्ताव स्वयं आने की स्थितियां बनने लग जाती है।

मंत्र

।। ॐ ग्लौं गं ॐ गौरीपतये नमः।।

40 दिनों पश्चात् उसको जल में विसर्जित कर दें।

न्यौछावर- 300/-

14.भूमि दोष तथा गृह-दोष निवारणार्थ

व्यक्ति जहां रहता है अथवा जिस स्थान पर रहकर वह अपना व्यापार आदि करता है उस भूमि का भी अपना दोष या गुण होता है जिसकी रश्मियां प्रभावित करती रहती है। अनेक बार तो ऐसा भी देखा गया है कि कोई व्यक्ति किसी साधना अथवा जीवन-यापन में सब ओर से हार कर असफल बैठ जाने के बाद, जब अपनी भूमि का अथवा गृह का व्यापार स्थल शोधन करवा लेता है तो उसे एकदम आशातीत सफलता मिलने लग जाती है।

महाशिवरात्रि की रात्रि में दस बजे के पश्चात् किसी ताम्रपात्र में 'तांत्रोक्त नारियल' को रख कर उस पात्र को काले वस्त्र पर स्थापित कर, निम्न मंत्र का 91 बार मंत्र जप करने के पश्चात् उसी काले वस्त्र में बांध कर घर अथवा व्यापार स्थल पर रखें-

मंत्र : ।। ॐ ह्रौं ब्लूं हं लं रं ॐ।।

एक माह पश्चात् तांत्रोक्त नारियल को नदी में प्रवाहित कर दें।

न्यौछावर 150/-

15.अखण्ड लक्ष्मी की प्राप्ति हेतु-

सामान्यतः साधकों की यह धारण होती है, कि यदि जीवन में धन की प्रचुर प्राप्ति करनी है, तो लक्ष्मी की साधना करनी चाहिए, यह सत्य है किंतु अपूर्ण सत्य है। पूर्ण सत्य यही है, कि लक्ष्मी अपने 'श्री' स्वरूप में, अखण्ड स्वरूप में केवल भगवान शिव की कृपा से ही जीवन में प्रकट हो सकती है। महाशिवरात्रि की रात्रि में ग्यारह बजे के आसपास किसी ताम्रपत्र में 'तांत्रोक्त नारियल' रखें, उसके समक्ष निम्न मंत्र का 51 बार जप करने के बाद अत्यन्त तीव्र तांत्रोक्त उपाय अनभूत किया गया है-

मंत्र : ।। ॐ सदाशिव भव ॐ फट्।।

अगले दिन तांत्रोक्त नारियल कुछ दक्षिण व अक्षत के साथ किसी देवी मन्दिर में भेंट चढ़ा दें या जल में विसर्जित कर दें।

न्यौछावर- 150/-

16.भाग्योदय की स्थिति हेतु

वस्तुतः सौभाग्य शब्द को किसी भी परिभाषा में आबद्ध करना अत्यंत कठिन है। प्रत्येक व्यक्ति की जीवन के प्रति अपनी ही एक कल्पना होती है। कुछ उसके स्वप्न होते हैं, जिनकी पूर्ति से उसे जीवन में असीम तृप्ति मिलती है।

इच्छुक साधक को चाहिए, कि वह किसी गहरे पात्र में 'नर्मदेश्वर शिवलिंग' स्थापित कर, उसे पात्र सहित सफेद वस्त्र पर रख निम्न मंत्र जप अनुमान से आधे घंटे तक करते हुए पतली जलधार नर्मदेश्वर शिवलिंग पर अर्पित करें-

मंत्र :।। ॐ ह्रीं नमः शिवाय ह्रीं ॐ।।

इस प्रयोग में माला का उपयोग नहीं है। चढ़े हुए जल को किसी वृक्ष की जड़ में तथा शिवलिंग को पूजा स्थान में एक माह तक रखने के बाद किसी नदी में विसर्जित कर दें।

न्यौछावर-240/-

17. धन-धान्य की प्राप्ति हेतु-

भगवान शिव की अर्द्धांगिनी, उनकी मूलभूत शक्ति, जगत जननी मां पार्वती का एक स्वरूप अन्नपूर्णा का भी है जो अपनी समस्त संतानों के पोषण साथ-साथ निरंतर उनके हित चिंतन में भी तल्लीन रहती है, किन्तु भगवती अन्नपूर्णा की आराधना-साधना तब तक अधूरी ही है, जब तक उसमें शिवत्व की समायुक्ति न हो। जिस प्रकार शिव शक्ति के बिना अधूरे हैं ठीक उसी प्रकार का माधुर्य भी शिव की उपस्थिति में प्रस्फुटित हो पाता है। घर धन-धान्य से भरा रहे, अतिथियों का आगमन व सत्कार संभव हो सके, जीवन में पुण्य कार्य हो सके, तीर्थयात्राएं हो सके, जैसे जीवन में विविध उदार पक्षों की पूर्ति के लिए एक लघु प्रयोग का विधान किया गया है। साधक जल्दी उठकर नित्य पूजन, शिव पूजन को सम्पूर्ण कर अपने समक्ष सफेद वस्त्र पर ताम्रपात्र में 'गौरी शंकर रुद्राक्ष' को स्थापित कर निम्न मंत्र का 75 बार जप सम्पन्न करें-

मंत्र

।। ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं ॐ।।

दूसरे दिन गौरी शंकर रुद्राक्ष को कुछ दक्षिणा के साथ किसी को दे दें, अथवा देवालय में रख दें।

न्यौछावर - 150/-

18.मनोबल में कमी की समाप्ति हेतु

जीवन में यदि मनोबल प्रधान हो, तो व्यक्ति केवल इसी के आधार पर आधी से अधिक विजय प्राप्त कर लेता है। जीवन है तो समस्याएं भी रहेंगी ही। भक्ति मार्ग की भांति साधना का क्षेत्र कोई दिवास्वप्न नहीं दिखाता है, अपितु स्वप्नों को पूरा करने का मार्ग ही तो बताता है, और व्यक्ति में निर्मित कर देता है वह आत्मबल, जिसके अभाव में व्यक्ति आत्मपक्ष का विकास तो दूर अपने दैनिक जीवन को भी नहीं संवार पाता है। मनोबल की कमी जीवन में एक अभिशाप होती है और इसे समाप्त करना ही चाहिए। अपने व्यक्तित्व को आंतरिक व बाह्य रूप से तीव्र सम्मोहक बनाने में जीवन की एक विशिष्ट उपलब्धि होती है।

अर्धरात्रि में मनोबल प्राप्ति हेतु सम्पन्न किए जाने वाले इस प्रयोग हेतु आवश्यक है कि साधक अथवा साधिका के पास 'सुदर्शन गुटिका' हो जिसे वे किसी ताम्रपात्र में रख निम्न मंत्र का 75 बार जप तीन दिनों तक सम्पन्न करें-

मंत्र

।। ॐ क्लीं ह्रीं क्लीं ॐ।।

फिर गुटिका को नदी में विसर्जित कर दें।

न्यौछावर- 150/-

आयुर्वेद सुधा

तिल

नाम : संस्कृत - तिल, होमधान्य, पापघ्न, पितृतर्पण, तेल फल, पितृधान्य। हिन्दी - तिल, काला तिल, सफेद तिल। बंगला - तिलगाछ, भादुतिल, काला तिल। गुजराती - तल। मराठी - तिळी। तेलुगु - नुबुलु, नुऊ। तमिल - इलु, एलु।

वर्णन : तिल की खेती भारतवर्ष में सब दूर होती है। इसका तेल खाने के काम में सारे भारतवर्ष में लिया जाता है। औषधि के प्रयोग में काला तिल काम में आता है।

रासायनिक विश्लेषण : तिल के अन्दर लोहा, कैल्शियम और फास्फोरस की मात्रा काफी पाई जाती है। लगभग 100 ग्राम छटाँक तिल में 10.5 मिलिग्राम लोहा, 1.45 ग्राम कैल्शियम और 57 ग्राम फास्फोरस पाया जाता है। मनुष्य शरीर के लिए जितने कैल्शियम की आवशकता है उतना कैल्शियम 1.11 छटांक तिल में प्रतिदिन मिल सकता है। उसके साथ ही उससे लोहा और फास्फोरस की मात्रा भी प्राप्त हो जाती है। अगर तिल को गुड़ में मिलाकर उनके लड्डू बनाकर खाये जाए तो और भी अधिक लाभदायक होता है क्योंकि पौने दो छटाँक गुड़ में 11.4 मिलीग्राम लोहा और .04 ग्राम फास्फोरस अलग मिल जाता है। इसलिए मनुष्य शरीर के दैनिक भोजन में तिल का होना बहुत जरूरी है।

प्रकृति : गर्म।

तिल सर्दी के मौसम का शक्तिप्रद खाद्य है। काले तिल उत्तम होते हैं। तिल बालों के लिए हितकारी, चर्म को साफ करने वाले, दूध बढ़ाने वाले, मस्तिष्क शक्तिवर्धक हैं।

गुण, दोष और प्रभाव : आयुर्वेदिक मतसे तिल चरपरे, कड़वे, मधुर, कसेले, भारी, कफ-पित्त कारक, बलवर्धक, केशों को हितकारी, स्तनों में दूध उत्पन्न करने वाले, चर्मरोगों में हितकारी, दन्तशूलनाशक, मलरोधक, वातविनाशक और बुद्धिवर्धक होते हैं। सब तिलों में काले तिल उत्तम होते हैं। सफेद तिल मध्यम और वीर्यवर्धक होते हैं और दूसरे तिल हलके होते हैं।

तिळी की खल मधुर, रुचिकारक, तीक्ष्ण, मलस्तम्भक, रूसी और कफ, वात तथा प्रमेह को नष्ट करने वाली है।

तिल का तेल सब प्रकार के व्रण और जख्मों के ऊपर लगाने के काम में लिया जाता है। गर्मी के दिनों में दूसरे व्रणरोपक या व्रणशोधक द्रव्यों की अपेक्षा यह तेल अधिक हितकारी होता है।

उपयोग

खूनी बवासीर : तिलों को जल के साथ पीसकर मक्खन में मिलाकर चाटने से खूनी बवासीर का खून बन्द हो जाता है।

अग्नि से जलना : तिलों की पीसकर अग्नि से जले हुए स्थान पर लेप करने से शांति मिलती है।

मोच : तिल और महुओं को पीसकर मोच के ऊपर बाँधने से हड्डी में आई हुई मोच मिट जाती है।

मस्तक पीड़ा : तिल के पत्तों को सिरके या पानी में पीसकर मस्तक पर लेप करने से मस्तक पीड़ा मिट जाती है।

सूखी खांसी : तिल और मिश्री को औटाकर पिलाने से सूखी खांसी मिटती है।

गर्भाशय संबंधी रोग : गर्भाशय में रुधिर के जमाव को बिखेरने के लिये पाँच रत्ती तिलों का चूर्ण दिन में 3-4 बार देने से और इस रोग वाली स्त्री को कमर तक उष्ण जल में बिठाने से लाभ होता है।

गर्भाशय की पीड़ा : तिलों को तेल में पीसकर गरम करके नाभि के नीचे लेप करने से सर्दी से हुई गर्भाशय की पीड़ा मिटती है।

मुँहासे : तिलों को सिरस की छाल और सिरके के साथ मलने से मुँहासे मिटते हैं।

रूक्षता : तिल के तेल की मालिश करने से शरीर की रूक्षता मिट जाती है।

कब्ज : 62 ग्राम तिल कूटकर मीठा मिलाकर खाने से कब्ज दूर होता है। तिल, चावल और मूँग की दाल की खिचड़ी भी कब्ज को दूर करती है।

अर्श : 60 ग्राम काले तिल खाकर ऊपर से ठण्डा पानी पीने से बिना रक्त वाले अर्श ठीक हो जाते हैं। दही के साथ सेवन करने से रक्त भी बंद हो जाता है। नियमित रूप से तिल का तेल अर्श पर लगाने से लाभ होता है। बवासीर के रोगी को कब्ज के लिए नित्य प्रात: काले तिल, मक्खन, मिश्री प्रत्येक एक चम्मच एक साथ मिलाकर नित्य खाना चाहिए। यदि बवासीर से रक्त गिरता हो तो यह नित्य तीन बार खाने से लाभ होता है।

बवासीर (रक्तस्रावी) : 50 ग्राम काले तिल इतने पानी में भिगोये कि उस पानी को तिल ही सोख लें। आधा घण्टा पानी में भिगो कर पीस लें। इनमें एक चम्मच मक्खन, दो चम्मच पिसी हुई मिश्री मिलाकर सुबह-शाम दो बार खायें, बवासीर से रक्त गिरना बंद हो जायेगा।

कैल्शियम : शरीर को जितने कैल्शियम की प्रतिदिन आवश्यकता है, उतना 50 ग्राम तिलों में मिल जाता है।

शक्तिप्रद : तिलों में प्रोटीन मिलता है। मस्तिष्क की बनावट लैसीथीन द्रव्य से होती है। यह तिलों में अधिक मिलता है। इससे मस्तिष्क के स्नायु एवं माँस पेशियाँ शक्तिशाली होती हैं। तिलों में विटामिन बी. कम्प्लैक्स भी बहुत मिलता है। तिल और गुड़ समान मात्रा में मिलाकर लड्डू बना लें। एक लड्डू नित्य प्रात: शाम खाकर दूध पीये। इससे शक्ति मिलती है। मानसिक दुर्बलता एवं तनाव दूर होते हैं। कठिन शारीरिक श्रम करने पर साँस नहीं फूलता। जल्दी बुढ़ापा आने को तिल रोकता है।

वातरोग : तिल के तेल की मालिश करने से वातरोग में लाभ होता है।

अधिक पेशाब : सुबह, शाम तिल का लड्डू खाने से अधिक पेशाब आना बन्द हो जाता है।

बार-बार पेशाब, बिस्तर में पेशाब : 50 ग्राम काले तिल, 25 ग्राम अजवाइन, 100 ग्राम गुड़ में मिला लें। इसे 8 ग्राम सुबह, शाम दो बार नित्य खाते रहने से बार-बार पेशाब जाना एवं बच्चों का बिस्तर पर पेशाब करना बन्द हो जायेगा।

बालों की समस्या : जिनके बाल सफेद हो गये हों, बाल झड़ते हो, गंजापन हो तो वे नित्य तिल खाने लगें तो उनके बाल लम्बे, मुलायम और काले हो जायेंगे।

रूसी : बालों में तिल के तेल की मालिश करें। मालिश के आधे घण्टे बाद एक तौलिया गर्म पानी में डुबो कर, निचोड़ कर सिर पर लपेट लें ठण्डा होने पर पुन: गर्म पानी में डुबो कर, निचोड़ कर सिर पर लपेट लें। इस प्रकार पाँच मिनट गर्म लपेट रखें। फिर ठंडे पानी से सिर धो लें। बालों से रूसी दूर हो जायेगी।

रोग-निरोधक शक्ति बढ़ाने के लिए सर्दी में एक दो माह दो चम्मच तिल नित्य चबायें या लड्डू खायें। तिल के तेल की मालिश करें। इससे निरोग बने रहेंगे।

दाँतों की मजबूती : 62 ग्राम काले तिल सुबह दाँतून के बाद बिना कुछ खाये-पिये धीरे-धीरे खूब चबा कर खायें। इसमें गुड़ चीनी कुछ भी न मिलायें। ऊपर से एक गिलास ठण्डा पानी पीयें, चाहें तो रात को भी इस तरह तिल खा सकते हैं। इस प्रयोग से दाँत मजबूत होंगे। काया कंचननुमा बनेगी।

बिवाई फटना : देशी पीला मोम एक भाग, तिल का तेल चार भाग, मिलाकर गर्म करके मरहम बना लें। इसे बिवाइयों पर लगाने से लाभ होता है।

अल्परजु, रजोलोप : आठ चम्मच तिल, एक गिलास पानी, इसमें स्वाद के अनुसार गुड़ या दस काली मिर्च पिसी हुई मिला कर उबालें। आधा पानी रहने पर दो बार नित्य पीयें। यह मासिक धर्म आने के 15 दिन पहले से मासिक स्राव काल तक पीती रहें। इस मासिक धर्म खुल कर, पर्याप्त मात्रा में साफ आयेगा।

(उपयोग से पूर्व अपने वैद्य की सलाह अवश्य लें)

एक शिष्य ने अपने गुरु से पूछा है कि गुरुदेव ये जो मेरा जीवन है इसका असली मूल्य क्या है ? उसके गुरु उसे एक पत्थर देते हैं और कहते हैं कि जाओ और बाजार में इसका मूल्य पूछकर आना लेकिन इसे बेचना नहीं। तो वह शिष्य बाजार के लिए चल देता है, उसका मूल्य जानने के लिए। वह सबसे पहले ठेले पर सब्जी बेच रहे एक सब्जी वाले के पास जाता है और पत्थर दिखा कर भाव पूछता है, वह उसे देखता है और सोचता है कि तोलने के कार्य में, किसी वजन के बांट के रूप में इसे इस्तेमाल कर लूंगा और उसके मूल्य के बदले कुछ किलो सब्जी देने की बात करता है। वह शिष्य आगे चलता है और एक फल वाले की दुकान पर जाता है, वह फल वाला उस चमकते हुए पत्थर के मूल्य के रूप में कुछ किलो अनार देने की बात कहता है। वह फिर एक सुनार के पास जाता है वह उसे देखकर उसका मूल्य 10 लाख रुपये लगाता है, किन्तु शिष्य उस पत्थर को बेचने से मना करता है तो सुनार कहता है कि मैं इसके 15 लाख रुपये दे सकता हूँ। यह सुनकर वह शिष्य आश्चर्य चकित हो जाता है और फिर वह कहता है कि यह मेरे गुरु ने दिया है, इसका मूल्य जानने के लिए, मुझे इसे बेचना नहीं है।

फिर वह आगे बढ़ता है और पहुँचता है एक दूकान पर जो कि कीमती रत्नों की दुकान है। वह वहाँ पहुँचकर जैसे ही वह पत्थर निकालता है, जौहरी उसे देखते ही तुरन्त एक लाल कपड़ा बिछा देता है और उसे उस पर रखने के लिए कहता है। और वह रत्नों की दुकान का मालिक उसे एक टक देखता ही रह जाता है और कीमत पूछने पर उस शिष्य की ओर मुखातिब होकर कहता है कि मैं अपनी सारी सम्पत्ति भी दांव पर लगा दूँ तब भी इसका मूल्य चुका नहीं पाऊँगा। कहाँ से लाये हो यह बेशकीमती मणि ?

यह सब होने के बाद वह शिष्य वापस अपने गुरु के पास आता है और सारी बातें बताता है और अपने गुरु से कहता है कि मैंने तो आप से पूछा था कि मेरे इस जीवन का असली मूल्य क्या है ? तब गुरु कहता है, ये सारे लोग तुम्हें यही तो समझा रहे थे। जब तुम सब्जी वाले के पास, फल बेचने वाले के पास, सुनार के पास या उस रत्नों की दुकान के मालिक के पास पहुंचे तो उन्होंने तुम्हें वही तो समझाया। अपनी तरफ से, अपनी सोच के स्तर के अनुसार, अपने ज्ञान के अनुसार हर किसी ने उस पत्थर का मूल्य लगाया। इसी प्रकार इस बेशकीमती जीवन का मूल्य प्रत्येक व्यक्ति अपनी बुद्धि विवेक, अपने ज्ञान के स्तर के अनुसार समझेगा परन्तु जो यह समझ लेगा कि यह मानव जीवन, कितना दुर्लभ है, कितना कीमती है, कितनी योनियों में भटकने के बाद मिला है, जैसा कि हमारे शास्त्र, हमारे ऋषि-मुनि बताते हैं, जैसा हमारे सद्गुरुदेव ने बताया है, वही समझेगा इस दुर्लभ मानव के जीवन के मूल्य को, जो अत्यन्त सौभाग्य से प्राप्त हुआ है।

भगवान ने सभी को यह मनुष्य जीवन दिया है, परन्तु व्यक्ति जब उस जीवन का मूल्य, उस जौहरी की तरह समझकर उसका उपयोग करेगा या जीवन में जौहरी रूपी श्रेष्ठ गुरु से मुलाकात होने पर उसे जानेगा कि जीवन क्या है तब इसे बेशकीमती मानकर, अमूल्य जानकर अपने जीवन को सार्थक करेगा। यह उस शिष्य के जीवन का सबसे बड़ा सौभाग्य होगा।

जब हम किसी चीज को मूल्यवान समझेंगे तभी उसका उचित और सार्थक उपयोग कर सकेंगे। आवश्यकता इस बात की है कि हम स्वयं इस अमूल्य जीवन के मूल्य को पहचानें, जो अत्यन्त दुर्लभ है।

राजेश गुप्ता 'निखिल'

मेष – प्रथम सप्ताह सुखद रहेगा। कार्यों में मित्रों की सहायता से सुधार होगा। मनोवांछित कार्य सफल होंगे। स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहें। अविवाहितों का विवाह सम्भव है। रुकावटों के बाद भी सफल होंगे। किसी व्यक्ति की मुलाकात दिनचर्या बदल देगी। कार्य के लिए यात्रा लाभ देगी। माह के मध्य में समय थोड़ा विपरीत है। अपने ही नुकसान पहुँचा सकते हैं। लालच से दूर रहें। लाभ के साथ हानि भी हो सकती है। आपका व्यवहार उत्तम रहेगा। परिवार में सभी सहयोग करेंगे। इण्टरव्यू में सफलता के अवसर हैं। जीवनसाथी से सहयोग प्राप्त होगा। आखिरी सप्ताह में स्वास्थ्य का ख्याल रखें, काम में रुचि नहीं लेंगे। किसी के बहकावे में न आवें, कोई अनहोनी घटना हो सकती है, गलत सोहबत के दोस्तों से दूर रहें। नया वाहन न खरीदें, आलस्य से दूर रहें। **भाग्योदय दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ – 1, 9, 10, 11, 19, 20, 27, 28

वृष –प्रारम्भ आत्मविश्वास से पूर्ण रहेगा। कोई अच्छी खबर मिल सकती है। विदेश यात्रा का योग है। आप गरीबों की सहायता करेंगे। अपनी जिम्मेदारियों को पूरी तरह निभायेंगे। कोई छिपी बात उजागर होने से शर्मिंदगी होगी। कोई भी कार्य सोच-विचार कर करें। समय का दुरुपयोग न करें। गलत सोहबत से दूर हरें। वैवाहिक जीवन में तनाव की स्थिति रहेगी। मानसिक अशांति से कार्य रुकेंगे। उधार दिये पैसे वसूल होंगे। व्यापार में लाभ रहेगा। स्वास्थ्य में सुधार रहेगा। शत्रुओं से सावधान रहें। उनके समक्ष अपनी कोई कमी उजागर न करें। बेरोजगारों को कार्य मिलेंगे। आखिरी सप्ताह में बाधाएं दूर होंगी, शांति रहेगी। परन्तु सावधान रहें, कोई कारण चेहरे पर उदासी ला सकता है। संतान के प्रति चिंतित रहेंगे। आय की आवक कम होगी। आप **महालक्ष्मी दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ – 2, 3, 4, 11, 12, 13, 21, 22, 23

मिथुन – माह का प्रारम्भ अनकूल नहीं है। चिंताएं घेरे रहेंगी। इस समय कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। सोच-समझकर कदम बढ़ायें। विद्यार्थी वर्ग को सरस्वती मंत्र का जप करना चाहिए। किसी नये व्यक्ति से मुलाकात सहयोग प्रदान करेगी। अचानक कहीं से रुके रुपये प्राप्त होंगे। मित्रों एवं परिजनों के बीच सुख-शांति से समय व्यतीत होगा। मेहनत का यथोचित परिणाम नहीं मिलेगा। मध्य के दिनों में दाम्पत्य जीवन में मधुरता रहेगी। अविवाहितों का विवाह सम्भव है। कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें, हानि हो सकती है। व्यापार में कोई चिंता की स्थिति पैदा हो सकती है। आखिरी सप्ताह में व्यापार में सफलता का समय है। सहयोगियों का सहयोग मिलेगा। शीघ्र धन कमाने की कोशिश न करें। स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। आप **भैरव दीक्षा** प्राप्त करें या साधना करें।

शुभ तिथियाँ – 4, 5, 6, 14, 15, 16, 23, 24, 25

कर्क – प्रारम्भ के दिन सुख पूर्ण व्यतीत होंगे परन्तु सतर्क रहना होगा। कोई व्यक्ति आप पर बिना वजह आरोप लगा सकता है औरश परेशानी झेलनी पड़ सकती है। स्वास्थ्य थोड़ा खराब हो सकता है। सहकर्मियों का सहयोग मिलगा। नये लोगों से मुलाकात होंगी। दूसरे सप्ताह में थोड़ा तनावग्रस्त रहेंगे। कोई छोटी सी बात परिवार में मनमुटाव ला सकती है। आत्मविश्वास बनाये रखें। शास्त्रों का पठन एवं श्रवण करें। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। जमीन-जायदाद के मसले हल होंगे। सूझ-बूझ से काम लें। कार्य क्षेत्र में सतर्क रहें, धोखा मिल सकता है, आवेश में न आयें। आखिरी सप्ताह सुखप्रद है। धार्मिक स्थल पर समय व्यतीत होगा, विद्यार्थी वर्ग प्रसन्न रहेगा। मन प्रसन्न रहेगा, इस समय सोचे कार्य पूरे होंगे। आप **पूर्णत्व दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ – 6, 7, 8, 16, 17, 18, 25, 26, 27

सिंह – प्रारम्भ का समय श्रेष्ठ है। रुके हुये कार्य इस समय हो जायेंगे। कार्यों को फुर्ती से पूर्ण कर लेंगे। दूसरों की बातों में न आये और किसी अन्य के कार्यों में हस्तक्षेप न करें। आप नौकरी की अपेक्षा व्यापार की और आकृष्ट होंगे। सामने वाले व्यक्ति को प्रभावित करने की क्षमता आप में है। आप कार्य क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनायेंगे। माह के मध्य की तारीख आपके अनुकूल नहीं है। कोई अप्रिय समाचार प्राप्त हो सकता है। आर्थिक हानि भी हो सकती है। खर्च की अधिकता रहेगी। इसके बाद के समय में प्रगति के मार्ग खुलेंगे रुकावटों के बावजूद सफलता प्राप्त कर सकेंगे। आखिरी सप्ताह में सतर्क रहे, कोई अपना ही धोखा दे सकता है। कोई अनहोनी घटना दुखी कर सकती है। दाम्पत्य जीवन खुशहाल रहेगा, संतान आपकी आज्ञा में रहेगी। आप **गणपति दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ – 9, 10, 11, 19, 20, 27, 28

कन्या – सप्ताह का प्रारम्भ संतोषप्रद रहेगा। परिवार में सहयोग पूर्ण वातावरण रहेगा। अपनी जिम्मेदारियां निभाने में सफल रहेंगे। व्यापारिक सौदा लाभ देगा मित्रों का सहयोग मिलेगा, नौकरीपेशा को पदोन्नति का अवसर है। कोई छुपी बात उजागर हो सकती है। दूसरे

सप्ताह में शत्रुओं से सावधान रहें। बिना पढ़े कहीं पर भी हस्ताक्षर न करें। यात्रा लाभदायक रहेगी। उच्च अधिकारियों का सहयोग मिलेगा। माह के मध्य में ज्यादा जोखिम पूर्ण कार्य नहीं करें। घाटा लग सकता है। रुपये आते दिखाई नहीं देंगे, विरोधी परेशान करेंगे। संतान कहने में नहीं रहेगी। विवाहितों का मन पढ़ाई में लगेगा। दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा। अहंकार न करें, आखिरी तारीख संतोषप्रद है। आप **बगलामुखी दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 2, 3, 4, 11, 12, 13, 21, 22, 23

तुला - प्रारम्भ के कुछ दिन कष्टकारी रहेंगे। जिसका अच्छा करेंगे, वही नुकसान पहुंचायेगा। कोई भी गलत कार्य या झूठा कार्य न करें। आपकी मेहनत का पूरा फल मिलेगा। विरोधी स्वयं ही दूर हो जायेंगे। भविष्य की योजना बनाने में सफल होंगे। सोचे गये कार्य पूर्ण होंगे। संतान का सहयोग मिलेगा। अचानक कोई व्यवधान आ सकता है। अधिक धन व्यय न करें, गलत सोहबत के मित्रों से दूर रहें। माह के मध्य में अपनी चाहत के अनुसार विवाह का अवसर है। व्यापारिक गतिविधि में किसी अन्य पर भरोसा न करें। उधारी अभी वसूल नहीं हो पायेगी। अचल सम्पत्ति की खरीद में लाभ होगा, विद्यार्थियों का मन पढ़ाई में लगेगा। नकारात्मक विचारों से दूर रहें, आलस्य न आने दें और क्रोध पर संयम रखें, अन्यथ बना-बनाया काम बिगड़ जायेगा। इस माह आप **कुण्डलिनी जागरण दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 4, 5, 6, 14, 15, 16, 23, 24, 25

वृश्चिक - प्रारम्भ सफलता देगा। मेहनत का फल मिलेगा विरोधी शांत रहेंगे। व्यापार में किसी पर भरोसा न करें। आत्मविश्वास बनाये रखें। कोई बड़ा कन्ट्रैक्ट मिल सकता है। अनजान व्यक्ति से वाद-विवाद न करें। मित्र की सहायता से परिस्थितियाँ सुधरेगी, अटके रुपये प्राप्त होंगे। कोई योजना अटक जायेगी। धन व्यय पर कण्ट्रोल रखें। दाम्पत्य जीवन में खटपट हो सकती है, सावधान रहें, संयम बरतें। बिना वजह किसी और की गलती आपके जिम्मे आ सकती है। तीसरे सप्ताह में आत्मविश्वास जाग्रत होगा। परन्तु अभी नया कार्य प्रारम्भ न करें, रुपये उधार न दें, वाहन चलाने में सावधानी बरतें। विरोधियों द्वारा खिल्ली उड़ाये जाने पर भी क्रोध पर नियंत्रण रखे। आप जिस कार्य को प्रारम्भ करेंगे, पूरा करके ही दम लेंगे। जमा पूंजी में वृद्धि होगी। **पूर्ण सफलता दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 6, 7, 8, 16, 17, 18, 25, 26, 27

धनु - सप्ताह का प्रारम्भ मान-प्रतिष्ठा पूर्ण होगा। नौकरीपेशा को पदोन्नति की सम्भावना है। आत्मविश्वास बढ़ा हुआ रहेगा। गरीबों की सहायता करेंगे। समय को बेकार न गुजारें। गलत सोहबत से दूर रहें। दाम्पत्य जीवन में तनाव पूर्ण स्थिति रहेगी। विदेश यात्रा का योग है। स्वास्थ्य पर ध्यान देवें। पैसों की तंगी रहेगी। माह के मध्य में वातावरण तनावपूर्ण रहेगा। वाणी में मिठास लायें। शत्रुओं से सावधान रहें। नया वाहन अभी न खरीदें। स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। नया कारोबार अभी शुरू करने से बचें। अहंकार से बचें। आखिरी सप्ताह में शत्रुओं से सावधान रहें, कमजोरी उजागर न होने दें। आखिरी तारीखों में आय का नवीन स्रोत बन सकता है। राजकीय कार्यों में जीत होगी। आप **बगलामुखी दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 9, 10, 11, 19, 20, 27, 28

मकर - प्रारम्भ सफलतादायक रहेगा। अपनी बुद्धिमानी से सफलता पा लेंगे। परिश्रम का पूरा लाभ मिलेगा। बेकार के कार्यों में समय न गवायें। विरोधियों से सावधान रहें। नये भवन की खरीदारी हो सकती है। अटके कार्य पूर्ण होंगे। रुका पैसा वसूल होगा। लेन-देन में आ रही बाधाएं दूर कर लेंगे। माह का मध्य प्रतिकूल रहेगा। कोई अशुभ समाचार मिलेगा, घर में वातावरण अशांत होगा। शत्रु पक्ष से विशेष सावधान रहने की जरूरत है। कानूनी कार्यवाही अपने पक्ष में होगी। मित्रों का सहयोग मिलेगा। व्यवसाय में वृद्धि के साथ आर्थिक लाभ मिलेगा। आखिरी सप्ताह में कदम फूंक-फूंक कर आगे बढ़ें, किसी से उलझें नहीं। क्रोध पर नियंत्रण रखें, फालतू के झंझटों में न पड़ें। दाम्पत्य जीवन में खुशहाली का समय है। **बगलामुखी दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 2, 3, 4, 11, 12, 13, 22, 23

कुम्भ - सप्ताह का प्रारम्भ असंतोषजनक रहेगा। सोचे गये कार्य पूर्ण नहीं होंगे। नकारात्मक विचारों से बाधाएं आयेंगी, आलस्य से दूर रहें, क्रोध पर संयम रखें। विद्यार्थियों के लिए सफलता का समय है। आप बाधाओं के बाद भी कार्यों को शांतिपूर्वक निपटाने में समर्थ रहेंगे। आय की आवक प्रारम्भ होगी। संतान करने में नहीं रहने से चिंतित रहेंगे। दूसरे सप्ताह में समय कष्टप्रद है, जल्दबाजी न करें। आप का पैसा कहीं रुक सकता है। सुख भोगने की प्रवृत्ति पर अंकुश लगायें। मित्रों का सहयोग मिलेगा, आखिरी सप्ताह में परिवार में शांति का वातावरण रहेगा। कोई सुखद समाचार मिल सकता है। इण्टरव्यू में सफलता मिलेगी। आखिरी तारीख में विपरीत परिणाम मिलेगा, वांछित सुख में कमी रहेगी। आप **पूर्ण विजय दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 4, 5, 6, 14, 15, 16, 23, 24, 25

मीन - प्रारम्भ लाभप्रद रहेगा। जीवन स्तर में सुधार होगा। इस समय निर्णय सोच-समझ कर ही लें। आलस्य के कारण समय पर काम पूरा नहीं होगा। पहले किये गये कार्यों का पारिश्रमिक इस समय मिलेगा। जमीन-जायदाद के मामले हल होंगे, मित्रों का सहयोग मिलेगा। परिवार के दायित्व पूरा कर सकेंगे। सेहत पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। कारोबार को लेकर परेशानी हो सकती है। माह के मध्य में नई योजना बनेगी। नया वाहन भी खरीद सकते हैं। अवांछित लोगों से दूर रहें, किसी पर अत्यधिक भरोसा न करें। स्वास्थ्य का ख्याल रखें। कोई न कोई टेंशन रहेगी ही। आत्मविश्वास बनाये रखें। आखिरी के दिन लाभकारी हैं, कोई महत्वपूर्ण अनुबंध मिल सकता है। गरीबों की सहायता करेंगे। आप इस माह **कायाकल्प दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 6, 7, 8, 16, 17, 18, 25, 26, 27

सर्वार्थ सिद्धि योग - फरवरी-9, 14, 15, 18, 20, 24, 27, 28
अमृत सिद्धि योग - फरवरी-20
रवि योग - फरवरी-4, 6, 7, 11, 15, 23

इस मास व्रत, पर्व एवं त्यौहार

01.02.22	मंगलवार	मौनी अमावस्या
02.02.22	बुधवार	गुप्त नवरात्रि प्रा.
03.02.22	गुरुवार	गौरी तृतीया
05.02.22	शनिवार	बसंत पंचमी
07.02.22	सोमवार	आरोग्य सप्तमी
12.02.22	शनिवार	जया एकादशी
16.02.22	बुधवार	त्रिपुर सुन्दरी जयंती
27.02.22	रविवार	विजया एकादशी
01.03.22	मंगलवार	महाशिवरात्रि

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत है; जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिसे जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारिणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत **99.9%** आपके भाग्य में अंकित हो जायेगा।

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है

वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविबार (फरवरी-6, 13, 20, 27)	दिन 06:00 से 10:00 तक रात 06:48 से 07:36 तक 08:24 से 10:00 तक 03:36 से 06:00 तक
सोमवार (फरवरी-7, 14, 21, 28)	दिन 06:00 से 07:30 तक 10:48 से 01:12 तक 03:36 से 05:12 तक रात 07:36 से 10:00 तक 01:12 से 02:48 तक
मंगलवार (फरवरी-1, 8, 15, 22)	दिन 06:00 से 08:24 तक 10:00 से 12:24 तक 04:30 से 05:12 तक रात 07:36 से 10:00 तक 12:24 से 02:00 तक 03:36 से 06:00 तक
बुधवार (फरवरी-2, 9, 16, 23)	दिन 07:36 से 09:12 तक 11:36 से 12:00 तक 03:36 से 06:00 तक रात 06:48 से 10:48 तक 02:00 से 06:00 तक
गुरूवार (फरवरी-3, 10, 17, 24)	दिन 06:00 से 08:24 तक 10:48 से 01:12 तक 04:24 से 06:00 तक रात 07:36 से 10:00 तक 01:12 से 02:48 तक 04:24 से 06:00 तक
शुक्रवार (फरवरी-4, 11, 18, 25)	दिन 06:48 से 10:30 तक 12:00 से 01:12 तक 04:24 से 05:12 तक रात 08:24 से 10:48 तक 01:12 से 03:36 तक 04:24 से 06:00 तक
शनिवार (फरवरी-5, 12, 19, 26)	दिन 10:30 से 12:24 तक 03:36 से 05:12 तक रात 08:24 से 10:48 तक 02:00 से 03:36 तक 04:24 से 06:00 तक

यह हमने नहीं वराहमिहिर ने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेंगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं? प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्दयुक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

फरवरी-22

11. किसी देवी मन्दिर में तेल का दीपक जलायें।
12. आप सरसों तेल एवं वस्त्र दान करें।
13. आज प्रातः भगवान सूर्य को अर्घ्य दें।
14. पारद शिवलिंग पर 'ॐ नमः शिवाय' बोलते हुये, अभिषेक करें।
15. किसी हनुमान मन्दिर में बेसन के लड्डुओं का भोग लगाकर बांट दें।
16. आज त्रिपुर सुंदरी साधना सम्पन्न करें।
17. 'गुरु गुटिका' (न्यौ. 150/-) जेब में रखें, कार्य सफल होंगे।
18. प्रातः 5 से 6 बजे के मध्य 15 मिनट 'क्लीं' मंत्र का जप करें।
19. काले तिलों का दान करें।
20. पूजन में एक सुपारी स्थापित कर ॐ गणेशाय नमः बोलते हुए 11 पुष्प चढ़ायें, मनोकामना पूर्ण होगी।
21. सद्गुरुदेव जन्मदिवस पर 16 माला गुरु मंत्र का जप करें।
22. 'ॐ हनुमतये नमः' का 21 बार उच्चारण करके जाएं।
23. माँ लक्ष्मी को दूध से बने प्रसाद का भोग लगायें, प्रसन्नता प्राप्त होगी।
24. गाय माता को रोटी खिलायें।
25. कुछ काली मिर्च के दाने अपने ऊपर 7 बार घुमाकर दक्षिण दिशा में फेंकें।
26. आज एकादशी के दिन व्रत रखें एंव 'ह्रीं' मंत्र का जप करें।
27. आज 'ॐ सूर्याय नमः' का 108 बार जप करें।
28. आज बिल्व पत्र पर चंदन का तिलक कर शिवलिंग पर चढ़ायें, मनोकामना पूर्ण होगी।

मार्च-22

1. आाज शिवरात्रि के दिन भगवान शिव का पूजन सम्पन्न करें।
2. गुरु पूजन के बाद स्फटिक माला से 'ॐ ह्रीं ॐ' का 1 माला जप करें।
3. एक मनोकामनापूर्ण गुटिका (न्यौ. 150/-) किसी मनोकामना को ध्यान में रखकर शिव मन्दिर में चढ़ायें।
4. आज शत्रुहन्ता गुटिका (न्यौ. 150/-) को शत्रु का नाम लेकर 108 बार 'ॐ ह्रीं ॐ' का जप करके जल में प्रवाहित करें, शत्रु शांत होंगे।
5. प्रातः पूजन के बाद 'भं भैरवाय नमः' का 11 बार उच्चारण करके जाएं।
6. आज दुर्लभोपनिषद सी.डी. का श्रवण करें।
7. 'ॐ ह्रीं सर्व कार्य सिद्धये नमः' का 21 बार जप करके जाएं।
8. हनुमान बाहु (न्यौ. 90/-) धारण करें, शत्रु शांत होंगे।
9. पांच तुलसी के पत्ते सेवन करके घर से जाएं।
10. तांत्रोक्त नारियल (न्यौ. 150) पूरे घर मे घुमाकर जल में प्रवाहित कर दें, बाधाएं समाप्त होंगी।

काली केवल श्मशान में ही सिद्ध नहीं होती काली कोई भयावह आकृति-स्वरूप नहीं है

महाकाली और महाकाल, शक्ति और शिव है

काली तंत्र की तीन साधना

जिन्हें होली कल्प-नवरात्रि में अवश्य सम्पन्न करें

काली की स्तुति, साधना तीक्ष्ण व सौम्य दोनों रुपो में की ज़ाती है, संन्यासी इसे शीघ्र सम्पन्न करने के लिए इसकी तीक्ष्ण प्रक्रिया अपनाते हैं, जबकि गृहस्थ साधकों के लिये सौम्य प्रक्रिया विख्यात है, जिसे अपनाकर वे आसानी से मनोवांछित प्राप्त कर सकते हैं।

यदि साधक संन्यासी है, तो वह अपने आभ्यान्तरिक उत्थान, साधनात्मक श्रेष्ठता को प्राप्त कर सकता है, यदि वह गृहस्थ साधक है, तो इसे सम्पन्न कर वह अपने भौतिक जीवन की समस्त आपदाओं को समाप्त कर, पूर्ण समृद्धिमय, ऐश्वर्यमय, शत्रु रहित बाधाओं का निवारण कर, कष्ट, पीड़ा, दुःख, तनावों से मुक्ति पाता है

महाविजय सुन्दरी साधना योग

यह मूल रूप से काली तंत्र की साधना है, और इसे होलाष्टक (10 से 18 मार्च) में सम्पन्न किया जाता है।

रात्रि को साधक इस साधना को प्रारम्भ करें और पूरी रात्रि इसे सम्पन्न करके ही उठें। अपने सामने एक बाजोट पर सफेद वस्त्र पर सबसे ऊपर **क्लीं** उसके ठीक नीचे **ह्रीं,** उसके नीचे **ऐं** तीनों महाशक्तियों के बीज मंत्र चांदी या तांबे की शलाका से कुंकुम या केशर से लिखें। अब अपने सामने चावलों की तीन ढ़ेरियां बनाकर उन पर तीन दीपक रख दें, जिनका मुंह साधक की ओर हो। दीपक पूरे समय अवश्य जलते रहने चाहिए, फिर एक तांबे का पात्र अपने सामने रखें और उसमें भी कुंकुम या केशर से तीनों बीज मंत्र लिखकर तांत्रोक्त रूप से प्राण प्रतिष्ठायुक्त किया हुआ **महाविजय सुन्दरी महायंत्र** स्थापित करें। यंत्र निर्माण श्रेष्ठ मुहूर्त में तीनों महाशक्तियों का सर्वांग पूजन प्राण प्रतिष्ठा, प्राण हृदय, और प्राणश्चेतना क्रिया से संपन्न किया होना चाहिए।

अब यंत्र का पूजन केशर की बिन्दी लगाकर अक्षत और पुष्प समर्पण से करना है। इसके पश्चात् साधक शांत अवस्था में बैठकर उस यंत्र पर पहले से ही ला करके रखे हुए मात्र नौ पुष्प अर्पित करें, समर्पित करते समय निम्न मंत्र का उच्चारण करें–

प्रथम तीन पुष्प समर्पण मंत्र

ॐ श्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं श्रियै नमः।

द्वितीय तीन पुष्प समर्पण मंत्र

ॐ हं खं रं यं फां श्रीं भूं भैं कत्यै नमः।

तृतीय तीन पुष्प समर्पण मंत्र

ॐ नित्यायै जं भं मं वं सं वरदायै सरस्वत्यै नमः।।

इस प्रकार पुष्प समर्पण करने के बाद साधक **मूंगे की माला** से निम्न दुर्लभ महाविजय सुन्दरी स्तोत्र मंत्र का 108 बार उच्चारण करें।

दुर्लभ महाविजय सुन्दरी स्तोत्र

ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं नमो विष्णु-वल्लभायै महाकामायै कं खं गं घं ड़ं नमस्ते।
मां पाहि पाहि रक्ष रक्ष धनं धान्यं श्रियं समृद्धि देहि देहि श्रीं श्रियै नमः स्वाहा।।
हं हं हं हंस हंसी स्मित कह-कहा मुक्त घोराट्टहासा।
खं खं खं खंगं हस्ते त्रिभुवन निलये कालिका कालधारी।।
रं रं रं रंग-रंगी प्रमुदित वदने पिंग केशी श्मशाने यं रं।
लं घं तापनीये भ्रकुटि घट घटाटोप कंकार जं ऐं।।
ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं नमो जगज्जनन्यै।।
वात्सल्य निधये चं छं जं झं ञं नमस्ते नमस्ते।
मां पाहि पाहि रक्ष रक्ष श्रियं नमः प्रतिष्ठां।
वाक् सिद्धिं मे देहि श्रीं श्रित्यं नमः स्वाहा।।

मूंगा माला से इस दुर्लभ स्तोत्र का रात्रि में 108 बार पाठ करना है, और उसी से यह साधना पूर्ण होती है।

-साधना सामग्री - 450/-

मनोकामना साफल्य साधना
तांत्रोक्त विधान द्वारा

कालखण्ड जीवन का महत्त्वपूर्ण भाग है, यदि समय के अनुकूल किसी कार्य को किया जाय; तो उसका प्रभाव भी अनुकूल ही मिलता है, यह सर्वविदित है।

होलिका दहन का पर्व अपने समस्त विकारों को तिलांजलि देने का महत्त्वपूर्ण अवसर है, जिसकी प्रतीक्षा में बड़ें-बड़े संन्यासी, योगी भी खड़े रहते हैं, कि कब वह दिन आयेगा, जब हम इस होलिका तंत्र साधना को सम्पन्न कर अपने मनोवांछित कार्यो को पूर्ण कर सकेंगे और अपने प्रयोजन को सार्थक कर सकेंगे। यह होलिका साधना अपनी कामना को पूरा करने का महत्त्वपूर्ण अवसर है, जो पूरे वर्ष में एक बार ही आता है और इस क्षण को चूकना अपने भाग्य को गंवाना ही कहा जा सकता है। यह क्षण प्रत्येक गृहस्थ व्यक्तिके जीवन को श्रेष्ठता प्रदान करने का अनमोल क्षण है, यदि इसे सही अर्थों में समझा जाय और इसका लाभ उठाया जाय।

साधना विधान

- यह साधना रात्रिकालीन है।
- प्रयुक्त सामग्री प्राण-प्रतिष्ठित होनीं चाहिए, इसमें **होलिका यंत्र** तथा **मनोकामना साफल्य माला** की आवश्यकता पढ़ती है। यह साधना 17.03.22 को सम्पन्न करनी है। साधक को चाहिए, कि अपने सामने चौकी पर लाल वस्त्र बिछाकर हल्दी से रंगे हुए चावलों की दो ढेरियां बना लें। पहली ढेरी पर यंत्र को स्थापित करें, दूसरी ढेरी पर मनोकामना साफल्य माला को स्थापित कर दें। दाहिने हाथ में जल लेकर अपनी मनोकामना कह कर जल भूमि पर छोड़ दें। इसके बाद दिशा बन्धन करें। बायें हाथ में अक्षत लेकर निम्न मंत्र का उच्चारण करें -

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूताः भूमि संस्थिता।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

- फिर अपने चारों ओर उस अक्षत को छिड़क दें। फिर गुरु पूजन करें।
- तत्पश्चात् संक्षिप्त भैरव पूजन करें।
- इसके बाद यंत्र पर सिन्दूर का तिलक करें, अक्षत चढ़ायें तथा लाल पुष्प से पूजन कर, निम्न मंत्र का उच्चारण करें -

मंत्र : ।। ॐ क्लीं क्लीं फट्।।

- इस मंत्र का 21 बार उच्चारण करते हुए धूप, दीप दिखायें और नैवेद्य चढ़ायें। इसके बाद निम्न मंत्र का 11 माला मंत्र-जप करें -

मंत्र : ।। ॐ क्लीं हुं फट्।।

- प्रत्येक माला की समाप्ति पर एक काली मिर्च यंत्र पर चढ़ायें।
- साधना-समाप्ति के बाद काली मिर्च यंत्र और माला को होलिका की अग्नि में विसर्जित कर दें, जिससे साधक के पाप, ताप और दोष तीनों जलकर भस्म हो जायें।
- तेल का दीपक एवं सुगन्धित अगरबत्ती साधना काल में अवश्य हीं जलती रहनी चाहिए।

यह साधना इस विशेष तिथि को सम्पन्न करने पर अवश्य ही साधक को सफलता प्रदान करती है, जो साधक के लिए सौभाग्यप्रद है।

साधना-सामग्री - 450/-

संकट मोचन
काली साबर साधना

साबर साधनाओं में भैरव साधना और महाकाली सांधना प्रमुख साधना मानी गई हैं, तंत्र के क्षेत्र में गुरु गोरखनाथ द्वारा रचित ये साधनाएं तीव्र और तीक्ष्ण प्रभाव देने वाली मानी गई हैं।

जीवन ऐसा नहीं है कि बाधाएं पूर्व सूचनाएं देकर आपके सामने उपस्थित हों। जिन बाधाओं के बारे में जानकारी है उन बाधाओं का सामना करने के लिए तो व्यक्ति अपने आप को तैयार कर देता है लेकिन जो बाधाएं आकस्मिक रूप से आती हों, उनके लिए व्यक्ति तैयार नहीं रहता हैं और वे उसे एकदम गहरी पीड़ा देकर जीवन की धारा ही बदल देती हैं। कई व्यक्तियों के जीवन में जो आकस्मिक उतार चढ़ाव देखे गए हैं, वे इसी कारण होते हैं कि उनका शक्ति संचय कमजोर होता है और संसार में थोड़ा बहुत प्राप्त करने के पश्चात गर्व से भर जाते हैं और इसी गर्व; घमण्ड के कारण आकस्मिक बाधा आने पर अवनति भी तीव्र होती है।

ऐसी स्थिति में निश्चय ही साधक को साबर साधनाओं का सहयोग लेना चाहिए जिसमें भैरव और काली की विशेष साधना की जाती हैं। महाकाली जहां महाकाल शिव की शक्ति स्वरूपा हैं, वहीं भैरव शिव के द्वारपाल हैं और जिस घर में, जिस व्यक्ति के जीवन में भैरव और महाकाली समाहित हो जाएं तो उसे संसार की बाधाओं से डरने की क्या आवश्यकता है?

साधना विधान

किसी भी शनिवार की रात्रि को स्नान कर गहरे नीले वस्त्र धारण कर नीले रंग के आसन पर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाएं। अपने सामने तेल का दीपक जला दें। **काली यंत्र** के साथ **गुरु चित्र** भी स्थापित करें, फिर गुरु पूजन करके चार माला गुरु मंत्र जप करें। यंत्र का पंचोपचार पूजन करें फिर काली **हकीक माला** से निम्न की दो माला मंत्र जप करें –

मंत्र

काली रात एक नदी तीर सात समुद्र का जगमग नीर,
कामाख्या रानी का गौरी पिण्डा, भैरवनाथ हरो सब पीरा,
शब्द रांचा पिण्ड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

- इसके बाद साधक अपने हाथ में जल ले और कुछ काले तिल के दाने, चावल एवं पुष्प की पंखुड़ियों को लेकर संकल्प ले कि अमुक नाम अपनी अमुक प्रकार की पीड़ा के निवारण के लिए काली साबर प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूं अतः लाभ शीघ्र मिले।
- ऐसा कहकर वह सभी सामग्री (तिल आदि) किसी ताम्र पात्र में भरे जल में डाल दे तथा प्रत्येक बार के मंत्र उच्चारण के साथ ही कुछ तिल के दाने उसी पात्र में डालता रहे। ऐसा 51 बार करें।
- साधना समाप्ति पर उस पात्र को स्वयं के सिर पर से घुमाकर घर से कुछ दूर दक्षिण दिशा में पात्र की सभी सामग्री फेंक आएं। इसी प्रकार अन्य रोगी के लिए प्रयोग करें तो
- रोगी का नाम लें और अंत में सभी सामग्री को रोगी के सिर पर से घुमाकर फेंक दे।
- साधना समाप्ति के पश्चात यंत्र एवं माला को घर से दूर कहीं निर्जन स्थान फेंक दें ।

साधना सामग्री (काली यंत्र एवं माला) - 450/-

होली बस रंगों का एक पर्व ही नहीं

आमोद-प्रमोद का एक अवसर ही नहीं है

होली तो एक संदेश है स्वयं में

10.03.22 से होली तक

जीवन के चार पुरुषार्थों में से एक पुरुषार्थ 'काम' को सिद्ध कर लेने का

जिसके आगे पुरुषार्थों की सफलता में कोई संदेह न रह जाए.... और यह सम्भव है इस साधना से.....

खुद को खुद के समीप ला देने वाला होता है यह अवसर और क्षण - होली!

जब अपने ही अंदर बिखरे रंगों से अपना परिचय होता है।

जब आकाश की सहज नीलितिमा भी आच्छादित सी हो जाती है अबीर-गुलाल के उड़ते अनेक रंग के मेघों के बीच, जब फूट पड़ती है उन्मुक्त हास्य की वे किलकारियां जो पिचकारियों से बिखरे रंगों से भी कहीं ज्यादा गहरी होती है . . .

और दो हृदयों के परस्पर घर्षण से उत्पन्न चिंगारियों में भस्म हो जाता है

वह सारा अंत:कलुष जिसका भस्म होना होलिका-अग्नि में किसी भी यज्ञाहुति को समर्पित करने से कहीं अधिक आवश्यक होता है।

होली तो मन को उन्मुक्त कर देने का संदेश होती है, पर्व की किसी भी जड़ धारणा के सर्वथा विपरीत। इस पर्व पर यदि मन ही उन्मुक्त न हो सका, तो उसमें किसी नूतन रंग के प्रविष्ट होने की धारणा भी कैसे बन सकेगी?

रति प्रीति साधना
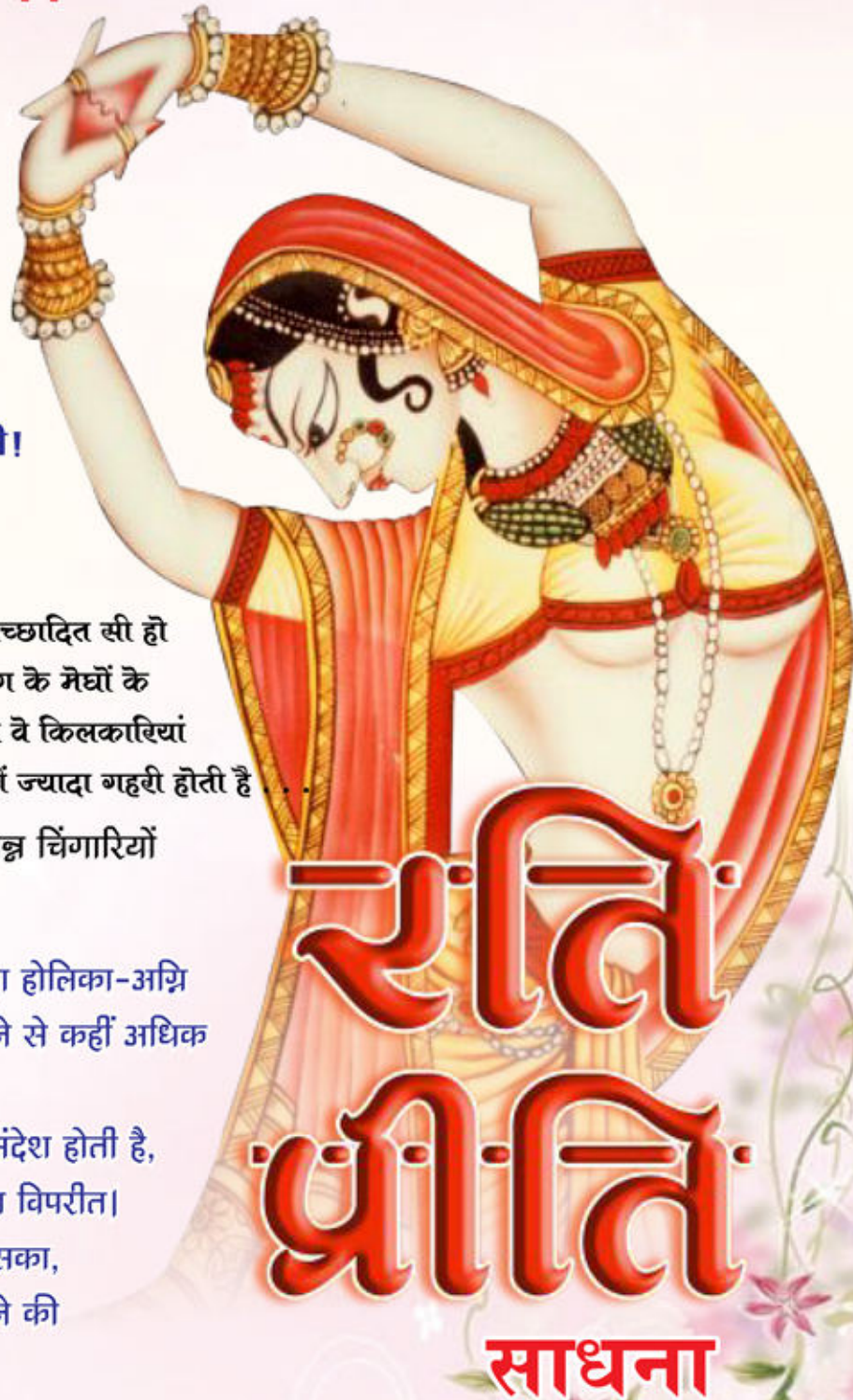
ज्यों पृथ्वी के गर्भ में प्रवाहित कोई जलधारा सहसा पृथ्वी का कठोर आवरण बेध एक फुहार बन पहले आकाश का चुम्बन करके आगे बढ़ती है और उछाह के साथ फिर धरा पर बिखर नर्तन सा करती हुई, कलकल-छलछल की मधुर संगीत रश्मियों को रचती अपने पथ पर प्रयाण कर देती है, उसी को तो जीवन में उतार देने का इंगित लेकर प्रतिवर्ष ही आती रहती है होली! आनंद की, मधुरता की, प्रसन्नता की और खिलखिलाहट की एक नहीं कई-कई जलधाराएं किसी एक या दो व्यक्ति में नहीं, सभी में तो प्रवाहित की हैं इस प्रकृति ने! प्रकृति के वितरण में न तो कहीं से कृपणता होती है, न असमानता। अंतर पड़ जाता है, तो केवल इस बात से, कि किसने अपने हृदय के आवरण को कितना जटिल कर लिया है, किसने उनको रूढ़वादी परम्पराओं में कितना उलझा दिया है और जकड़ दिया है स्वयं की ही खेद, पीड़ा व कुंठाओं के जाल में।

समाज में कुछ निर्धारक नियमों का होना आवश्यक है, उनका पालन-पोषण करना भी आवश्यक है, क्योंकि यदि ऐसा न हो, तो जन्म हो जाएगा उच्छृंखलता व व्याभिचार का।

कामतत्व की इस जगत में उपस्थिति से ही यह जगत सरस है, गतिशील है – इस तथ्य की उपेक्षा कर देना, न तो भौतिक अर्थों में तर्क संगत होगा और न ही आध्यात्मिक सन्दर्भों में ही, **क्योंकि अध्यात्म के क्षेत्र में भी जिस वेग के माध्यम से कुण्डलिनी जागरण संभव होती है, सहस्रार भेदन के द्वारा ईश्वर या ब्रह्म से पूर्ण तादात्म्य की स्थिति निर्मित होती है, परमानंद अथवा समाधि की उपलब्धि होती है, वह वेग मूलत: कामतत्व का ही वेग होता है। काम तत्व स्वयं में न श्लील है न अश्लील। यह केवल एक स्पन्दनशील तत्व है और निर्भर करता है किसी भी व्यक्ति के मानस पर, कि वह इस स्पन्दन को किस दिशा में गतिशील करता है।**

केवल ऊर्ध्वगामी अथवा अधोगामी ये दो गतियां ही नहीं, कामतत्व की अनेकानेक गतियां संभव हैं। एक कवि इसी स्पन्दन के माध्यम से काव्य सृजित कर सकता है, तो एक संगीतविज्ञ कोई राग। योगी इसी तत्व को परिवर्तित कर लेते हैं समस्त चराचर के प्रति एक आत्मीयता के रूप में, तो वहीं दार्शनिक के लिए सहायक हो जाता है यह गूढ़ रहस्यों का निदान प्राप्त करने में।

काम तत्व का निरूपण केवल यौन रूप से करना अपर्याप्त है। कामतत्व को तो केवल एक सम्पूर्ण दृष्टि के माध्यम से ही परखा जा सकता है और तब इस स्पन्दनशील तत्व के माध्यम से समस्त प्रकृति में व्याप्त उस स्पन्दन को पहचाना जा सकता है, जो वास्तव में एक दैहिकता न होकर साक्षात् ईश्वरीय चित् विलास होता है।

काम स्वयं में कोई घृणित भावभूमि है ही नहीं, क्योंकि इसकी उत्पत्ति साक्षात् भगवान ब्रह्मा के मन द्वारा ही संभव हुई है।

भगवान ब्रह्मा के हृदय पक्ष के मंथन द्वारा उत्पत्ति होने के कारण ही कामदेव की एक उपमा 'मन्मथ् भी कही गयी है। मन के मंथन द्वारा उत्पन्न होने वाला यह देव इसी' कारणवश किसी के भी मन में ऐसी हलचल मचा देने में समर्थ है जिस हलचल के उत्पन्न हो जाने के पश्चात् ही जीवन की जड़ता दूर हो सकती है और मन पर पड़े हुए बोझिलताओं के आवरण स्वत: ही विदीर्ण होने की स्थिति में आ जाते हैं।

उन्मुक्त हृदय में ही अध्यात्म की सुरभि का प्रवेश हो सकता है, इसी कारणवश कामदेव की उपासना केवल साधना पक्ष का ही नहीं वरन् धर्म का भी अविभाज्य अंग रही है।

कामदेव की साधना ठीक उसी प्रकार की सहज व सात्विक साधना है जिस प्रकार से कोई अन्य पुरुषार्थ संबंधी साधना।

यूँ तो होली पर किसी भी साधना को, चाहे वह तांत्रोक्त हो अथवा मांत्रोक्त, उसे सम्पन्न करने का सिद्ध मुहूर्त होता है और जहां साधनात्मक

दृष्टि से होली के मुहूर्त की बात आती है वहां यह उल्लेखित करना आवश्यक हो जाता है, कि होली का तात्पर्य केवल होलिका दहन की रात्रि नहीं वरन होलिका दहन की रात्रि के पन्द्रह दिन पूर्व से लेकर दहन के पश्चात् की पन्द्रह रात्रियां भी समान प्रभाव रखती हैं।

इस पर्व की मुख्य भावना को ध्यान मे रखकर इस लेख में प्रस्तुत विवेचन के आधार पर साधकों के लिए इस वर्ष एक दुर्लभ साधना प्रस्तुत की जा रही है, जिसका किसी अन्य साधनात्मक ग्रंथ में प्राप्त होना कठिन ही है। **रति-प्रीति के संयुक्त प्रभावों पर आधारित इस साधना को साधक अथवा साधिकाएं दिनाँक 10.03.22 से होली तक किसी भी रात्रि में या आगे आने वाले किसी शुक्रवार की रात्रि में सम्पन्न कर सकते हैं।**

साधना विधान

इस साधना को सम्पन्न करने के इच्छुक साधक को चाहिए कि उपरोक्त दिनाँकों के मध्य किसी भी तिथि में अथवा होलिका दहन की रात्रि में स्नान आदि कर दस बजे के आसपास पीले वस्त्र धारण कर, पूर्व दिशा की ओर मुख कर, पीले रंग के आसन पर बैठे तथा साधना की समस्त आवश्यक सामग्रियां पहले से ही अपने पास रख लें, जिससे बार-बार उठना न पड़े। साधना के मध्य बार-बार उठना व्यवधान की श्रेणी में आता है, जो सफलता को संदिग्ध बना देता है। आसन पर बैठने के बाद दत्तचित्त भाव से पिसी हल्दी से किसी तीली की सहायता से एक स्वच्छ स्टील की थाली या तांबे की थाली में नीचे दिये यंत्र का अंकन करें। यदि आप चाहें तो इसे भोजपत्र पर भी अंकित कर सकते हैं।

अंकन का केवल स्पष्ट होना आवश्यक है, इसमें चित्रकारीय कौशल की आवश्यकता नहीं है। अंकन को करने के पश्चात् जहां-जहां 'श्रीं' एवं 'ह्रीं' बीजाक्षर अंकित है, वहां **एक-एक लघु नारियल** को स्थापित करें तथा अंकन के मध्य में जहां **'क्लीं'** अंकित है उसके ऊपर **कामदेव यंत्र** स्थापित करें। सभी लघु नारियलों का पूजन श्वेत चंदन, अक्षत, सुगंध (इत्र) एवं पुष्प की पंखुड़ियों से करें तथा कामदेव यंत्र का पूजन प्रत्येक बार कुंकुम से यंत्र पर एक टीका या बिन्दी लगाते हुए निम्न प्रकार से मंत्रोच्चार करते हुए करें -

ॐ कामाय नमः, ॐ कामदेवाय नमः,
ॐ मन्मथाय नमः, ॐ वसंतसखाय नमः,
ॐ स्स्मरशीलाय नमः, ॐ पुष्पधन्वने नमः
ॐ मदनाय नमः, ॐ कंदर्पाय नमः

इसके पश्चात् कुछ पुष्प की पंखुड़ियां, अक्षत एवं सुगंध यंत्र पर भेंटकर, अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति की प्रार्थना करते हुए, शुद्ध घी का एक बड़ा दीपक जलाकर **मन्मथ माला** से निम्न मंत्र की पांच माला मंत्र जप सम्पन्न करें -

।। ॐ रति विलास प्रीति प्रीत्यर्थे क्लीं सौः ॐ।।

Om Rati Vilaas Preeti Preetyarthe Kleem Souh Om

मंत्र जप के बाद रात्रि में साधना स्थल पर ही सोएं तथा दूसरे दिन प्रातः सभी सामग्री को किसी सरोवर या नदी में विसर्जित कर दें। सिर्फ माला अपने पास रखें एवं आगे भी 15 दिनों तक उपरोक्त मंत्र की नित्य प्रति एक माला मंत्र जप सम्पन्न करते रहें, तो विशेष लाभप्रद होता है।

कामदेव से संबंधित अन्य साधनाएं तो फिर भी सीमित अर्थों से युक्त अथवा एकांगी कही जा सकती हैं, किन्तु प्रस्तुत साधना विधि को सम्पन्न कर साधक **'काम'** को एक पुरुषार्थ के रूप में सिद्ध कर ही लेता है, इसमें संशय के लिए कोई भी स्थान नहीं।

साधना सामग्री पैकेट-570/-

वेद भारतीय संस्कृति के आदि उद्‌गम हैं। वेद का ज्ञान होना प्रत्येक भारतीय का परम कर्तव्य है।

यदि हम वेद का थोड़ा भी अध्ययन करें तो धर्म के तत्त्व को समझने एवं तद्नुसार पुरातन भारतीय संस्कृति का ज्ञान एवं उसके महत्त्व को पूर्णरूपेण अपने व्यवहार में ला सकते हैं।

क्योंकि सनातन हिन्दू धर्म हमें हमारे जीवन में कर्मठ बनने एवं सभी से प्रेम करने की हिदायतें देता है,

ऐसा ही वेद मंत्रों में आध्यात्मिक एवं भौतिक तत्त्व ज्ञान एवं समाधान भरा पड़ा है।

कुछ छोटे-छोटे वाक्यों को यहाँ उद्धृत किया जा रहा है जो सूक्तियों के रूप में हैं। जिनको पढ़कर आपको अपने पूर्वजों के ज्ञान-विज्ञान के अनुसंधान का ज्ञान हो सकेगा कि कैसे यह छोटे-छोटे वाक्य हमारे जीवन निर्माण में पथ प्रदर्शन करते हैं।

एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति।–ऋग. 1/164/46

एक ही परमात्मा को ज्ञानी लोग अनेक नामों से पुकारते हैं। एक ही ईश्वर के ही विभिन्न नाम हैं।

न वा उ एतन्म्रियसे न रिष्यते।–यजु. 23/16

आत्मा न कभी मरता है, न कभी क्षति होती है। अत: सन्मार्ग पर चलते हुए मरने से मत डरो।

ईशानः बधं यवय।–ऋग. 1/2/5

मनुष्य अपनी परिस्थितियों का निर्माता आप है। जो जैसा सोचता है और करता है वह वैसा ही बन जाता है।

सायं प्रातः सौमनसो वो अस्तु–अथर्व. 3/30/7

प्रात: एवं सायं आत्म-चिन्तन अवश्य करना चाहिए। आत्मचिन्तन से ही हमारे आध्यात्मिक स्तर में उन्नति होती है।

सुगः पन्था अनृक्षर आदित्यास ऋतं यते।–ऋग. 1/41/14

सत्य मार्ग पर चलने वालों का जीवन सरल हो जाता है। अत: सत्य के मार्ग का अनुशरण करें।

दिवमारूहत् तपसा तपस्वी।–अथर्व. 13/2/25

ऊँचा वह उठता है, जो तप करता है। तप किये बिना किसी की आत्मोन्नति नहीं हो सकती। साधना तप का ही दूसरा नाम है।

ॐ देवानामपि पन्थामगन्म।–अथर्व. 19/59/3

उस मार्ग पर चलो जिस मार्ग पर सज्जन पुरुष चलते हैं। उद्दण्डता और अनीति के मार्ग पर चलने वाला अंत में दु:ख ही पाता है।

स्वयन्तो नापेक्षंते।–यजु. 30

तेजस्वी दूसरों का मुँह नहीं ताकते। भगवान भी उन्हीं की सहायता करते हैं जो स्वयं अपना कर्म करते हैं।

देवा न वियन्ति नो च विद्विषतेमिथः।—अथर्व. 3/30/4

सत्पुरुष लड़ाई-झगड़ा एवं ईर्ष्या-द्वेष नहीं करते क्योंकि वे जानते हैं कि इससे कुछ लाभ नहीं है।

समानी प्रपा सहवोऽन्नभागः।—अथर्व. 3/30/3

सब परस्पर मिलकर खान-पान किया करो। सहयोग और प्रीतिभोज से प्रेमभाव बढ़ता है।

कद व ऋतं कद नृतं क्व प्रज्जा।—ऋग. 1/105/5

क्या उचित है क्या अनुचित यह निरन्तर विचारते रहो। अन्ध-परम्परा को छोड़कर अपने विवेक का आश्रय ग्रहण करो।

यद् भद्रम् तन्न आ सुव।—यजु. 30

जो श्रेष्ठ है उसी को ग्रहण करो। जो बुरा है उसे छोड़ो, चाहे अपना हो या पराया।

दैव्याय कर्मणे शुन्ध्यध्वम्।—यजु. 1/13

पवित्र बनो और शुभ कार्य करो। शुभ कार्य करने वाले का जीवन ही पवित्र बनता है।

भूत्यै न प्रमदितव्यम्।—तैत्तरी य. 1/10

शुभ कार्यों में प्रमाद न करो। प्रमाद करने से शुभ समय निकल जाता है।

ब्रह्मभ्यः कृणुता प्रियम।—अथर्व. 12/2/34

बड़ों से शिष्टाचार का व्यवहार करो। जो बड़ों का सम्मान नहीं करते वे उन्नति नहीं करते।

मा हिंसी स्तन्वा प्रजाः।—यजु. 30

अपने देह से किसी प्राणी को कष्ट न पहुँचाओ। किसी को अनीतिपूर्वक दुःख देना ही असुरता है।

पावकानः सरस्वती।—ऋग. 1/3/10/12

विद्या से मनुष्य पवित्र बनते हैं। विद्या विहीन मनुष्य अन्धकार में डूबा हुआ पशु है।

उद्यन्त्सूर्यं इव सुप्तानां द्विषतां वर्च आददे।

—अथर्व. 7/16/2

सूर्योदय तक भी जो नहीं जागते धीरे-धीरे उनका तेज नष्ट हो जाता है। जल्दी सोना, जल्दी उठना शरीर और मन की स्वस्थता को बढ़ाता है। यह साधक की विशिष्ट पहचान है।

अन्नं न निन्द्यात्। तद्व्रतम्।—तैत्तरीय. 3/7

अन्न का तिरस्कार न करो, वह पूजनीय है। जूठन छोड़कर अन्न भगवान का तिरस्कार न करो।

वियात विश्व मन्त्रिणम।—ऋग्वेद 1/86/10

जीभ पर काबू रखो, स्वाद के लिए नहीं अपने स्वास्थ्य के लिए खाओ।

अनुष्वधं भीम आवावृधे शवः।—ऋग. 1/81/4

जैसा अन्न खाते हैं, वैसा मन बनता है। सतोगुणी भोजन से ही मन की सात्विकता स्थिर रहती है।

पिपेश नाकं स्तृभिर्दनूनाः।—ऋग. 1/68/10

संयमी मनुष्य स्वर्ग को भी जीत लेता है। शक्ति संग्रह का मूल स्रोत संयम है।

सर्वान् पथो अनृणा आक्षिपेम।—यजु. 32

जो ऋण-मुक्त है उसकी शीघ्र उन्नति होती है। ऋण-ग्रस्त व्यक्ति दिन-दिन घुलता ही जाता है।

उतोरयिः पृणतो नोपदस्यति।—ऋग. 10/117/7

दान देने वाले की सम्पदा घटती नहीं बढ़ती है। सत्कार्यों में लगाया धन, बैंक में जमा पूँजी के समान सुरक्षित है।

मातृ देवो भव। पितृ देवो भव। आचार्य देवो भव।—तैत्तरीय. 1/10

माता-पिता और आचार्य को देव मानो। यह तीनों प्रत्यक्ष देव हैं।

सत्यमेव जयते नानृतम।—मुण्डक 3/1/5

सत्य ही जीतता है, असत्य नहीं। झूठ में विजय प्रतीत हो सकती है पर स्थिरता सत्य में ही है।

वय मादित्य व्रते तवा नागसो।—ऋग. 1/24/6/15

जो मर्यादाओं का पालन करता है, वही श्रेष्ठ साधक है, वही पाप से बचता है। वही गुरु की प्रसन्नता प्राप्त कर सकता है।

संकलन : **राजेश गुप्ता 'निखिल'**

क्या क्रोध लाभदायक है?

- क्रोध विनाश का कारण तथा अहं का दूसरा रूप है।
- यदि क्रोध से दोस्ती न की जाय, तो ज्यादा लाभदायक होता है।
- क्रोधी व्यक्ति कभी भी जीवन के सम्पूर्ण लक्ष्य के रास्ते से गुजर नहीं सकते।

वह मनुष्य सर्वत्र पूजनीय होता है, जिसमें ये लक्षण पालन करने की क्षमता हो–

धृति – धैर्य धारण करना

क्षमा– बदला लेने की शक्ति रखते हुए भी बदला नहीं लेना।

ब्रह्मचर्य – दस-इन्द्रियों पर पूर्ण संयम रखना।

अस्तेय –चोरी का अभाव।

धी – बुद्धि।

विद्या – अध्यात्म ज्ञान।

सत्य –विपरीत परिस्थितियों में भी सत्य बोलना।

अक्रोध – अपमानित होने पर भी क्रोध न करना।

यदि मनुष्य की बुद्धि क्रोध को जीतने के लिए अक्रोध को न उत्पन्न करे, तो यह शरीर रूपी रथ अपने रास्ते से भटक कर अंधेरे में चला जाता है। जहां रोशनी को सुख का प्रतीक माना जाता है, वहीं अंधेरा दुःखों का कारण बनता है।

ऐसा कहा जाता है, क्रोध एक विषधर सर्प होता है, लेकिन क्रोध विषधर से बढ़कर होता है, क्योंकि सर्प एक बार डसता है, तो माया, मोह तथा सांसारिक सुख-दुःख से मुक्त करा देता है, लेकिन क्रोध मानव को बार-बार डसता है तथा दुःख पहुंचाता है।

मानव सर्वोच्च बुद्धिमान है, लेकिन क्रोध में अच्छे काम तो कर ही नहीं सकता। अच्छे रास्ते पर चलने के लिए क्रोध पर विजय पाना होगा, तभी हमारा जीवन सफल हो सकेगा।

क्रोध को अक्रोध से ही जीता जा सकता है।

यदि वस्तुतः आपको किसी ने गाली दे दी और आप क्रोध में आकर उस पर बरस पड़े, उससे झगड़ने लगे, तो मामला गंभीर भी हो सकता है; परन्तु आप उसकी असन्तोषजनक बात को सुनकर नजरअंदाज कर दें, तो मामला शान्त हो जायेगा।

कई महापुरुष हमारे सामने आये, जिनमें भगवान बुद्ध, शंकराचार्य, रामकृष्ण परमहंस, ब्रह्मर्षि वशिष्ठ प्रमुख हैं। इन महापुरुषों का कहना है–"क्रोध से खेलोगे तो जल जाओगे। क्रोध जब भी सामने आये तुम पानी समझ कर पी जाओ, तभी तुम्हारा जीवन सफल होगा और मानवता की ओर बढ़ते चले जाओगे। यदि नहीं, तो यह एक दिन तुम्हें निगल जायेगा।"

पूज्य गुरुदेव ने कहा है– "जिसने क्रोध को अक्रोध में बदल कर पी लिया, उसके चरण एक दिन लक्ष्य को अवश्य चूमेंगे।"

क्रोध जीवन की उन्नति में एक दीवार है। जब तक हम इस दीवार को पूरी तरह तोड़ नहीं देंगे, तब तक हमें मार्गदर्शन की प्राप्ति सम्भव नहीं हो

अक्रोध कैसे प्राप्त हो?

क्रोध पर विजय कैसे प्राप्त हो?

इसका ज्ञान तो सद्गुरु ही करा सकते हैं।
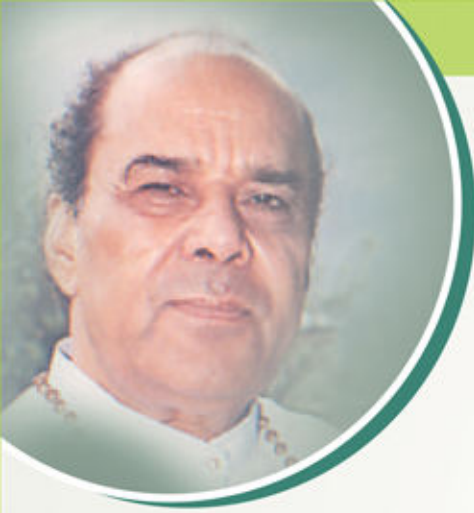
महापुरुष बुद्ध, शंकराचार्य, ब्रह्मर्षि वशिष्ठ और अब वर्तमान में सद्गुरुदेव डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली जी ने कहा है–

क्रोध से खेलोगे, तो जल जाओगे।

पायेगी। इसके लिए मानव को क्रोध पर काबू पाना होगा, सत्यता का पालन करना होगा, शरीर को पवित्र बनाना होगा व मन में उदारता लानी होगी। क्रोध मानसिकता का विकृत रूप है, जो क्रोधावेश में अपनी सामान्य स्थिति से विकृत स्थिति को प्राप्त करता है और उस आवेश में अनगिनत अनर्थ करने पर उद्यत हो जाता है, जिससे व्यक्ति की मानसिक स्थिति तो बिगड़ती ही है, साथ ही साथ उसके द्वारा किये गए दुर्व्यवहार से अनेक व्यक्तियों को कष्ट पहुंचता है।

क्रोध की ज्वाला में सद्विचार, सद्भाव, शान्ति सभी भस्म हो जाते हैं, जबकि ये सभी चीजें मानवीय स्वभाव के भूषण हैं। इनके द्वारा कठिन से कठिन काम को पूरा किया जा सकता है।

क्रोध के त्याग का सभी धर्म ग्रंथों ने उपदेश दिया है। क्रोध प्रतिशोध का प्रबल सहायक है, जो कि हमेशा विनाश के पथ पर ही अग्रसर करता है। जितने भी अन्यायी इस पृथ्वी पर पैदा हुए हैं, उन्होंने अहंकार और क्रोध में बहकर सिर्फ विनाश ही किया है। इतिहास में इसके उदाहरण हैं–महाभारत, राम-रावण का युद्ध आदि। यहाँ तक कि सत्यवादी हरिश्चन्द्र को सत्य की निष्ठा बचाने हेतु विश्वामित्र जैसे ऋषि के क्रोध में एक सम्राट के पद से दासता तक की स्थिति तक झेलनी पड़ी।

इसलिए मानव जीवन में क्रोध खलनायक का स्थान रखता है। क्रोध किसी के लिए स्वीकार्य नहीं है।

–लेकिन क्रोध पर विजय प्राप्त करने का ज्ञान तो सद्गुरु ही दे सकते हैं।

('मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान' पत्रिका से)

आत्मनियंत्रण से कल्याण

गीता में कहा गया है–

रागद्वेषवियुक्तैस्तु विषयानिन्द्रियैश्चरन्। आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति।।
प्रसादे सर्वदु:खानां हानिरस्योपजायते। प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते।। (2/64-65)

'जिसका अन्त:करण अपने वश में है, ऐसा राग-द्वेष से रहित पुरुष अपने अधीन की हुई इन्द्रियों के द्वारा विषयों को भोगता हुआ प्रसाद (अन्त:करण की प्रसन्नता) को प्राप्त होता है और उस प्रसाद (प्रसन्नता) से सम्पूर्णता दु:खों का अभाव हो जाता है तथा उस प्रसन्नचित्त वाले पुरुष की बुद्धि शीघ्र ही अच्छी तरह स्थिर हो जाती है।

आइये, गीता के उपर्युक्त श्लोक में निहित भावों से सम्बन्धित कुछ प्रसङ्गों पर विचार करें–

इन्द्र की भेजी हुई उर्वशी नाम की परम सुन्दरी अप्सरा अर्जुन को विचलित करने के लिये उनके पास जाती है और अपने हाव-भाव और संकेतों से उन्हें अपनी ओर आकृष्ट करने का प्रयत्न करती है। परंतु तपस्वी अर्जुन पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता और वे अविचलित भाव से अपनी निष्ठा में सुदृढ़ रहते हैं। अपने समस्त मूक उपायों को आजमा लेने के उपरान्त अन्त में उर्वशी अर्जुन से कहती है–

'अर्जुन! क्या तुम मुझको नहीं देख रहे हो?' अर्जुन उत्तर देते हैं–'देवि! मैं तुम्हें देख रहा हूँ, तुम मुझे माता कुन्ती और माद्री के रूप में दिख रही हो।'

मन की ऐसी उच्चावस्था निरन्तर तप और आत्मसंयम के अभ्यास से उत्पन्न होती है, भोगों के अमर्यादित भोग से वासनाओं की वृद्धि, दु:ख और बन्धन होता है। भोगों का वास्तविक आनंद उनमें लिप्त होने से नहीं, अपितु त्याग और संयमपूर्वक उनका मर्यादित उपभोग करने से प्राप्त होता है।

शरीर स्वस्थ रखना हम सभी का कर्त्तव्य है

स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है

शरीर के प्रत्येक अंग को सुडौल बनाना आवश्यक है मन को हर समय जवान रहना आवश्यक है तो अपनाइये

और भगाइये शारीरिक मानसिक रोग

विधि : बैठे हुए, दायीं ओर के घुटने को मोड़ते हुए एड़ी को नितंब के साथ लगा दें। बायां पांव दायें घुटने के ऊपर से ले जाते हुए भूमि पर रखें, पांव का पूरा पंजा घुटने से आगे न जाये और बायां घुटना छाती के मध्य में रहे। दायें हाथ को बायें घुटने के ऊपर से ले जाते हुए बायें पैर के तलवे को अंगूठे की ओर से पकड़ लें। बायां हाथ पीठ के पीछे रखें, पीठ को सीधा रखते हुए गर्दन को घुमाकर श्वास भरते हुए ठोढ़ी को बायें कंधे की ओर ले जाएं। मेरुदंड को अपने अवलंब पर पूरा मोड़ दें ताकि दोनों कंधे एक रेखा में हो जाएं। जितना अधिक आप मोड़ देंगे, उतना ही अधिक लाभ होगा। मोड़ देने से घुटना और दबेगा जिससे बायीं ओर के आमाशय, क्लोम ग्रंथि, बड़ी आंत और प्लीहा प्रभावित होंगे और दायीं ओर दबाव पड़ने से यकृत और बड़ी आंत प्रभावित होगी। दोनों गुर्दे व छोटी आंतें भी बलवती होंगीं। ध्यान रहे, कमर को झुकाना नहीं है। यही क्रिया दूसरी ओर से भी करें। ध्यान रीढ़ की हड्डी पर।

इस आसन में श्वास भरते हुए जाना है। यदि अधिक देर रुकना हो तो साधारण श्वास लें। नये साधक शुरु-शुरु में अपने पांव को पूरा भूमि पर रखते हुए घुटने से थोड़ा आगे भी ले जायें तो भी कोई बुराई नहीं है, परंतु घुटना सीधा रहे ताकि साधक अपनी बाजू को घुटने के ऊपर से ले जाकर पांव को या टखने को पकड़ सके या कोहनी से घुटने को दबाकर अधिक मोड़ दे सके। उसकी जंघा पाचन संस्थान के दायें तथा बायें भाग को अधिक-से- अधिक दबाये, इस बात का भी ध्यान रखें।

लाभ : इस आसन के करने से बांह, कमर, नाभि से निचला भाग और छाती के स्नायुओं में खिंचाव होने के कारण बहुत लाभ होता है और इनमें लचक पैदा होती है। इससे पाचन क्रिया अच्छी होकर पाचन शक्ति बढती है, पेट के अनेक रोग दूर होते हैं। मूत्रदाह व मधुमेह रोग में विशेष लाभ देता है। हर प्रकार का कमर दर्द दूर होता है। पाचन यंत्र, विशेषकर, क्लोम (पैंक्रियास) और यकृत पुष्ट होते हैं। फेफड़ों और हृदय को बल मिलता है।

अर्द्धमत्स्येंद्रासन

Any monday

Laugh and Dance through adversities

Anand Tandav Sadhana

Can you remember when you last laughed freely or felt yourself enjoy the moments of life?

Most probably you do not recall any such mo-ment. Modern life with its trials and travails has so crushed our spirits that we have even forgotten how to laugh, have fun and enjoy oneself.

When we talk of Sadhanas we do not mean be-coming serious and not allowing even a trace of amuse-ment on one's features. Our Rishis sure knew how to live life to the full and this is why they also devised Sadhanas that could add beauty, art, music and dance to our life. Even our Gods are not beings whose only business is to punish the evil, rather their own lives are good examples of how life ought to be lived.

And the God who is an epitome of totality is Lord Shiva whom we call not Dev (God) but Mahaadev (the greatest god). His numerous forms touch upon the various aspects of life. As Rudra he destroys the evil and as Vaidyanath he banishes ailments. He ap-pears in so many forms that it would take many pages to write about all of them.

One of his forms is that of Natraaj — the Divine Dancer performing Taandav dance. This dance has two forms. Pralay Taandav is performed by the Lord when he destroys evil, while he breaks into Aanand Taandav when he is in a joyous mood.

Dance along with music in fact are the greatest means of expressing the joy of one's heart and soul. they uplift the spirit and make one feel light, worryless And happy. They are wonderful means of banishing the poison of worries and stress and making spring he elixir of joy and peace from within.

Aanand Taandav Sadhana of Lord Shiva is a wonderful ritual through which a Sadhak can banish boredom, laziness, indolence; worries and tensions from his life and instil into it a divine freshness. It is also an amazing ritual though which professional dancers and musicians could become skilled in their arts. I have myself seen a danseuse attain to world fame and recognition through this Sadhana which revered Sadgurudev revealed to her.

This Sadhana if you ask me is a must for every Sadhak for through it one could remain fresh, joyous and unsullied even in the poisonous atmosphere of to-day like a lotus that remains untainted by the mud in which it grows. Whatever one's field one could use this Sadhana to instil with oneself new enthusiasm and the drive to achieve in spite of all odds.

This Sadhana must be tried on a **Monday.**

After 9 pm in the night have a bath and wear white clothes. Sit on a white mat facing North or North East. Cover a wooden seat with white cloth. On some white flowers place **Natraj Yantra** in a copper plate. Offer on it rice grains and vermilion. Then make six-teen marks with vermilion on it chanting **Om Namah Shivaay.** Each time you make a mark contemplate. that one by one the divine sixteen virtues are being instilled into your form so that you could live life to the full with joy and happiness. Light a ghee lamp. Then chant four round of Guru Mantra. Thereafter chant five rounds of this Mantra. by **Rudaksh Rosary.**

Om Aanaand Taandavaay Namah.

The next morning go and offer the rosary and Yantra in a temple of Lord Shiva. This is a Sadhana that could bring about a wonderful transformation in your life and make you dance through the problems and adversities of life. It is a ritual of offering all the poison of one's troubles in the feet of Lord Shiva and gaining from Him divine elixir that makes one capable of smiling even in the face of life's various anxieties.

Sadhana Articles — 540/-

Rags to Riches

Dhanda Tantra

Sadhanas contemplate a love for Nature. and its various seen and unseen forces, which could help a human achieve amazing results provided one tapped into them through proper means. And there is only one key to treasure of spiritual powers — love!

That is why a Sadguru stresses on love and dedication rather than blind faith. As he leads a new aspirant into this supernatural world, he cautions the disciple not to jump to conclusions but to experiment and progress under his guid-ance to achieve all that is worth it in life Also a thought cortinuously urges enlightened Gurus and Yogis to formulate short yet efficacious rituals which would require the least effort on the part of a Sadhak yet produce the best results It is here that the Tantra form of Sadhanas comes into Way, for this explosive science offers rituals that act like lightning.

And when we talk of earning money or raking in huge sums uncertainty, risks, fear of loss and failure loom large, If there is anything which takes up most of our time it is earning enough and we are ever on a look-out for means which could get one rich real quick. This persistent need more often than not forces majority of individuals onto paths which the conscience would never approve of. Yet stifling its protests. reluctantly or greedily, one forges ahead only to find oneself in mire which pulls one deeper the more one struggles to fight free.

Yet if one had a guide, one would be left wonder struck by the sheer number of Sadhanas, small but powerful, which promise financial success in virtually no time. With such means at your disposal would you then stoop so low as to go for illegal or immoral means of making a'fortune? Never!

One such means is Dhanada Tantra — the Tantra form that bestows wealth.. It's a branch of Lakshmi Sadhana that has never disappointed a true, dedicated, pure seeker. And even Spiritual Greats like Vishwamitra, Gorakhnath and Shankaracharya vow by its efficacy. This system is so power-packed for the simple reason that it combines the divine en-ergy of two Goddesses — Lakshmi who promises wealth and Durga who destroys all impediments.

Dhanada Tantra can not just make one rich, it can banish poverty for generations to come. And poverty we know not just deprives one of material needs, it also stultifies a human spiritually, morally and mentally. It destroys peace at home and makes the future look like inky blackness stretching away into infinity. Whatever may be the cause of one's poor financial standing mistbrtune, bad Karmas, dishonest partner in business, failure in trade, lack of a steady job, extravagance or debts — Dhanada Tantra is a sure cure that can never fail provided one's efforts are sincere.

This Sadhana can be started from any **Wednesday.** After 10 pm have a bath and. get into red robes. On a wooden, seat covered with a red cloth sprinkle some flour. With forefinger draw a hexagon. In its centre inscribe **Dham (धं).** Sit facing South on a red mat. Light a ghee lamp. Offer a red flower and one **Soubhagya Phal** (सौभाग्य फल) in the centre of the hexagon. Next pick a Red **Coral rosary** (लाल मूंगा माला) and chant one round of the following Mantra.

Om Shreem Dhanadaayei Hreem Dhaneshwaryei Namah

।। ॐ श्रीं धनदायै ह्रीं धनेश्वर्यै नमः ।।

Repeat daily for 11 nights, each day using. fresh flour and a new Soubhagya Phal. Keep collecting the used flour in a. clean vessel. On the 12th day in the morning offer the flour and some money to a poor. Drop the Phals and rosary in a river/pond.

Sadhana Articles (11 Soubhagiya Phal, rosary) : 510/-

Yet another ritual

The above ritual is complete in itself. yet if followed by the following Sadhana the results get mag-nified still further. On a Friday morning have a bath and get into red robes. Take a rectangular piece of wood 20 x 15 cms from a woodapple (Bel/बेल) tree. On it write (ॐ महालक्ष्म्यै स्वाहा) with a mixture of sandalwood paste and vermilion. Place it before yourself on a piece of red cloth and then light a holy fire on its right side. Next take 108 Kamal Beej (कमल बीज). Offering a bead at a time into the fire each time chant.

Durge Smritaa Harasi
Bhcetimsheshjantoh Swastheih
Smritaa Matinueev Shubham Dadaasi
Daaridraya Dukh Bhay Harinni
Kaatvadanyaa Sarvopkaarkarannaay
Sadaardra Chittaa.

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः,
स्वस्थै स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्य दुःख भय हारिणी कात्वदन्या,
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्र चित्ता।।

With the final offering, offer the piece of wood too in the fire. Thereafter offer food and gifts to one or five girls under ten.

Sadhana Articles: 240/-

30 जनवरी 2022

महामृत्युंजय सदाशिव साधना शिविर

शिविर स्थल :

मिश्रा क्लासेज कैम्पस, **लाटघाट** (निकट यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया),

जिला - आजमगढ़ (उ.प्र.)

13 फरवरी 2022

माँ धूमावती सायुज्य माँ बगलामुखी साधना शिविर

शिविर स्थल :

वृन्दावन धाम, सीतासागर के सामने, गैस एजेन्सी के पास, **दतिया (म.प्र.)**

नोट : 12 फरवरी को पूज्य गुरुदेव के साथ हवन सम्पन्न होगा एवं 13 फरवरी को साधना शिविर।

मुख्य आयोजक मण्डल-इन्द्रजीत राय-8210257911, 9199409003, गिरीश विद्रोही-9755833301, रमाशंकर तिवारी-7974917887, शिवराम मीणा (महोवा) राजस्थान-7055064356, अनुराग द्विवेदी (बुढ़ार)-9826612023, राकेश श्रीवास्तव (कटनी)- 8839566954, जगदीश जी, मकवाना (धार)-9893868418, बागसिंह पवार (खलगाट)-9826860921, बासुदेव ठाकरे (नागपुर विदर्भ महाराष्ट्र), 9764662006, सत्यनारायण शर्मा (जयपुर)-9352010718, राजेन्द्र वैष्णव (चित्तौड़गढ़) राजस्थान - 9649350821, चैतन्य गुंजन योगी, (भुवनेश्वर) उड़ीसा, झांसी-विनोद रायक - 8004274246, प्रमिला शर्मा, राकेश तिवारी-मिसरी लाल मिश्रा, विनय कुमार श्रीवास्तव, राजीव पाठक, ग्वालियर-सुमित अहुजा, संजीव बुंदडेला, संतोष कुमार सिंह, गौरव चौधरी, विनोद कुमार गुप्ता, हरीशंकर तिवारी, टीकमगढ़-अजय केवट, रामलाल वारण, पन्नालाल रावत, शिवपुर- मरदान सिंह धाकर। भोपाल (नरसिंहगढ़) - मांगीलाल शर्मा, भोपाल - सूर्यदेव सोलंकार, अरूण कोरासिया, कृति सोनलकार, पीयुष सोलंकार, मीष्ठी सोनलकार, सृष्टि सोनलकार, कल्पना ठाकुर, इंदौर-रूपल चावड़ा, रूपेश लकशरी, चंचला शर्मा, संजय शर्मा, खलगाट-रवि सोलंकी, अंतिम शुक्ला, मुकेश खंडेलवाल, जितेन्द्र पटेल, धार-विजय जी दनगाया, नारायण जी चरण, जगदीश जी तवंर, शांति लाल जी पाटीदार, सीताराम जी पटेल, लालराम पाटीदार, निखिल कुमरावत, देवास-संतोष पठारे, उज्जैन-सुरेश खत्री, कटनी-अभिषेक तिवारी, बरही-सुभाष पटेल, मधुरानन्द, सतना-डी.के. पाण्डेय, ए.पी. मिश्रा, रीवा-अमित मिश्रा, डॉ. राजेश्वर वर्मा, संजय शर्मा, बैतुल-आकाश मुलीक, प्रयागराज-अजित श्रीवास्तव, सूर्यनारायण दुबे, वाराणसी-वेदप्रकाश जयसवाल, आजमगढ़-विंध्याचल पाण्डेय, लालघाट-दुर्गा प्र. मौर्या, विंध्यवासिनी राय, डॉ. सुमन चौरासिया, गोरखपुर-के.के. शुक्ला, मिर्जापुर-अनिल जयसवाल, कानपुर-महेन्द्र यादव, शैलेन्द्र सिंह, मथुरा - मदन मोहन जी, वृंदावन-रेवती रमन जी, उन्नाव - प्रभात जी, लखनऊ - अजय सिंह, सतीष टंडन, आ. सि. सा. परिवार आगरा के समस्त गुरु भाई एवं गुरु बहन। आगरा सिकरी-मुकेश जी, चित्रकुट, गायत्री तिवारी-सरोज सिंह, शिव बाबू सिंह, बबेरू-अरूणेश गुप्ता, रामचरण कुशवाहा, मऊरानीपुर-जगदीश अग्रवाल, ओरछा-जितेन्द्र सिंह, गुरसराय -उमाकांत गुप्ता, नरेन्द्र अग्रवाल, अंबिकापुर (छत्तीसगढ़)-राजकुमार यादव, विवेक श्रीवास्तव, कृष्णा गोस्वामी, देवदत्त साहु, सरजू राम, राजकुमार सत्यनारायण जयसवाल, कैलाश प्र. देंवागन, शक्ति (छत्तीसगढ़) -समेलाल चौहन, चांपा (छत्तीसगढ़)-अजय पटेल, महोवा (राजस्थान)-दिलीप कुमार सैनी-8058420359, जगमोहन मिश्रा, जयपुर-नीरज शर्मा, परम शिवम शर्मा, रघु शर्मा, डबोक उदयपुर (राजस्थान)-बंसीलाल मेनारिया, लीला पालीवाल, लोगर लाल मली, लक्ष्मण लाल मली, शंकर लाल रावत, नाना लाल जी मेघावल, रतन लाल जी सोनी, रमेश चन्द्र वैष्णव, श्रीमती सीमा वैष्णव, अजमेर-श्रीमती सुशीला बाथम, आसाम-पवन दत्ता, बैंगलोर-बाडु पदमगोड्डा, दीनदयाल जी।

27 फरवरी 2022

धूमावती सायुज्य माँ बगलामुखी साधना शिविर

शिविर स्थल :

गुजराती गार्डेन, महावीर नगर (मिलरोड़), भोलेनाथ मन्दिर के पास, **देवास (म.प्र.)**

आयोजक मण्डल देवास -संतोष पठारेजी-8319884804, प्रवीण सिंह जादौन-9926060642, धनंजय गायकवाड़-9425043332, गौरव कानुनगो, सुधीर यादव-8871141416, पंकज सिसोदिया- 82696 10232, चेतन राजभट्ट-9993118548, नीरज ठाकुर- 90095 71444, पंकज जैन-7999402935, दिनेश शर्मा-9993063967, दीपक शर्मा-9752266678, बंटी जाधव-8517874555, पियूष शर्मा, भगवान मालवीय, वैभव डाबी, मयंक पठारे, ब्रजेश शर्मा, कृष्णकांत शर्मा, वासुदेव लिखीवकर, रितेश पठारे, मनोज भिलाला जी, जितु जाधव, पूरणमल टेलर, सदानंद बारमासे, सुरेश चंद्र महाजन, अंतिम पूराणीक, दीपक वाकड़े, संजय शर्मा, मयूर निमोणकर, ओमप्रकाश परिहार, विमल चौधरी, प्रहलाद प्रजापत, जयदेव चौकटे, लखन विश्वकर्मा, ब्रजमोहन भाटीया, खातेगाँव-हरिओम मीणा, करनावद-आनंद शर्मा, विशाल पाटीदार, जयदीप शर्मा, इन्दौर-अमित हरियाणी, विनोद गोर, नितिन नंदवाल, दिलीप वैद्य, बरखेड़ा सोमा-गोविन्द पाटीदार (निखिल)-9977051225, देवकरण पाटीदार, लक्ष्मीनारायण गामी, संतोष गामी, हुकमचंद गामी, देवराज पाटीदार, जयंतीलाल पाटीदार, हेमराज गामी, शाजापुर-कमलसिंह सोनगरा, सोनकच्छ-नरेश चंद्र जोशी, लक्ष्मीनारायण जोशी, मनीष जोशी, सोनू सोलंकी, करनाबद-नन्दकिशोर जाधव, इन्दौर-प्रदीपजी पटोरीया, सोनकच्छ-जितेन्द्र नामदेव, सुरेशचंद्र सेठी, चन्द्रकांत जोशी।

01 मार्च 2022

महाशिवरात्रि महोत्सव साधना शिविर

शिविर स्थल :

परिणय वाटिका विवाह भवन, दर्शनिया मोड़ बी. देवघर, रांगा मोड़ के पास, रेल्वे पुल के नीचे कांवरिया रास्ते पर, **वैद्यनाथ धाम, देवघर (झारखण्ड)**

आयोजक मण्डल-इन्द्रजीत राय-8210257911, 9199409003, सौरभ दास गुप्ता (चितरंजन)-9932858697, कुन्तल मित्रा- 89722 49536, सुनील देवदर्सी (देवघर)-8825105774, विजय कुमार - (देवघर)-7979886176 अनुप चेल (बुण्डू) - 7535817357, भुनेश्वर प्रमाणिक (बुण्डू)- 97713 33701, आभा रानी एवं मुटाई कुदादा - (रांची), 8340 317589, सत्यप्रकाश सिंह, (रांची) - 8405800226, डॉ. आर.के. हाजरा (रांची)-6205169797, महेन्द्र बिरूउली-(चाईबासा)-77080 10608, अमरेन्द्र कुमार सिंह (रांची)-9162155183, अरूण कुमार मुण्डा (फुसरो)-8863866106, हरेन्द्र कुमार महतो (गोमिया)-98012 84131, प्रमोद कुमार साव (गोमिया)- 8210885811, दिनेश नायडु (फुसरो)-7992215965, सत्येन्द्र भारती (सिंजुआ)-98351 21114, शम्भु प्रसाद यादव (हटरगंज)-7488154775, राम मनोज ठाकुर-

9431357893, धनबाद- शिवानन्द झा (भागलपुर)- 9334738354, सुनील यादव (भागलपुर)-9934583245, शैलेस कुमार सिंह, (कठिहार)-9934635279, देवेन्द्र कुमार (बड़बिगहा)-7079858420, पंकज कुमार (मुज्जफरपुर)-9631099909, प्रेम लाल पासवान (पुसा)- 7294009781, निवास सिंह मुंगेर, चैतन गुंजन योगी जी (लखिसराय)- 8144904640, आ.सि.सा. परिवार चित्ररंजन, बंगाल के समस्त गुरू भाई एवं गुरू बहन, भागलपुर, राजकुमार जी, अनील यादव, जयराम सिंह, शैलेस सिंह, राजेश जी, कैलाश साव, अजय आमर, सरस्वती कुमारी, पंचदेव मण्डल, अरूण कुमार मण्डल, बिरेन्द्र तिवारी, गौतम कुमार, नरेश कुमार रजक, धनंजय जी, कहांलागांव- मोहन यादव, दुर्गादत्त तिवारी, देवघर-भोला खतरी, पुरुषोत्तम सिंह, कार्तिक जी, धनबाद-अरुण सिंह, यूपी सिंह, सुभाष भदानी, कृष्ण मुरारी पाण्डेय, अमलेश पाण्डेय, ममता देवी, बासता कोला धनबाद- गंगा वर्मा, वैजनाथ साव, बिरजू जी, मंजीत सोनी, सुरेश मण्डल, बलियापुर धनबाद- शांति लाल जी सुजन महतो, दुमका-नन्दकिशोर शाह नन्दु, काठीकुण्ड, दुमका - चुन्नू कैवट, कुमुद गुप्ता, सिजुआ-जानेश्वर प्रसाद अनुज सिन्हा, मधुबन- श्याम किशोर सिंह, गोमिया-किस्टो प्रसाद, फुसरो- मनोज सवांसी सोहराई लोहार, आ. सि.सा. परिवार फुसरो के समस्त गुरू भाई/बहन, बोकारो- मोहन सिंह लामा, आर.एन. प्रसाद, अरूण वर्मा, सुभाष कुमार पण्डित, विष्णुगढ-निर्मल विश्वकर्मा, झुमरा पहाड़ क्षेत्र-रामेश्वर महतो, धनेश्वर महतो, सुरेन्द्र महतो, टेकलाल महतो, देवनारायण महतो, हजारीबाग-बसुन्दर नाथ दुवेदी, हंटरगंज-सत्येन्द्र सिंह, कृष्णा सिन्हा, दिलीप कुमार, शम्भू सिन्हा, सचिदानन्द सिन्हा आ.सि.सा. परिवार, आयरूगेरूआ बलुरी डेभो के समस्त गुरू भाई एवं गुरू बहन, चतरा-अर्जुन रजक, गुमला-विरवल भगत, जनार्दन भगत, रामेश्वर बागेल, धनराज साई टैकरा, बन्धन महतो, अनील पाण्डेय बिनु महतो, राहुल राम, बिनोद मांझी, सुनील सिंह, संजय तिवारी, राँची- चन्द्रशेखर पाण्डेय, मनीश राज, मुनमुन सिंह, ध्रुव कुमार वर्मा एवं रांची के समस्त गुरूभाई एवं गुरू बहन आ.सि. सा. परिवार, बुण्डू के समस्त गुरू भाई एवं गुरू बहन, स्वप्न चेल, झंटु चेल, गोपीनाथ महतो, विष्णु सिन्हा, अशोक जी, तमाड़ - सुरेश चन्द्र महतो दिनेश प्रजापति-आ.सि.सा. परिवार, टाटा के समस्त गुरू भाई एवं गुरू बहन, नीरज कुमार श्रीवास्तव, मनोज कुमार, सरायकेला, श्याम सरण गोडसोरे, दीपक जी, चाईबासा, श्रीमति लक्ष्मी बिरूली, जोलेन ठोयसे, जुरिया कुदादा, पप्पू सिंह, डामु हेम्ब्रम, मोना चन्द स्वामी, बिहार- पटना- संजय सिंह, महेन्द्र शर्मा, टुनटुन यादव, मुन्ना सिंह, आ.सि.सा. परिवार बिदुपुर एवं हाजीपुर, समास्त गुरू भाई-बहन, मुज्जफरपुर, रजनी रंजन त्रिवेद्वी, रमन झा, रामानेक सिंह, प्रकाश कुमार, अजय कुमार पाण्डेय, राजीव कुमार, प्रवीण कुमार, रामानन्द झा, संजय कुमार श्रिवास्तव, सितामढ़ी- विकास मिश्रा, संजय राय, हत्था कनौजर समस्तीपुर, अरूण कुमार सिंह, राम श्रृंगार भण्डारी दिलीप कुमार, ताजपुर- प्रभु जी, दरभंगा, अमरिश कुमार अभय सिंह, लखिसराय -निकु कुमार, गुलशन कुमार, टोनी शर्मा, बेगुसराय- अनील कुमार (जनरेटर) गिरस जी- काटीहार, राजेश कुमार, पुर्णिया - दयानन्द शर्मा, मधेपुरा, आनन्द जी, बिरेन्द्र ठाकुर - आ.सि.सा. परिवार के मधेपुरा एवं मुरलीगंज के समास्त गुरू भाई गुरू बहन, शेखपुरा- प्रमानन्द पासवान, प्रवीन कुमार, बरबिगहा- डॉ. बीरमणी कुमार, सुभाष कुमार पण्डित, तरूण कुमार प्रभाकर, सुधीर पण्डित गया उमाशंकर यादव, सुरेश पण्डित, रामाधार चौधरी, धमेन्द्र कुमार, मिलेट्री मेन, रविन्द्र निखिल, सचिदानन्द जी, मदनपुर - देवनारायण प्रजापति, औरंगाबाद कामता प्रसाद सिंह, वृजकिशोर पाठक, धनंजय सिंह, कुदरा - शिवशंकर सिंह, आ.सि. सा. परिवार नरकटिया मोतिहारी के समास्त गुरू भाई -बहन। जमुई से अनील वर्मा, कुणैली सुपौल, उमेश्वर यादव, रामसेवक यादव, कमलपुर धातेन्द्र जी।

06 March 2022

Guru Shishya Milan Samaroh

Shri Yathiraja, Ramanuja Trust, No. 198, Sampige Road, Malleshwaram, Banglore

Contact No. : 8210257911, 9199409003, 9632172538, 8660106621, 8762684986, 8660271419, 8123466062, 9342659091, 8884611220

13 मार्च 2022

सर्व सौभाग्य प्रदायक विष्णु लक्ष्मी साधना शिविर

शिविर स्थल : डॉ. बी.आर. अम्बेडकर सर्व समाज मांगलिक भवन, नगर पालिका परिषद, तिल्दा-नेवरा, मिशन अस्पताल के पास सासाहोली, सिमगा रोड़, **तिल्दा** - जिला- रायपुर (छ0ग0)

आयोजक मण्डल-जी. आर घाटगे-9669901379, महेश देवांगन-9424128098, लकेश्वर चन्द्रा-98274 92838, सेबाराम बर्मा- 9977928379, हितेश ध्रुव-9826541021, संजय शर्मा-9111342100, रायपुर-दिनेश फुटान-8959140004, बृजमोहन साहू-7974012769, धमतरी-एन.के. कंवर-9644334011, बलौदा बाजार-लेखराम सेन-9826957608, जशपुर-प्रतापसिंह प्रधान-7566555111, बालोद-डॉ. महेश्वरनाथ योगी-99933116290, दुर्ग-जनक यादव- 7987086097, गरियाबंद-पिताम्बर ध्रुव-9993242093, कोरबा- सियारमा बरेठ-9755836240, राजनांदगांव-गनपत नेताम- 9406012157, ज्ञानेश तुमरेकी-9907102649, तेजेश्वर गौतम-98279 50765, बिलासपुर-अनिल यदु-9753191911, जांजगीर चाम्पा-संतोष साहू-9300768605, राधेश्याम साहू-9131863005, रायपुर - तिल्दा-नेवरा क्षेत्र-दिलीप देवांगन-7000354515, मुरली मनोहर बर्मा-99266 03007, संतोष राव लहने-9301211762, श्रीमती राधिका वर्मा-9302738864, जागेश्वर पटेल-9300507287, नीलकंठ निषाद-9981818042, सुरेश उच्चहरा-9754984685, गोवर्धन जांगड़े- 8435632511, शैलेन्द्र वर्मा-9754291554, गजांनद साहू- 89648 04988, चन्द्रशेखर वर्मा-9300256673, नवीन वर्मा-9826515409, टीकाराम वर्मा-9302554110, महेन्द्र वर्मा-9425201521, नारायण वर्मा-9300903462, मकरध्वज यादव, रामजी ध्रुव, उत्तरा चन्द्राकर, भोलाप्रसाद शर्मा, राकेश चुन्द्रवंशी, मुकेश साहू, योगेश साहू, रेखा धनकर, चितरेखा चन्द्राकर, वेदप्रकाश चन्द्राकर, दुलेश्वर साहू, रामचन्द्र, राकेश श्रीमाली, सुमित्रा निषाद, रामकुमार वर्मा, हरख राम सिरमौर, मनोज राव लाहने, शांति यादव, सेवकराम ठेठवार, चन्द्रकला देवांगन उड़िसा, दुखूराम निषाद, राजू वर्मा, बद्री प्रसाद कश्यप, छपोरा-शत्रुहन वर्मा, मालती वर्मा, श्यामलाल वर्मा,

डागेश्वर वर्मा, हुमन्त धीवर, तुकासराम साहू, खूबीराम वर्मा, परसराम वर्मा, हिनेश चौहान, रमेश चौहान, मोहगांव-रविकांत वर्मा, दीपक वर्मा, खरोरा-ईश्वरी प्रसाद देवांगन, सुनील नायक, वंदना शर्मा, हेमराय देवांगन, प्रहलाद यादव, सिलयारी-गज्जू वर्मा, सिमगा-हरिशरण सोनी, टीकाराम साहू-7697838246, हृदय साहू, हुलास साहू, प्रकाश कुंभकार, मढ़ी-गजानंद, धनाराम धीवर, विनोद साहू, रविन्द्रनाथ ठाकुर, हेमनाथ निषाद, त्रिपुरारी साहू, मोतीराम साहू, देवचरण ढीमर, वीरेन्द्र धीवर, खौना-गौकरण वर्मा, पवन देवांगन, केसरी पटेल, उड़सेना-पवन वर्मा, असौंदा-दुकलहा साहू, छबिराम वर्मा, खुडमुड़ी-राजेश साहू, संतराम साहू, भूपेन्द्र वर्मा, भिमौरी-नारायण वर्मा, छतौद-भागवत चौधरी, मेघनाथ यादव, केदार वर्मा, बल्ला वर्मा, सिलयारी (कुरुद)-ओमेन्द्र कश्यप, रामेश्वरी नायक, उत्तम साहू, सुरेश सिंघल, कोदवा-गजानंद वर्मा, बेमेतरा-हुलास साहू, राजेश साहू, गोपेश साहू, शत्रुहन साहू, प्रबीड़ सप्रे, संजय साहू, खिलोरा-बीरेन्द्र साहू, टीकाराम साहू, मोहित जायसवाल, केसली-चुड़ावन वर्मा, रामाधार मानिकपुरी, केसदा-बलदाउ सागरवंशी, टेकराम कश्यप, हथबंद-हरिराम निषाद, बिटकुली-बसंत वर्मा, हिरमी-बंशीलाल वर्मा, गंगेश्वर वर्मा, शेखर वर्मा, भाठापारा-विजय शंकर साहू, राजेन्द्र साहू, संजय मिश्रा, खेमदास वैष्णव, प्रकाश वैष्णव, गजेन्द्र साहू, राजकुमार साव, पुरुषोत्तम कर्ष, निर्मला कर्ष, विजय साव, सुरेश ध्रुव, जनक देवांगन, हेमसिंह चौहान, गुरुप्रसाद साहू, हुल्लास राम साहू, गेंदराम साहू, शत्रुहन देवांगन

16-17 मार्च 2022

होली महोत्सव साधना शिविर

गुरुधाम, जोधपुर

14 अप्रैल 2022

गुरु शिष्य मिलन समारोह

शिविर स्थल :

जानोलकर मंगल कार्यालय, केशव नगर, रिंग रोड, जिला : **अकोला** (महाराष्ट्र)

(निखिल स्तवन पाठ सुबह 9.00 बजे से 10 बजे तक)

आयोजक मण्डल : राजेश सोनोने-9823033719, रविंद्र अवचार- 99211 38349, 9423468059, भास्कर कापडे-9623454354, विष्णु जायले-9623454353, आनंद गुप्ता, विनायकराव देशमुख- 94229 37169, पुंजाजी गावंडे-9527570406, श्याम दायमा-8805710711, राजू चिंचोळकर -9850574122, श्रीनिवास पावसाळे-9767605061, शंकरराव अंभोरे-99601 52144, राजेश राऊत-9145860760, दिनेश कोरे-98225 60901, संतोष दांडगे-9822730441, संजय शेन्डे-96044 83029, दयाराम घोडे-7350655850, धीरज टापरे-9975054742, गुणवंत जानोरकर -9226070462, किशोर नरहर पाटिल-97667 75911, राजेश पाटिल-9028465950, सुनील खंडारे-9623744190, सुनील जामनारे-9850333769, शरद पवार-9696323452, शशिकांत लोंढे- 7798130130, मनीष येन्डे-9326917415, गणेश काळे-98506 63935, संदीप बढे-7387393556, प्रह्लाद भरसाळ्दे-9766333084, गजानन बलोदे-9822716368, मंगेश सोनोने-9623454352, धनराज माळी- 8007727479, प्रवीण सोनोने-9405674015, ज्ञानेश्वर लिखार- 9860972211, अरुण म्हैसने-99233 13939, नारायण इंगळे- 9922072683, अरुण रावरकर- 9822943520, प्रवीण वाघमारे- 7249390312, पांडुरंग मास्कर-9860279267, सौ. ममता घाटोळ-9552658461, अरुण पवार-9822808593, मुरलीधर शेटे-9850251078, दिलीप कुमरे-8975255794, कृष्णा रावणकार -9011883645, विजय भगत- 9075072619, शकील सर्जेकर- 78419 69809, पुरुषोत्तम निंबाळकर- 9011929278, अवधूत सिरसाट-9766451677, किशोर चव्हाण- 9975957702, रामकृष्ण नवघरे-9850159069, प्रमोद सोनोने-9370549394, हरीभाऊ उकर्डे-9325811463, दीपक मालोकार-9921964053, सुधाकर पुंडकर-9637384570, विजय लोहकरे-81494 83987, राजेश सरोदे- 9623408967, अंकुश मिसाळ-9860674496, निलेश चव्हाण- 9579034331, महेंद्र पवार-8788364330, मनीष कनोजिया- 94229 88945, अशोक चव्हाण- 9226893205, चंद्रपुर-वतन कोकास- 9422114621, बालाघाट-नरेन्द्र बोम्प्रे- 9406751186, गडचिरोली- दुल्लुराज वुइक-9422615423, यवतमाळ- श्रीकांत चौधरी-9822728916, अमरावती-रोहित काळे-8551975547, वर्धा- चंद्रकांत दौड-8379080867, नागपुर-वासुदेव ठाकरे -9764662006, किशोर वैद्य, सारंग चौधरी- 9921672114, भण्डारा -देवेन्द्र काटखाये- 7020221640, नरेन्द्र काटेखाये-9403419979, गोंदिया -डी.के. सिंह-9226270872

16 अप्रैल 2022

निखिल सायुज्य राजराजेश्वरी ललिताम्बा साधना शिविर

शिविर स्थल :

जोरावर स्टेट पार्टी प्लाट, वाघोडिया क्रॉसिंग एवं डभोई क्रॉसिंग के बीच, नेशनल हाईवे नं. 8 बाईपास, नियर ईस्टर्न आर्केड, जिला : **बड़ौदरा** (गुजरात)

(निखिल स्तवन पाठ सुबह 9.00 बजे से 10 बजे तक)

आयोजक मण्डल : सिद्धाश्रम साधक परिवार बड़ौदा, गुजरात- पी.के. शुक्ला-9426583664, चिराग महेश्वरी-9725323930, कनु भाई सोनी-9737836800, सुनील सोनी-9925555035, विरल सोनी -9925234536, महेन्द्र सिंह राणा-9825026711, हितेश शुक्ला 8141376295, विजय भाई दर्जी, हितेश बिरला, अपूर्व वोरा, कान्ति भाई परमार, रमाकान्त सोनी, ज्योति पाटिल, प्रकाश पटेल, अल्पेश राठवा, अजय अग्रवाल, विरेन्द्र शर्मा, मनोज महेश्वरी, राजेश भटट, रोहित मोरे , कमलेश शर्मा, यतिन पंडया, रेवजी पटेल, मुकेश पढियार, अशोक परमार, भावेश पटेल, ललित प्रसाद, भुपेन्द्र भाई सुथार , क्रुणाल उपाध्याय

17 अप्रैल 2022

गुरु-शिष्य मिलन समारोह शिविर

शिविर स्थल : शिक्षण संगीत आश्रम, स्वामी श्रीवल्लभ दास मार्ग, निअर गुरुकृपा हॉटल, प्लॉट नं. 6, सायन (पूर्व), **मुम्बई**

(सायन स्टेशन से 5 मिनट की दूरी पर)

आयोजक मण्डल - तुलसी महतो-9967163865, डॉ. संतलाल पाल-97680 76888, यशवंत देसाई-9869802170, नागसेन पवार -9867621153, अजय मांचरेकर, मानव, पीयूष, सुनील साल्वी, श्रीनिवास, गुरु, रोहित शेट्ठी, मनोज झा, राकेश तिवारी, हमप्रसाद पाण्डे, बुद्धिराम पाण्डे, गंगा, जिया, सीता, सोनू, दिलीप झा, उपाधे, पूर्णिमा (नेपाल), प्रकाश सिंह, संजय गायकवाड़, गोरखनाथ, बसन्ती, पीताम्बर (नेपाल), रामेश्वर, अनयसिंह, जी.डी. पाटिल, रवि पाटिल, मोहनी सैनी, हरिभाई विश्वकर्मा, सुहासिनी दयालकर, गायत्री दयालकर, अजय कुमार सिंह, प्रवीण राय, वीरेन्द्र, श्यामसुन्दर, भावप्रसाद पाण्डे, रवि साहू, राकेश तिवारी, भाव प्रकाश, निर्मल कुमार, राघवेन्द्र प्रताप, प्रवीण भारद्वाज, प्रीतम भारद्वाज, संतोष अम्बेडकर, राजकुमार मिश्रा, अनीता हंसराज भारद्वाज, अरविन्द अरोड़ा, राहुल पाण्ड्या, विवेक पवार, गीता, ममता, राजेश उपाध्याय

उपहारस्वरुप प्राप्त करें

शक्तिपातयुक्त दीक्षा

हमारे ऋषि मुनियों ने लक्ष्मी को प्राप्त करने और अपने घर में चिर स्थायित्व देने के लिए कई साधनाएं स्पष्ट की एवं सभी प्रकार से श्री यंत्र को श्रेष्ठ माना।

उन्होंने कहा कि तीनों लोकों में लक्ष्मी को पूर्ण रूप से स्थायित्व देने के लिए श्री यंत्र के समान यंत्र नहीं है। यह ईश्वर का साकार रूप है। और श्री विद्या दीक्षा का अर्थ है कि साधक के शरीर को ही श्री यंत्र बना दिया जाए यही है श्री विद्या दीक्षा का सार।

'श्री' का अर्थ है - जीवन की पूर्णता, यश, वैभव, प्रतिष्ठा, ऐश्वर्य

और यही सब हमारे जीवन की अनिवार्य आवश्यकता है।
दरिद्रता युक्त जीवन को 'श्री' नहीं कहते। वह जीवन जिसकी गतिविधियों के संचालक हम स्वयं हो, हमारा नियंत्रण हो सके वह है श्री युक्त जीवन और यह प्राप्त हो सकता है जब साधक अपने गुरु से श्री विद्या दीक्षा प्राप्त करे।

योजना केवल 10, 11 एवं 14 फरवरी इन दिनों के लिए है

किन्हीं पांच व्यक्तियों को पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क 2250/- **'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'**, जोधपुर के बैंक के खाते में जमा करवा कर आप यह दीक्षा उपहार स्वरूप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं। दीक्षा के लिए फोटो आप हमें संस्था के वाट्स अप नम्बर 8890543002 पर भेज दें। इसी वाट्स अप नम्बर पर पांचों सदस्यों के नाम एवं पते भी भेज दे।

दिल्ली कार्यालय - सिद्धाश्रम 8, सन्देश विहार, एम.एम. पब्लिक स्कूल के पास, पीतमपुरा, नई दिल्ली-110034
फोन नं. : 011-79675768, 011-79675769, 011-27354368

Printing Date : 15-16 January, 2022
Posting Date : 21-22 January, 2022
Posting office At Jodhpur RMS

RNI No. **RAJ/BIL/2010/34546**
Postal Regd. No. Jodhpur/327/2022-2024
Licensed to post without prepayment
Licensed No. RJ/WR/WPP/14/2022
Valid up to 31.12.2024

माह : फरवरी एवं मार्च में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

पूज्य गुरुदेव श्री अरविन्द श्रीमाली जी निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगे व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

स्थान गुरुधाम (जोधपुर)	स्थान सिद्धाश्रम (दिल्ली)
10 फरवरी	11 व 14 फरवरी
16, 17 मार्च	19-20 मार्च

प्रेषक –
नारायण-मंत्र-साधना विज्ञान
गुरुधाम
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)
पोस्ट बॉक्स नं. : 69
फोन नं. : 0291-2432209, 7960039,
0291-2432010, 2433623
वाट्सअप नम्बर : 8890543002